सपनों के ताजमहल

हरि मेहता

विद्या जी

माँ के नाम…जो थी…जो समझती थी

आप से

बरसों बीत गये सपने देखते-देखते। सच्चाई और सुन्दरता, रोशनी और रस, साज और संगीत सहारे थे, जिनके आसरे ज्ञान और विज्ञान के अपार संसार मे, देश मे, विदेश मे मैंने इंसानी और रूहानी खुशी की तलाश की। नित नई राहे, नित नये अनुभव। एक-एक करके जिन्दगी के साल बनते चले गए। जहाँ फूल चुने वहाँ काँटे भी, जहाँ सत्य देखा वहाँ असत्य भी। बहुत रोया, हँसा भी। बहुत कुछ खोया, कुछ पाया भी। जो कहना था, कहा—कविताओं मे, लेखों मे, आलेखों में, वाद और विवाद मे। जो खेलना था, खेला—पहले जिन्दगी मे और बाद मे नाटकों में। जो देखा, जो महसूस किया, जो समझा, जो जाना—वह एक खुली किताब के पन्नो की भाँति बँधता चला गया। कई-एक आकर्षक ताने-बाने बुने, उधेड़े, फिर बुने। बहुत दिनो तक उनको जानने-पहचानने वाला नही मिला। फिर जब यहाँ-वहाँ किसी ने गौर से देखा, हमदर्दी से समझा तो आकाशवाणी, दूरदर्शन, रंगमंच और फिल्मों के परदे यूँ उठे जैसे कभी गिरे न थे। और मैं लिखता चला गया। उन्ही रचनाओं में से छ: नाटक आज इस पुस्तक के रूप मे आपके हाथों मे है।

बचपन से खेल-तमाशों को मैंने मनोरंजन से अधिक शिक्षा के दृष्टि-कोण मे देखा। बहुत-से किस्से-कहानियाँ, मुहावरे और मजाक माँ-बाप से सुने। किताबों में पढ़े और अपनी आँखों के सामने बनते हुए देखे। एक अकेली राह अपनाई। सही समझिए या गलत, हठधर्मी से या जनून मे उसी पर चला जा रहा हूँ। फिर हालात ने मेरे साथ एक दिलचस्प मजाक किया। नौकरी मिली जो जिन्दगी से बहुत दूर थी। उस पर भी अकेली राहों की तनहाई तलखी बनी जब अचानक माँ चली गई।

जिन्दगी से जो कुछ लिया है, लौटा रहा हूँ। कहानी, फिलासफी, बातचीत और पैगाम का यह संगम जिन्दगी की क़द्रों को उभारने का मेरा एक तुच्छ-सा प्रयास है। इनमें बसे हुए लोग आपको अक्सर अपने

आसपास की दुनिया में दिखाई देंगे—यद्यपि ऐसा ताल-मेल महज इत्तफाकिया होगा। इनमें से कई-एक पात्र, कई-एक मुहावरे, कई-एक परिस्थितियाँ अपने-आपको दुहराती हुई भी दिखायी देंगी, वह इसलिए कि जो अच्छा लगा उसको मंच की परंपरा के अनुसार दोबारा दिखाया है। इसकी ज़बान में कई एक रंग उर्दू और अंग्रेज़ी के, फारसी और फ्रेंच के आपको लहरों की तरह उभरते हुए दिखाई देंगे।

अनगिनत लोगों ने मेरा साथ देकर इन पात्रों, इन परिस्थितियों, इन सपनों को साकार किया है। एक ज़माने से लाहौर के गवर्नमेंट कॉलेज में, शिमला के गेटी थिएटर में, पूना, लखनऊ और दिल्ली के मंच पर और अन्य माध्यमों पर मैंने जिनके कदमों पर बैठकर बचपन से लेकर आज तक बहुत-कुछ सीखा उनमें इम्तियाज़ अली ताज, ईश्वरचन्दर नन्दा, पृथ्वीराज कपूर, मोहन राकेश, बलवन्त गार्गी, डॉ० बच्चन—कुछ सितारे हैं जो मेरे ज़हन में उभरते हैं। घर में पापा के अलावा एक माया नाज़ अदब-नवाज़ और थे श्री ब्रह्मदत्त क़ासर, जिन्होंने चूम-चूमकर मेरी अदबी ज़मीन को आसमान बना दिया।

जब रेडियो और टेलीविज़न में कोई नहीं पूछता था तो जिन सज्जनों ने मेरा हाथ थामा उनमें पद्मश्री चिरंजीत, प्रशान्त पांडे, एन० आर० टण्डन और असवर खान—बहुत-से नामों में से कुछेक मेरी आँखों में चमककर आते हैं। वे नाम, वे लोग जिन्होंने मुझे बारम्बर प्रेरित किया। और जी हाँ, एक व्यक्ति और हैं सत्येन्द्र शरत्, जिनकी सहायता, सहानुभूति और सहयोग के बिना सपनों के ये ताजमहल कभी सच्चे न होते। अच्छा !

२०१, चाणक्यपुरी, नई दिल्ली
मार्च, १९७७

—हरि मेहता

एक अद्भुत नाट्य-प्रतिभा[1]

इन नाटकों के लेखक हरि मेहता भारत सरकार के उच्च शिक्षा-प्राप्त एक उच्च प्रशासन-अधिकारी है। प्रायः माना जाता है कि जब कोई साहित्यकार प्रशासनिक जिम्मेदारियों मे फँस जाता है, तो उसकी साहित्यिक प्रतिभा रेगिस्तान की नदी की तरह सूख जाती है। यह बात हरि मेहता के मामले मे गलत साबित हुई है। इसीलिए मैं इनकी प्रतिभा को अद्भुत और इनके साहित्यिक कृतित्व को प्रशंसनीय मानता हूँ।

एक साहित्यकार के नाते हरि मेहता का व्यक्तित्व सचमुच विलक्षण है। वे एक साथ बहुपठित एवं बहुविज्ञ विद्वान हैं, देश-विदेश के साहित्य-मर्मज्ञ हैं, सवेदनशील स्रष्टा है, और है अत्यन्त सरल एवं स्नेहशील प्राणी। उर्दू और अंग्रेज़ी काव्य का इन्हें इतना ज्ञान है, दोनो में इतनी गति है कि इनकी सामान्य बातचीत भी शेरो-शायरी और वाणी-विलास का मज़ा देती है। इनकी प्रतिभा के इस सहज-स्वाभाविक रूप की जानकारी देना इसलिए आवश्यक है कि इसके बिना इनकी नाट्य-प्रतिभा का सही मूल्यांकन नही हो सकता।

आज से कोई बीस वर्ष पहले मुझे हरि मेहता का परिचय एक अभिनेता के रूप मे मिला था। ये तब भी एक प्रशासन-अधिकारी थे, परन्तु इनके भीतर का जन्मजात साहित्यकार-कलाकार आत्माभिव्यक्ति के लिए उपयुक्त मार्ग की तलाश मे था। दफ़्तर के बाद ये अपने सरकारी रुतबे का दम्भ त्यागकर मुशायरों मे गज़लें पढ़ते थे और रंगमंच एवं रेडियो के नाटकों में अभिनय करते थे। यह सर्वमान्य है कि एक सृजनशील साहित्यकार को मात्र अभिनेता बनकर तृप्ति एवं आत्मतुष्टि नहीं मिल सकती। अभिनेता को दूसरों के रचे चरित्र चित्रित करने पड़ते हैं। कदाचित् यही कारण है कि इन्होंने स्वयं नाटक लिखने शुरू किए। प्रस्तुत संग्रह नाट्य-लेखन के क्षेत्र में सफलता का प्रमाण है। हरि मेहता रंगमच, रेडियो और टेलीविजन के लिए अनेक नाटको की रचना कर चुके हैं, नाटक के क्षेत्र मे

इनके कृतित्व की यह एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है।

हरि मेहता हिन्दी और उर्दू के उन सफल नाटककारों में से हैं, जिन्होने रेडियो-नाटक के शिल्प और ध्वनि-तन्त्र को आत्मसात करके इसे अपनी प्रतिभा के जादू से सँवारा-सजाया है। इनके रेडियो-नाटक भी रंग-मंचीय एकाकी एवं लघु नाटकों के रूप में प्रकाशित हुए है। इसमें कोई हर्ज नही, क्योकि इधर रगमंचीय नाटको के शिल्प और तन्त्र मे भी रेडियो-नाटक की दृश्य-बन्ध विहीनता और फ्लैशबैक-शैली का समावेश होने लगा है। इस दृष्टि से प्रस्तुत संग्रह के तमाम नाटकों की उपादेयता असंदिग्ध है।

हरि मेहता के नाटकों की वास्तविक शक्ति और विशिष्टता इनके कथ्य मे है। नाटको के कथानक कुछ सामाजिक हैं, कुछ मनोवैज्ञानिक है, कुछ स्त्री-पुरुष के सम्बन्धो पर आधारित हैं और कुछ मात्र हास्यजनक। इन सब पर एक ऐसी रूमानियत, एक ऐसी काव्यात्मकता छाई हुई है जिससे ये 'सामान्य' की कोटि से उठकर 'विशिष्ट' की कोटि मे आ गये हैं। लेखक ने जिस नाटक के संवादों मे उर्दू और अंग्रेजी काव्य के मोती सहज कलात्मकता से जड दिये है, वह नाटक विद्वानो को रुचने वाले श्रेष्ठ साहित्य की कोटि मे आ गया है। अपने इन्ही गुणों के कारण ये नाटक नाट्यकला के मर्मज्ञों और नाटक-प्रेमियों को समान रूप से रुचिकर होंगे, ऐसा मेरा विश्वास है।

यह हर्ष का विषय है कि अपने पहले संग्रह से ही हरि मेहता हिन्दी के सफल नाटककारों की श्रेणी मे आ गये है। इनकी कला मे एक ऐसी मौलिक नवीनता और ताजगी है कि इन्हे एक तरह से अद्वितीय भी कहा जा सकता है। मैं आशा करता हूँ कि ये हिन्दी नाट्य-साहित्य की श्रीवृद्धि मे सतत प्रयत्नशील रहेंगे। यह संग्रह तो इनकी अद्भुत नाट्य-प्रतिभा की केवल बानगी ही है।

अप्रैल, १९७७

—चिरंजीत
चीफ ड्रामा प्रोड्यूसर
आकाशवाणी महानिदेशालय

एक ताज़गी, एक ब्रिलियेंस

'सपनों के ताजमहल' रेडियो, मंच और टेलीविज़न के जाने-माने नाटककार हरि मेहता के छः नाटकों का संकलन है और इस संकलन के साथ ही वे पुस्तक-जगत मे प्रवेश कर रहे हैं। मैं उनका स्वागत करता हूँ।

हरि मेहता का स्वागत इसलिए भी है कि वह हिन्दी-नाटकों मे एक ताजगी, एक ब्रिलियेंस, अपने ढंग का अनूठा हास्य और व्यंग्य, गहरे और विशद अध्ययन की छाप तथा संवादों की ऐसी चुस्ती लाये है, जिसका अभाव हिन्दी नाटको मे बहुत खटकता है। हरि मेहता के नाटक पढ़कर यही अनुभूति होती है कि आप किसी ऐसे खुशगवार सज्जन से बातें कर रहे हैं जो शेरो-शायरी, कला, पेंटिंग्ज़, गीत-संगीत और देशी-विदेशी साहित्य के सौन्दर्य से स्वयं ही अभिभूत नही है, बल्कि आपको भी उस रस-सागर मे डुबाने और उस सौन्दर्य-जाल मे विमुग्ध करने की क्षमता रखता है। पुस्तक समाप्त कर नीचे रखने पर यही अनुभूति होती है कि लेखक ने अपनी लेखनी द्वारा जैसे इतनी देर सम्मोहित कर रखा था, और जैसा सम्मोहन समाप्त करने के बाद हमेशा होता है—आप देर तक उस प्रभाव से मुक्त नही हो पाते। देर तक उसी प्रभाव मे खोये रहते है। और ये नाटककार हरि मेहता की बहुत बड़ी सफलता है।

हरि मेहता ने अपने इस सकलन मे हास्य-नाटको ('कद्रो के कातिल', 'चस्का चोरी का') के साथ-साथ गम्भीर और समस्यामूलक उद्देश्यपूर्ण नाटक ('सपनो के ताजमहल', 'रिश्ते रोशनी के', 'हादसा' और 'इकलौता बेटा') को भी स्थान देकर सिद्ध कर दिया है कि वे दोनों प्रकार के नाटक लिखने में सिद्धहस्त हैं; और जीवन की केवल हास्यपूर्ण स्थितियों को ही रोचक ढंग से उजागर नही करते, बल्कि जीवन की गम्भीरतम और विषम परिस्थितियों को भी पूरी संजीदगी और जिम्मेदारी के साथ चित्रित करने मे समर्थ हैं। उदाहरण के लिए मैं उनके नाटक 'हादसा' का नाम लेना चाहूँगा। इस नाटक की विषय-वस्तु हिन्दी के लिए बिलकुल नई है। इतने

यथार्थपरक किन्तु विस्फोटक विषय पर इतने संयम और अधिकार के साथ भाव-प्रवण तथा रचनात्मक नाटक लिखकर हरि मेहता ने प्रमाणित कर दिया है कि वे लेखक के समाज के प्रति दायित्व से भलीभाँति परिचित हैं। हरि मेहता की कला प्राणवान, रागात्मक, गतिवान और रूमानी होने के साथ चौंकाने और चोट करने की शक्ति भी रखती है। और यह बहुत शुभ लक्षण है। कहीं आर्थर कोएस्लर ने कहा है—When art ceases to scandalise; it becomes suspect of having lost its daring. 'कला जब आपको चौंकाना छोड़ देती है तो सन्देह होने लगता है कि वह अपनी शक्ति खो बैठी है।' इस कसौटी पर परखने से विदित हो जाता है कि हरि मेहता की कला बहुत सशक्त है। मुझे पूरा विश्वास है कि उनकी कला निखरती और दिन-प्रतिदिन विकसित होती जायेगी। उनका अभिनन्दन करते हुए मैं यह स्वीकार करना चाहूँगा कि मैं बहुत आतुरता के साथ उनके नए नाटकों की प्रतीक्षा कर रहा हूँ।

नई दिल्ली, २४ दिसम्बर, १९७७ —सत्येन्द्र शरत्

क्रम

•

सपनों के ताजमहल

बना लिये हैं सभी जिन्दगी के ताजमहल।
ख़ुशी नहीं थी मुक़द्दर में, कैसे मिल जाती ?

पात्र

•

रानी

भाभी

चेयरमैन

लेडी प्रिंसिपल

प्रोफेसर

श्रीवास्तव

पहला सीन

[निम्न वर्ग के एक साधारण-से मकान का मामूली तौर से सजा हुआ एक कमरा। सुबह का समय है। रानी बिस्तर पर अधलेटी है।]

रानी : (उठते हुए) चाची चाय।

चाची : *ला रही हूँ रानी। ला रही हूँ। तू बैठी रहियो बिस्तरे में,* महारानी बनके। दिन तो देख, कितना चढ़ गया।

रानी : क्या चाची, यही तो एक ऐश ले-दे के रह गई है करने को। उठते ही गरम-गरम घूंट चाय का भरो। आँखें खोलो, अख़बार उठाओ। सुर्खियाँ देखो। चाय की चुस्की भरो। सफा पलटो। मेट्रिमोनियल कॉलम देखो। फिर आँखें मूंद के एक-आध सपना लो। फिर चाय की चुस्की भरो। फिर पन्ना पलटो। एम्पलॉयमेंट कॉलम देखो। फिर एक-आध सपना देखो। फिर एक-आध घूंट भरो। फिर एक-आध सपना…!

चाची : सपने देखती रहियो और घूंट भरती रहियो। पढ़-पढ़ के दिमाग खराब कर लिया उलटे। यह ले चाय और यह ले पेपर। जाने कब समझ आयेगी इस लडकी को। भरी जवानी घर बैठे-बैठे बरबाद कर ली। कोई लडका इसके नाक तले बैठता ही नहीं। मैं पूछती हूँ नौकरी करना शोभा देता है क्या अच्छे घर की लडकियों को? अच्छे समय थे। इधर आठ नहीं तो दस पास हुई उधर उसके हाथ पीले किये। *अब यह हाल है कि कब की एम० ए० पास करके* बैठी है घर मे। टके-टके की नौकरी के लिए भटक रही है!

रानी : चाची!

चाची : सच्ची बात बुरी लगती है बेटा, जानती हूँ। पर तू ही सोच, जवान-जहान बेटी कब तक घर मे बैठी हुई अच्छी लगती है ?

रानी : चाची प्लीज़। सुबह-सुबह मेरा मूड मत बिगाड। आज मुझे इन्टरव्यू मे जाना है। सच्ची ! ऐसा भी क्या है चाची। आये दिन की दुविधा ! नित नये कलह-कलेश ! मेरे बस की बात है क्या कि ऐसे घर में बैठी हुई हूँ। माँ नही रही। बापू नही रहे। पर खानदान है, तालीम है। कुछ करने की आरजू है। नही मिलती नौकरी, नहीं मिलता वर जैसा कि मिलना चाहिए। अब तुम लोग कहो कि आँखें मूंद के किसी लँगड़े-लूले के पल्ले बँध जाऊँ तो यह मुझसे नही होगा।

चाची : अब राजे-महाराजे तो मिलने से रहे। उम्र भी तो हो गई तेरी बेटा।

रानी : कभी कोई बाबू दिखा देते है, कभी कोई दुकानदार। कभी कोई बेकार। मैं कैसे समझाऊँ चाची कि ऐसे किसी आदमी से मेरा गुजारा नही होगा। तू परेशान न हो, चाची। मैंने कई जगह कह रखा है। अर्जियाँ दी है। कही भी किसी होस्टल में, किसी आश्रम में, किसी केन्द्र में, कही भी कोई भी जगह मुझे मिल गई तो चुपचाप चली जाऊँगी चाची, और कभी भी किसी पर बोझ बनके नही रहूँगी।

चाची : छोटी-मोटी नौकरी कर सकती हो तो किसी छोटे-मोटे घर की शोभा बनना क्या बुरा है रानी। जरा सोचने की बात है। जिसमें तेरी भलाई हो वही कर। देख बेटा, भाग्य की बात है कि सब-कुछ होते हुए भी अभी तक तेरे नसीब खुले नही।

रानी : *नसीब, नसीब, नसीब ! नसीब नाम की कोई चीज है तो* तू ही बता, चाची। नसीबो जले कहाँ चले जायें। कौन से

कुएँ में डूब मरें ! क्यों नही फट जाती यह धरती ! अभी इसी वक्त क्यों नहीं समेट लेती मुझ अभागिन को ! माँ, धरती माँ ! क्यों नही आते जलजले, तूफान ! नहीं चाहिए मुझे घर-बार। खाना-पीना, रोज-रोज का मरना-जीना। (गुस्से मे अखबार फाड़ने लगती है।)

चाची : हाय-हाय, पेपर क्यों फाड़ रही हो ?

रानी : आग लगा दूँगी। सारी-की-सारी किताबों को आग लगा दूँगी और उसी आग में अपने-आपको भी जला दूँगी। राख कर दूँगी।

चाची : रानी, क्या हो गया तुझे। अभी प्याली टूट जाती तो ?

रानी : टूटने दो। सब-कुछ टूटने दो। दिल का आइना टूट गया। सपनों का ताजमहल टूट गया। सब-कुछ, जो कभी नही टूट सकता था वह भी टूट गया।

चाची : (पानी लाकर) ले, पानी पी ले। यह हर वक्त का हिस्टीरिया अच्छा नही रानी। चल, मैं तुम्हें वैद्यजी के यहाँ ले चलूँ। बहुत अच्छा इलाज है उनके पास।

रानी : मुझे कुछ नहीं है, चाची माँ ! ऐसे ही मुझे परेशान करती हो। कितनी बुरी हूँ न मैं ! (सिसकती है।)

चाची : फिर वही बात। अरे, बुरे हों तेरे दुश्मन। मैं नही चाहती क्या कि अपनी रानी बिटिया के लिए कोई राजा बेटा आये। पर कहीं कोई राजकुमार ही दिखाई नही देता।

रानी : राजकुमारों का जमाना कब का चला गया। (हल्की हँसी)

चाची : खुश रहा कर, बेटी ! ला, मैं तेरे लिए एक और गरम-गरम चाय की प्याली लाती हूँ, और यह समेट पेपर के रहे-सहे पन्ने।

रानी : गिलास मे लाना ! गरम-गरम ! पर गिलास दो लाना।

चाची : दूसरा ?

रानी : तुम्हारे लिए।

चाची : न बाबा, न। मैं नही पीती इतनी चाय। रंग काला हो

कुएँ में डूब मरें ! क्यों नहीं फट जाती यह धरती ! अभी इसी वक्त क्यों नहीं समेट लेती मुझ अभागिन को ! माँ, धरती माँ ! क्यों नहीं आते जलजले, तूफान ! नहीं चाहिए मुझे घर-बार। खाना-पीना, रोज-रोज का मरना-जीना। (गुस्से में अख़बार फाड़ने लगती है।)

चाची : हाय-हाय, पेपर क्यों फाड़ रही हो ?

रानी : आग लगा दूंगी। सारी-की-सारी किताबों को आग लगा दूंगी और उसी आग में अपने-आपको भी जला दूंगी। राख कर दूंगी।

चाची : रानी, क्या हो गया तुझे। अभी प्याली टूट जाती तो ?

रानी : टूटने दो। सब-कुछ टूटने दो। दिल का आइना टूट गया। सपनों का ताजमहल टूट गया। सब-कुछ, जो कभी नहीं टूट सकता था वह भी टूट गया।

चाची : (पानी लाकर) ले, पानी पी ले। यह हर वक्त का हिस्टीरिया अच्छा नहीं रानी। चल, मैं तुम्हे वैद्यजी के यहाँ ले चलूं। बहुत अच्छा इलाज है उनके पास।

रानी : मुझे कुछ नहीं है, चाची माँ ! ऐसे ही मुझे परेशान करती हो। कितनी बुरी हूँ न मैं ! (सिसकती है।)

चाची : फिर वही बात। अरे, बुरे हों तेरे दुश्मन। मैं नहीं चाहती क्या कि अपनी रानी बिटिया के लिए कोई राजा बेटा आये। पर कहीं कोई राजकुमार ही दिखाई नहीं देता।

रानी : राजकुमारों का जमाना कब का चला गया। (हल्की हँसी)

चाची : खुश रहा कर, बेटी ! ला, मैं तेरे लिए एक और गरम-गरम चाय की प्याली लाती हूँ, और यह समेट पेपर के रहे-सहे पन्ने।

रानी : गिलास मे लाना ! गरम-गरम ! पर गिलास दो लाना।

चाची : दूसरा ?

रानी : तुम्हारे लिए।

चाची : न बाबा, न। मैं नहीं पीती इतनी चाय। रंग काला हो

जाता है।

रानी : अब तुझे कौन देखने आयेगा, चाची ?

चाची : बेशर्म ! जुलाहों की तरह माँ से मसखरी करती है ? हँसती-खेलती रहा कर, बेटा।

रानी : पर मैं जो इतनी चाय पीती हूँ इस हिसाब से तो एक दिन बिलकुल काली-कलूटी हो जाऊँगी। नहीं ?

चाची : काले कर्मों वाले होते हैं। जब झट तेरी नौकरी लग जायेगी और पट ब्याह हो जाएगा···।

रानी : ब्याह को छोड़ो। वैसे देखा जाये तो काले रंग की अपनी सुन्दरता होती है। कहते हैं लैला काली थी।

चाची : कृष्ण कन्हैया भी तो काले थे।

रानी : अच्छा तो जल्दी से तैयार हो जाऊँ। चल, चाय रहने दे अब। (उठती है।)

चाची : इत्ती बड़ी तो किताब लिए जा रही हो बाथरूम में। जल्दी तो क्या करोगी।

रानी : नहीं जानती हो। यह तो बड़े-बड़े आदमियों का शौक है, चाची। और फिर सचमुच देखा जाये तो ऐसी जल्दी भी क्या है ज़िन्दगी में।

चाची : आप ही तो कह रही हो। तुम्हारा भी पता नहीं चलता। जा बाबा, जा। मैं तेरे लिए आलू के परांठे बना रही हूँ, हाँ ! आधार रहेगा सारा दिन।

रानी : इन्टरव्यू होगा तो दोपहर बाद ही मैं समझती हूँ, पर दिन तो बरबाद हो ही जाएगा।

चाची : कोई अच्छी नौकरी हो तो हाँ करना।

रानी : *हाँ-ना वहाँ अपने अख्तियार में थोड़े ही है, चाची माँ। भिखारी जो चाहें, वे कहाँ चुन पाते हैं।*

चाची : अच्छा, भगवान जो करेगा भली करेगा।

रानी : *चढ़ जा बच्चा सूली पर। (हल्की हँसी।)*

चाची : अजीब लड़की है ! न ऐसे जीने देती है, न वैसे। (कोई

बुलाता है) आ रही हूँ।

रानी : (अपने-आप से) ऐसे-वैसे क्या जीना ? (गुनगुनाती है, साथ-साथ रेडियो बजता है, नेपथ्य में) 'जियो तो ऐसे जियो जैसे सब तुम्हारा है। मरो तो ऐसे कि जैसे तुम्हारा कुछ भी नहीं।' हूँ ! यह इत्ती बड़ी किताब जनरल नॉलेज की। क्या पूछेंगे। इतनी मामूली-सी नौकरी के लिए। यह डिग्री, यह अखबार ! ये किताब क्या काम आयेंगी। शर्म नहीं आएगी रानी तुम्हें। मान लो उन्होंने पानी पिलाने वाली माई की नौकरी तुम्हे दे भी दी। हूँ ! माई ! हा-हा-हा ! एम० ए० पास माई ! नहीं-नहीं-नहीं ! (बिलखती है) यह मुझसे नहीं होगा। यह मुझसे नहीं होगा।

चाची : (आकर) अब यह बैठे-बिठाये कौन-सा नाटक ले बैठी रानी बिटिया।

रानी : कुछ नहीं। कुछ नहीं, चाची माँ। यह सुनो न, कितना अच्छा भजन आ रहा है रेडियो पर—
'माई मीरा के प्रभु···(साथ-साथ गुनगुनाती है) सोचो तो वह भी माई थी, मतवाली मीराबाई। माई री···।

चाची : अब तू तैयार हो जा जल्दी से। मैं तेरे लिए टिफन तैयार करती हूँ। खिचड़ी और दही ठीक रहेगा या आलू के परांठे ही बना दूँ ?

रानी : भूख किस कमबख्त को रहेगी, चाची माँ।

चाची : वैसे तो भूखा शेर अच्छा लड़ता है !

रानी : भूखी शेरनी तो और भी खूँख्वार होगी।

चाची : निरोए पेट नहीं जाते अच्छे काम के लिए। दही-खिचड़ी का शकुन भी होता है और फिर जानती हो एक दिन खाना न खाये इंसान तो चिड़िया जितना वजन कम हो जाता है।

रानी : यह तो उलटे और अच्छा है।

चाची : यह आजकल की लड़कियाँ ! एकदम उलटी मत है

इनकी ! अरे ! वह औरत ही क्या जिसका शरीर भरपूर न हो। हमारे ज़माने में खूब खाती-पीती थीं स्त्रियाँ। उस से भी पहले, बहुत पहले, देखती हो न मूर्तियाँ अजन्ता-एलोरा की ! क्या गठे हुए जिस्म, सुन्दर और सजीले।

रानी : सुन्दर और सजीले। सो तो है; पर वे कौन थीं फिर, कनक छरी-सी कामिनी ?

चाची : ज़िन्दगी कवि की कल्पना नहीं है रानी। यह जो सोचने और समझने में खाडी है न, इसे पार करोगी न, जभी बात बनेगी। मैं तो मोटी बात जानती हूँ। यह गुलाब, जिसे तुम खूबसूरती में सब-कुछ मानती हो, मेरे नजदीक गुलकंद का एक हिस्सा है।

रानी : बर्तन मलते-मलते तुमने हाथ तो कड़े किए ही है, दिल भी कड़ा कर लिया चाची।

चाची : कड़ी नहीं, कड़वी लग रही होगी मेरी बात। पर यह सच्चाई है बेटा, कड़वी तो लगेगी ही। मैं बताऊँ बहस मत किया कर। जितना सोचती है न, उतना ही उलझती चली जाती है।

रानी : सो तो है। सो तो है। तैयार हो जाऊँ। ऐसे ही जाने क्यों एक अनजानी-सी बेचैनी मुझे अन्दर-ही-अन्दर खाये जा रही है।

चाची : कोई सिफारिश-विफारिश लड़ा रही हो।

रानी : कौन जानता है मुझे, चाची माँ।

चाची : हूँ ! वैसे देखा जाए तो अच्छी औरत अपनी सिफारिश आप होती है।

रानी : अच्छी नहीं, बुरी कहो, चाची माँ। वह जो ज़रूरत पड़ने पर सब-कुछ सौंप दे मर्द को।

चाची : कहाँ से कहाँ पहुँच जाती है कमबख्त। अब लेट हो गई तो मुझे दोष मत देना।

रानी : अरे हाँ, कितनी देर हो गई। अच्छा, अब मत डिस्टर्ब

करना। यह जनरल नॉलेज की इत्ती बड़ी किताब ! जरा एक-आध सरसरी नजर और मार लूँ—अन्दर जाकर। ओफ़ ! इतनी टेन्शन ! यह घबराहट, यह सरदर्दी क्यों है, क्यों है, क्यों है ? क्यों है यह सब-कुछ ? क्या कहेंगे वह ? क्या देखेंगे ? क्या पूछेंगे ? क्या कहूँगी मैं ? सच-झूठ ! क्या जवाब दूँगी मैं ? क्या सवाल करेंगे वे ? (रानी बाथरूम में भाग जाती है।)

दूसरी सीन
[इन्टरव्यू बोर्ड]

चेयरमैन : क्या सवाल करें आपसे। आप ही बताइए, मिस रानी रैना !

रानी : कुछ भी। कुछ भी पूछिए। जो जी में आये, सर। जवाब बन सका, तो जरूर दूँगी।

श्रीवास्तव : बनावट से भी काम लेती हैं आप जवाब देने में ?

रानी : नहीं-नहीं, यह मतलब नहीं मेरा। वैसे थोड़ी-बहुत बनावट, थोड़ा-बहुत टैक्ट तो स्वाभाविक है, नहीं ?

लेडीप्रिंसिपल : बहुत समझदार हैं आप। पर यह टैक्ट लड़कियों को पानी पिलाने वाली इस नौकरी में क्या काम आयेगा ?

रानी : इतनी सूझ-बूझ तो जिन्दगी का कोई-सा भी काम करने के लिए जरूरी हो जाती है और फिर पानी पिलाना क्या बुरा है ? काम की अपनी ही शान होती है, चाहे वह कितना ही मामूली क्यों न हो।

प्रोफ़ेसर : आप तो फ़िलासफ़र लगती हैं ?

रानी : हालात सब-कुछ बना देते हैं।

चेयरमैन : मुझे ताज्जुब हो रहा है। आप जैसी समझदार और होनहार लड़की इस दो टके की नौकरी के लिए आई। आपने

महसूस किया कि आपका उजलापन आपके पहनावे में, आपकी बातचीत में, आपके बेयरिंग मे ! समझी न आप ?

रानी : जी, जी ।

प्रोफेसर : यह सब आपको खुद अपने-आप उन सब गरीब और फटे-हाल उम्मीदवारों से हटके नही लगा जो बाहर आपके साथ बैठे थे ।

रानी : अन्दर झांक के हम लोगों के शायद आपने कभी नहीं देखा, चेयरमैन साहब, शायद मेरी हालत उन सब से खस्ता हो और यह फ़ेसाड···।

श्रीवास्तव · इतनी बढ़िया अंग्रेजी मे आपने इतनी ऊँची बात कही। आप कहाँ तक पढी है ?

रानी : मैं···मैं दस फेल हूँ ।

श्रीवास्तव : वह तो आपकी अर्जी से ही जाहिर है । पर लगता नहीं साहब । इसीलिए पूछ रहा हूँ ।

रानी : क्षमा कीजिए, मैं आप से एक निजी सवाल करूं ?

श्रीवास्तव : कीजिए ।

रानी : आप जो लगते हैं वास्तव में वह हैं ? (सब हँसते है ।)

श्रीवास्तव : मिस रैना !

प्रोफेसर : श्रीवास्तव साहब, देखा जाए तो सोचने की बात है कि वास्तव में श्रीवास्तव साहब या कोई भी साहब वह है जो दिखाई देते हैं ? (सब हँसते है ।)

रानी : मैं मिडिल क्लास, लोअर मिडिल क्लास की सफ़ेदपोशी की, कई एक लोगो की स्पिलिट पर्सनेलिटी की, आपकी ही नहीं, अपनी भी, सबकी, एक जनरल बात कर रही थी ।

चेयरमैन : ऐसे जवाब तो आई० ए० एस० के इन्टरव्यू मे सुनने को मिलते हैं । नही प्रोफेसर साहब ?

प्रोफेसर : लगता है आप कुछ छिपा रही हैं ।

रानी : औरत हूँ न, इसलिए जो कुछ छिपाना जरूरी है, बस वही।

श्रीवास्तव : बात समझ मे नही आई।

लेडीप्रिंसिपल : औरतों को समझना सब के बस की बात नही होती, श्रीवास्तव भाई। अच्छा छोडिए। यह बताइए, आप कश्मीरी है ?

रानी : जी हाँ।

श्रीवास्तव : आप लोग तो बहुत ऊँची-ऊँची जगहों पर, ओहदो पर पहुँचे हुए है, फिर यह नीची-सी नौकरी भला आपके क्या काम आएगी ?

रानी : काम कैसा भी हो उसकी अपनी ही आन-बान होती है और फिर जरूरत न ऊँच देखती है, न नीच; और फिर वास्तव मे देखा जाय श्रीवास्तव साहब, मुआफ कीजिए, मैं आपका नाम लेकर पुकार रही हूँ, जिन्दगी मे अगर निचाई नही होगी तो ऊँचाइयाँ कहाँ से आयेंगी। नही ?

प्रोफेसर : नहीं रानी रैना, यह नौकरी मुझे यकीन होता जा रहा है तुम्हारे लिए नही है। मैं तुम्हें निराश नहीं करना चाहता क्योकि तुम जरूरतमन्द लगती हो; फिर भी एक दोस्त की-सी सलाह देता हूँ कि अगर वाकई तुमने और ऊँची तालीम नही ली है तो जाओ, अभी तुम जवान हो, होनहार हो, और पढो। और एक अच्छी-सी डिग्री लेकर आओ। हो सकता है हम तुम्हें प्रोफेसर की नौकरी दे सकें।

रानी : दोस्ती, तालीम, नौकरी—सब साये हैं, जिनके पीछे भाग-भाग के मैं दीवानी हो गई हूँ। मैं पागल हो गई हूँ। नहीं चाहिए। मुझे नही चाहिए नौकरी। नहीं चाहिए जिन्दगी। नही चाहिए। कुछ भी नही चाहिए। (कागज उठा के फेंकती है, साडी का पल्लू फाड़ती है और दरवाजे की तरफ भागती है।)

चेयरमैन : मिस रैना प्लीज़, चपरासी, संभालो, संभालो। इस लड़की को क्या हो गया है।

लेडीप्रिंसिपल : हिस्टीरिया का फिट लगता है। मुझ पर छोड़िए, आओ मेरे साथ। इतना घबराने की भला इसमें क्या बात है। लाओ भई, जरा-सा पानी लाओ। बैठो, बैठो।

रानी : नहीं, नहीं, नहीं। मुझे नहीं चाहिए आपकी यह सारी की सारी लिप सिम्पैथी। यह हमदर्दी, यह दिलासे ! मैं नौकरी चाहती थी। बुरी तरह से। कोई भी नौकरी चाहती थी। (रोती है) किसी भी कीमत पर कोई भी नौकरी। कोई मेरा जिस्म माँगता है. कोई मुझे जीने नहीं देता।

प्रोफेसर : हम तुम्हें नौकरी दे देंगे। यह नहीं, इससे भी अच्छी, मिस रानी रैना। पर तुम्हें सब-कुछ सच-सच बताना होगा। तुम कौन हो, कितना पढ़ी-लिखी हो ? क्यों आई हो यह घिसी-पिटी नौकरी ढूंढने जो तुम्हारी शान के शायां नहीं है ?

रानी : मैं कौन हूँ, कहाँ से आयी हूँ, क्या चाहती हूँ। यह सब इन कागजों से जाहिर है।

लेडीप्रिंसिपल : जाहिर नहीं है, रानी बिटिया, तभी तो पूछ रहे हैं। सच क्या है ?

रानी : सच-झूठ से आपको क्या लेना, मैडम ! आपको देनी है नौकरी इस जानकारी पर तो दीजिए। नहीं तो जवाब दीजिए, प्लीज़।

श्रीवास्तव : लो कैन गो।

लेडीप्रिंसिपल : हाँ-हाँ, जाने दीजिए।

चेयरमैन : आप जा सकती है, मिस रैना। धन्यवाद ! यह रहे आपके कागज। अगली उम्मीदवार को भिजवा दीजिएगा प्लीज़। नतीजा हम आपको डाक से भिजवा देंगे।

रानी : मैं जानती हूँ, आपने क्या नतीजा निकाला है। जा रही हूँ। मुझमें कोई भूल हो गई हो, तो बुरा न मानिएगा,

प्लीज़। मैं बहुत दुखी हूँ। (जाती है।)

प्रोफेसर : बहुत तेज़ लड़की है। सच्ची-झूठी जैसी भी है कमाल की चीज़ है; और ज़रूरतमन्द भी ! मैं समझता हूँ अगर हम सेक्रेटरी साहब की सिफारिशी उम्मीदवार को वेटिंग लिस्ट में रख लें तो रानी रैना को यह नौकरी दी जा सकती है।

श्रीवास्तव : छोड़िए साहब। आप सोचते हैं ऐसी समझदार लड़की यह मामूली-सा काम टिककर कर सकेगी। इसको अच्छी नौकरी मिली या वर मिला तो चली जाएगी।

चेयरमैन : (दूसरे कैंडिडेट से) एक मिनट ठहरिये बाहर। अभी बुलाते हैं।

प्रोफेसर : मैं जानता हूँ यह लड़की झूठ बोल रही थी।

श्रीवास्तव : आप जानते हैं इसे ?

प्रोफेसर : इतना जानता हूँ जितना आप।

श्रीवास्तव : नहीं-नहीं, और जानिए। आप भी अकेले हैं। वह भी। यह रहा उसका पता।

प्रोफेसर : मिस्टर श्रीवास्तव, डोंट बी पर्सनल। निजी रूप में मैं किसी से भी मिल सकता हूँ। बेचारी जाने किस हाल में होगी।

तीसरा सीन
[रानी का घर]

रानी : मैं जिस हाल में हूँ, अच्छी हूँ, चाची डार्लिंग। लीव मी एलोन। लीव मी एलोन। प्लीज। आई बैग ऑफ यू। मुझे मेरे हाल पर छोड़ दो।

चाची : जब नौकरी नहीं मिली थी तब परेशान रहती थी। अब जब मिल गई है तो…।

रानी : खाक मिल गई है नौकरी। उठाके फेंक दो, जला दो, फाड़ डालो यह सब-की-सब अर्जियाँ, यह सर्टिफिकेट !

प्रोफेसर : (आकर) मैं आ जाऊँ ? अरे मिस रैना, यह आप क्या कर रही हैं ? ऐसे कीमती कागजात ऐसे बरबाद मत कीजिए।

रानी : ओह, आप प्रोफेसर साहब ! बताने आये हो कि वह नौकरी नहीं मिल सकती मुझे।

प्रोफेसर : हाँ रानी, वह नौकरी तुम्हें नहीं मिल सकती।

रानी : सुन लिया मैंने। आप जा सकते हैं।

चाची : रानी, पागल हो गई हो क्या ? घर आये मेहमान को यूँ कहते हैं क्या ? बैठ बेटा, बैठ। बहक गयी है बेचारी, टके-टके की नौकरी के पीछे भटकती-भटकती।

रानी : (नकल उतारती है) हूँ, क्यों आई हो यह घिसी-पिटी नौकरी ढूँढने ? क्या कह रहे थे प्रोफेसर साहब ! तुम्हें सच-सच बताना होगा।

प्रोफेसर : मैं जा रहा हूँ, मिस रैना। मुझे अफसोस है तुम्हें वह नौकरी नहीं मिल सकी। पर मुझे ऐसा लगा तुमने जो कुछ कहा वह···।

रानी : सच नहीं था। हाँ-हाँ, झूठ था। एकदम झूठ था। तो···।

प्रोफेसर : मुझे क्या लेना। वैसे एक हमदर्द दोस्त के नाते मैंने सोचा कि ज़रा अकेले में बात करूँ। शायद तुम्हें मेरा या किसी और का खत नहीं मिला।

रानी : आप भी मुझसे कुछ माँगने आये हो ? मेरा जिस्म···मेरी जान।

प्रोफेसर : रानी !

रानी : नहीं-नहीं। कहिए, कहिए। अकेले में कहिए। मैं आपकी क्या खिदमत कर सकती हूँ।

प्रोफेसर : देखिए-देखिए। मुझे गलत मत समझिए।

रानी : गलत क्या है। सही क्या है। सच क्या है। झूठ क्या है।

बुरा क्या है। भला क्या है। सब आप लोगों के बनाये हुए बहलावे है। मैं इनमे नही आने वाली। मैं नही मानती। नही मानती।

प्रोफेसर रानी, भगवान के लिए मेरी मानो…।

रानी : नहीं मानती, मैं किसी भगवान को नही मानती। मैं नही जानती आपको। आप चले जाइए, प्लीज…भगवान के लिए…।

प्रोफेसर : आ गईं न उसी राह पर। भगवान से भागकर कहीं नही जा सकते इंसान। रानी, मैं जा रहा हूँ।

चाची : हाय राम ! क्या कह रही हो साहब से लडकी। मेहमान भगवान होते हैं। बैठ बेटा, मैं चाय लाती हूँ तुम्हारे लिए।

रानी : तो बैठ के रिझाओ अपने भगवान को। मैं जा रही हूँ। (जाती है।)

चाची : इसकी बात का बुरा मत मानियो, बेटा। बेचारी भटक-भटक के बहुत दुखी हो गई है। तुम क्या करते हो ?

प्रोफेसर : नौकरी। कॉलेज मे लडके-लड़कियों को पढाने की नौकरी।

चाची : उसके लिए कितनी तालीम चाहिए ?

प्रोफेसर : कम-से-कम एम० ए०।

चाची : एम० ए०। देखो न बेचारी एम० ए० बी० टी० है। फिर भी बरसों से बेकार पड़ी है।

प्रोफेसर : एम० ए० बी० टी० !

चाची : तुम्हें यकीन नही आ रहा !

प्रोफेसर : नहीं-नहीं, यह बात नही है। मैं सोच रहा था…।

चाची : 'सोचियाँ सोच न होवेई जे सोचे रहें लख वार !'

प्रोफेसर : मैं सोच रहा था, इसको क्या ज़रूरत थी…।

चाची : जरूरत किसे नहीं होती, बेटा !

प्रोफेसर : नौकरी की ज़रूरत नही, माँ जी। झूठ बोलने की।

चाची : तो क्या इसने कुछ झूठ कहा। अभी रूठ गई तुमसे।

झूठी नही है बेटा। गरीब है, दुखी है। पर इसका मतलब यह तो नही कि जो उठा हम गरीबों को झूठा ही समझने लगा।

प्रोफेसर : कैसे समझाऊँ माँ जी।

रानी : (आकर) सब समझे बैठे है यहाँ। छोड़िए बेकार की बात। लीजिए, चाय पीजिए।

प्रोफेसर : अरे-अरे ! अभी-अभी तो आप मुझे घर से निकाल रही थी। अब चाय भी बना लाईं।

रानी : तरस आ गया आप पर।

प्रोफेसर : तरस !

रानी : हाँ, आपने तो खाया नही न ! हमने सोचा, हम ही हाथ बढायें।

चाची : सोना है रानी बेटी, कोई जौहरी ही नही मिला जाँचने को ! बेटा, सोना है सोना।

प्रोफेसर : जौहरी वैसे नाम का तो मैं भी हूँ; जवाहर जौहरी ! और मैं यह भी जानता हूँ कि यही नही, बेटी आपकी हीरा है हीरा।

चाची : वह तो पत्थर होता है।

रानी : जो खुद पत्थर होते है न चाची माँ, वे दूसरों को भी पत्थर समझते है।

चाची : आप लोग गुजराती हो ?

प्रोफेसर : है तो एक ही थैली के। आप लोग, मैं समझता हूँ, रैना-वाड़ी मे बस गए होगे कभी, इसलिए रैना कहलाये। हमारे पूर्वज जवाहरात की परख करते होगे, इसलिए जौहरी हो गए।

रानी : वाह, क्या दलील दी है ! सोने पर सुहागा सजाना तो कोई तुमसे सीखे।

चाची : प्याले रख के आई अभी। (जाती है।)

प्रोफेसर : यह आपके मिजाज में एकदम ही गर्मी और फिर एकदम

नर्मी मुझे जिन्दगी की धूप-छांव में उस मौसम की याद दिलाती है जब भरी दोपहरी में अचानक कहीं से बरसात का कोई अकेला बादल अपने दामन में भरी बूंदें बरसा के छँट जाए।

रानी : धूप की बरसात मे इतनी लम्बी-चौड़ी शायरी नही होती।

प्रोफेसर : तो क्या होता है ?

रानी : गीदड-गीदड़ी का व्याह। हा-हा-हा ! (दोनों हँसते है।)

प्रोफेसर : ऐसे में ही क्यों, वैसे क्यों नही ?

रानी : अब यह ऐसा-वैसा मैं कुछ नहीं जानती। वैसे-वैसे भी हो सकता है। उसके लिए महूरत थोड़े ही निकलवाना होता है।

प्रोफेसर : ब्याह नही, मिलन होता होगा।

रानी : मिलने के लिए कोई मौसम नही होता। वह तो कभी भी हो सकता है।

प्रोफेसर : ब्याह भी कभी हो सकता है।

चाची : (आकर) किसके ब्याह की बात हो रही है ?

प्रोफेसर : गीदडो के।

रानी : शेरो की शादियाँ कभी नही सुनी।

चाची : इंसानो की बात करो तो कुछ बात बने। बेटा, तुमसे क्या छिपाना···।

रानी : चाची !

चाची : वह पकौडों की प्लेट रखी है किचन मे। जा, ज़रा लपक के उठा ला।

रानी : चाची, क्या है ! सच्ची, पल-भर भी चैन नही लेने देती। इसके पास बैठो तो फट-से काम बता देती है।

चाची : बेकार भागती रहती है। कभी इस, कभी उस नौकरी के पीछे। भला बताओ, कोई बात है ?

प्रोफेसर : हाँ, माँ जी, भटकना तो वाकई बुरा है। वैसे नौकरी मे बुराई नही है। भले ही वह मर्दों के लिए हो, या औरतों

के लिए।

चाची : औरत की जगह घर में है, बेटा। सबसे पहले वह बीवी है, माँ है, जननी है।

प्रोफेसर : सो तो है।

चाची : इसीलिए कह रही थी, कोई अच्छा-सा आदमी निगाह में हो तो बताना।

प्रोफेसर : एक अच्छा-सा आदमी तो मैं हूँ।

चाची तुम तो मसखरी करने लगे।

रानी : (आकर) जुलाहों के जमाई माताओं से मसखरी करते आये है।

चाची : हाय-हाय ! हम जुलाहे है कही।

रानी : न कोई जमाई है, न कोई जुलाहा है, चाची माँ। यह लो पकौड़े और खाओ ठाठ से।

प्रोफेसर : नही-नही, आपने क्यो तकलीफ की, मुझे बिलकुल भी भूख नही थी।

रानी : नही थी कि उड गई।

प्रोफेसर : आपको देख के तो होश उड जाते है ! भूख बेचारी कौन-से बाग की मूली ठहरी।

चाची : खा लो, खा लो। गर्म और करारे हैं, रानी ने बनाये हैं।

प्रोफेसर : यह तो हाई-टी दावत हो गई।

रानी : क्यों बनाते हो, जौहरी साहब ! हम गरीबों के यहाँ दो वक्त खाने को मुश्किल से मिलती है। आप दावत की बात करते हो।

चाची : भीलनी के बेर भगवान राम बडे मजे से खा गये थे।

प्रोफेसर : नही, माँ जी, नही। मैं तो खुद गगू तेली हूँ।

रानी : तेली हो या जुलाहे, कुछ हो तो।

चाची : लडकी !

रानी : मज़ाक कर रही हूँ, माँ !

प्रोफेसर : कहने दीजिए, कहने दीजिए। मज़ा आ रहा है।

चाची : मैं जरा रसोई समेट लूं। (जाती है।)

रानी : और लीजिए पकौड़े। और लीजिए। चाय और लीजिए।

प्रोफेसर : नहीं-नहीं, बहुत ले लिया। आपसे बहुत कुछ ले लिया। अब चलूं।

रानी : चले जाना। पर एक बात बताओ तो!

प्रोफेसर : कहिए।

रानी : बुरा तो नहीं मानोगे?

प्रोफेसर : नहीं-नहीं, बिलकुल नहीं।

रानी : आप आये कैसे थे यहां?

प्रोफेसर : ऐसे ही चलते-चलते। (रेडियो से गाने की आवाज—'यूं ही कोई मिल गया था सरे राह चलते-चलते'!)

रानी : (गुनगुनाकर) सरे राह चलते-चलते! मैं सोच रही थी···।

प्रोफेसर : क्या सोच रही थी?

रानी : आप जरूर किसी मतलब से आये होंगे।

प्रोफेसर : मतलब के बिना कोई बात नहीं बनती क्या जिन्दगी में?

रानी : नहीं, प्रोफेसर साहब! आप नहीं जानते, मर्द मर्दों को इतना नहीं पहचानते, जितना औरतें उन्हें जानती हैं, पहचानती है।

प्रोफेसर : कैसे?

रानी : मैं समझती हूँ, हर मर्द हर औरत में एक ही चीज़ देखता है।

प्रोफेसर : बड़ी नासमझ हो।

रानी : समझती हूँ, सब समझती हूँ। बुरा न मानो तो बताऊँ।

प्रोफेसर : हूँ!

रानी : आप मुझे समझाने आये हो कि मैं उस नौकरी के क़ाबिल नहीं हूँ। फिर भी आपकी मदद से वह नौकरी मुझे मिल सकती है अगर मैं···।

प्रोफेसर : रानी!

रानी : बात तो पूरी करने दीजिए। अगर मैं आपकी बात मान जाऊँ, नहीं ?

प्रोफेसर : नहीं, यह बात तो नहीं है। वैसे निराश न होना। कहा न वह नौकरी तुम्हें नहीं मिल सकती।

रानी : शाबाश, जौहरी जी। मैं आपकी दिलेरी की दाद देती हूँ। कह चुके आप! बहुत-बहुत शुक्रिया। अच्छा, फिर मिलेंगे!

प्रोफेसर : सुनिए।

रानी : सुन लिया।

प्रोफेसर : अच्छा, जा रहा हूँ रानी। (दरवाज़े बन्द करती है) दूर से—सारे दरवाज़े बन्द नहीं करते।

रानी : नहीं चाहिए किसी की सलाह मुझे।

[रानी गले में पल्लू डालकर मेज़ पर खड़े होने का प्रयत्न करती है।]

चाची : (आकर) अरी, यह गले में पल्लू डालकर सारे दरवाज़े बन्द करके क्या कर रही हो। वह···वह कहाँ गया? वह···वह हमदर्द। मैं तो तुम्हारे लिए गर्म-गर्म चाय लाई थी बिटिया।

रानी : नहीं चाहिए चाय और हमदर्दी मुझे।

चाची : यह देख डाक भी लाई हूँ। इतनी सारी चिट्ठियाँ।

रानी : (ज़ोर से चिल्लाकर) नहीं चाहिए कुछ भी मुझे। तुम समझती क्यों नहीं, चाची माँ।

चाची : समझती हूँ। सब समझती हूँ, रानी बिटिया। निकाल पल्लू यह गले से! पगली हो गई है क्या! ले, एक खिड़की खोल देती हूँ।

रानी : (एक खिड़की खुली हुई) इससे क्या होगा? इससे क्या होगा?

चाची : हवाओं के झोंके आयेंगे, आशाओं के सितारे दिखाई देंगे। चहचहाती हुई चिड़ियाँ कोई सन्देश लेकर आयेंगी और

कोई बाँका सजीला राजकुमार अचानक आ के आवाज़ देगा, रानी !

रानी : यह राजा-रानी की कहानी, यह ताने-बाने शायरों के, यह फ़िलासफ़ी आने वाले अच्छे दिनों की, यह कहाँ से उबल पड़ी अचानक, चाची माँ ?

चाची : चाचा तेरे शायर थे, बिटिया। मुझे सामने बिठाकर कविता करते थे।

रानी : लो, अभी मैं जज़बाती हो रही थी, अब तुम भी होने लगी।

चाची : पर वह कमबख्त चला क्यो गया एकदम।

रानी : निकाल दिया मैंने। अच्छा, अब मुझे डिस्टर्ब मत करना। बहुत दिनों के बाद बहुत सारे खत आये है। पढ लूं लगे हाथों।

चाची : हे भगवान ! इस लड़की से समझना तेरे भक्तों के बस की बात नही रही।

रानी : चाची !

चाची : जा रही हूँ भई, जा रही हूँ। जो जी मे आये वह कर। मेरा क्या है। आज हूँ, कल न भी हूँ। किसी को क्या फर्क पडता है।

रानी : चाची माँ, प्लीज़।

चाची : जा रही हूँ भई, जा रही हूँ।

रानी : एक तीली देना माचिस की, चाची माँ !

चाची : क्या जलाओगी ?

रानी : और क्या रह गया है जलाने को।

चाची : शमा जलाओ। एक शमा से दूसरी शमा जलाओ, बेटा।

रानी : फिर शायरी करने लगी। अरे चाची माँ, कुरेदना है।

चाची : कुरेदना है तो जिन्दगी को कुरेदो। कान-दाँत कुरेदने से क्या होगा ?

रानी : कंसेन्ट्रेशन होती है काम करने मे। समझती हो। मन

लगता है। जैसे सिगरेट पीने मे···जैसे···बस समझ लो चिट्ठियाँ पढ़ने में जो टेंशन से रिलेक्शन मिलेगी, उसी का साथ देने के लिए।

चाची : समझ गई बाबा। पर डिबिया तो यह रही तेरे सिरहाने।

रानी . ओह, मैं तो भूल ही गई थी। थैंक यू चाची डार्लिंग।

चाची . बेचारी ! (जाती है।)

रानी : (पत्र देखती हुई, कान कुरेदती हुई) चेयरमैन की लगती है। जानती हूँ, इसमे क्या होगा। (चेयरमैन की आवाज में) प्यारी कुमारी रानी रैना, आपके दस दिसम्बर वाले इन्टरव्यू में बोर्ड ने आपको उस नौकरी के क़ाबिल नही पाया। इसका लेकिन वह मतलब नही है कि आप क़ाबिल नहीं हैं··· (अपनी आवाज में) मैं किसी क़ाबिल नही हूँ। नहीं हूँ। नॉनसेंस। ईडियट। ऑल ईडियट्स। रास्कल्ज़ ! ···बॉस···जितने क़ाबिल ये हैं, जानती हूँ। यह दूसरा देखती हूँ। श्रीमती आर० रैना ! ओह, राज चाची के नाम। (ऊँचे से) चाची, तेरा पत्र पढ़ रही हूँ। पूज्य माताजी, परनाम। बात तय हो गई। लड़का दस दिन में अमरीका लौट जाएगा। एक-दो दिन में वे लोग रानी को देखने आ रहे है। डेट और टाइम जो आपको सूट करे इस टेलीफोन नम्बर पर बता दीजिएगा···साला ! दिस साउंड्स इन्टरेस्टिंग। वैल ! वैल ! वैल ! यह देखूँ···प्रिय मिस रैना ! जिस लेक्चरर की नौकरी के लिए आपने नौ नवम्बर को अर्ज़ी दी थी उसका इन्टरव्यू दस दिसम्बर को होगा···कमबख्त कहीं के ! दस दिसम्बर तो आके चली भी गई। यह क्या है ?···सेल्स गर्ल की नौकरी आपको दी जा सकती है, पर उसके लिए आपको कुछ पैसा जमा कराना होगा। और एक जमानती, [illegible] के लिए··· सिक्योरिटी माई [illegible] ···ओह [illegible] है ! कोई चिट्ठी [illegible] कोई [illegible] की

दिखाई नहीं दे रही। जला दूँगी यह सब खत। जला दूँगी। फिर एक ज्वाला भभकेगी, जिसमे मैं भी जल जाऊँगी। यह घर भी, यह दुनिया भी जल जायेगी। क्या रह गया है !

चाची : (आकर) एक खत रह गया।

रानी : अरे हाँ, एक खत रह गया।

चाची : किस-किस के है ?

रानी : निराश मर्दों के निराश खत। लो, पढ़ लो तुम भी।

चाची : नहीं-नहीं, तू ही बता दे।

रानी : मैं तो इन्हें आग लगाने जा रही थी। हुँ ? लगे हाथों यह भी देख लूं। (पढ़ती है) रानी··· (बीच मे रोककर चाची से) चाची माँ, देख-देख, दूध उबल गया। जा न !

चाची : जा रही हूँ रानी, जा रही हूँ। न चूल्हे में सुख मिलता है, न चूल्हे के बाहर। (जाती है)।

रानी : रानी रानी ! (प्रोफेसर की आवाज मे) तुम्हारी जवानी। तुम्हारी तालीम। तुम्हारी कोशिश। इतनी छोटी-सी मुलाक़ात मे मैंने उन्हे बहुत करीब से देखा है। मैं तुम पर तरस नहीं खाता। न ही तुम्हारी तारीफ़ करके तुम्हे रिझाना चाहता हूँ। रानी, मैं तुम्हें पाना चाहता हूँ। अपनाना चाहता हूँ। नौकरी की तलाश अब तुम्हें नहीं करनी होगी। एक मुकाम और है औरत के लिए—घर ! एक मंज़िल और है, जहाँ वह माँ कहलाती है। आओ, मेरे साथ-साथ आओ। पापा के पैसे से और अपनी हिम्मत से एक ट्रस्ट बनायेंगे। कॉलिज खोलेंगे। वहाँ तुम्हारी जिम्मेदारी पानी पिलाने की नहीं, राह दिखाने की होगी। फिर न कोई ऊँचा होगा, न नीचा। न कश्मीरी, न गुजराती। न सच्चा, न झूठा। सोचो और समझो। वह उजाले आ रहे हैं रानी। आओ। चाहो तो। तुम्हारा जवाहर। (रानी की आवाज में) जवाहर ! (भागकर

लगता है। जैसे सिगरेट पीने में···जैसे···बस समझ लो चिट्ठियाँ पढ़ने में जो टेंशन से रिलेक्शन मिलेगी, उसी का साथ देने के लिए।

चाची : समझ गई बाबा। पर डिबिया तो यह रही तेरे सिरहाने।

रानी : ओह, मैं तो भूल ही गई थी। थैंक यू चाची डार्लिंग।

चाची : बेचारी! (जाती है।)

रानी : (पत्र देखती हुई, कान कुरेदती हुई) चेयरमैन की लगती है। जानती हूँ, इसमें क्या होगा। (चेयरमैन की आवाज में) प्यारी कुमारी रानी रैना, आपके दस दिसम्बर वाले इन्टरव्यू में बोर्ड ने आपको उस नौकरी के क़ाबिल नहीं पाया। इसका लेकिन यह मतलब नहीं है कि आप काबिल नहीं हैं··· (अपनी आवाज में) मैं किसी काबिल नहीं हूँ। नहीं हूँ। नॉनसेंस। ईडियट। ऑल ईडियट्स। रास्कल्ज़! ···बॉस···जितने क़ाबिल ये हैं, जानती हूँ। यह दूसरा देखती हूँ। श्रीमती आर० रैना! ओह, राज चाची के नाम। (ऊँचे में) चाची, तेरा पत्र पढ़ रही हूँ। पूज्य माताजी, परनाम। बात तय हो गई। लड़का दस दिन में अमरीका लौट जाएगा। एक-दो दिन में वे लोग रानी को देखने आ रहे हैं। डेट और टाइम जो आपको सूट करे इस टेलीफोन नम्बर पर बता दीजिएगा···साला! दिस साउंड्स इन्टरेस्टिंग। वैल! वैल! वैल! यह देखूँ···प्रिय मिस रैना! जिस लेक्चरर की नौकरी के लिए आपने नौ नवम्बर को अर्जी दी थी उसका इन्टरव्यू दस दिसम्बर को होगा···कमबख्त कहीं के! दस दिसम्बर तो आके चली भी गई। यह क्या है? ···सेल्स गर्ल की नौकरी आपको दी जा सकती है, पर उसके लिए आपको कुछ पैसा जमा कराना होगा। और एक ज़मानती, सिक्योरिटी के लिए··· सिक्योरिटी माई फुट! ···ओह! क्या मुसीबत है! कोई चिट्ठी काम की नहीं। कोई भी किरण उम्मीद की

दिखाई नहीं दे रही। जला दूँगी यह सब ख़त। जला दूँगी। फिर एक ज्वाला भभकेगी, जिसमे मैं भी जल जाऊँगी। यह घर भी, यह दुनिया भी जल जायेगी। क्या रह गया है !

चाची : (आकर) एक ख़त रह गया।

रानी : अरे हाँ, एक ख़त रह गया।

चाची : किस-किस के है ?

रानी : निराश मर्दो के निराश ख़त। लो, पढ़ लो तुम भी।

चाची : नही-नही, तू ही बता दे।

रानी : मैं तो इन्हें आग लगाने जा रही थी। हुँ ? लगे हाथों यह भी देख लूँ। (पढ़ती है) रानी··· (बीच में रोककर चाची से) चाची माँ, देख-देख, दूध उबल गया। जा न !

चाची : जा रही हूँ रानी, जा रही हूँ। न चूल्हे मे सुख मिलता है, न चूल्हे के बाहर। (जाती है)।

रानी : रानी रानी ! (प्रोफेसर की आवाज़ मे) तुम्हारी जवानी। तुम्हारी तालीम। तुम्हारी कोशिश। इतनी छोटी-सी मुलाकात मे मैने उन्हे बहुत करीब से देखा है। मैं तुम पर तरस नही खाता। न ही तुम्हारी तारीफ़ करके तुम्हें रिझाना चाहता हूँ। रानी, मै तुम्हें पाना चाहता हूँ। अपनाना चाहता हूँ। नौकरी की तलाश अब तुम्हे नही करनी होगी। एक मुकाम और है औरत के लिए—घर ! एक मंज़िल और है, जहाँ वह माँ कहलाती है। आओ, मेरे साथ-साथ आओ। पापा के पैसे से और अपनी हिम्मत से एक ट्रस्ट बनायेंगे। कॉलेज खोलेंगे। वहाँ तुम्हारी जिम्मेदारी पानी पिलाने की नही, राह दिखाने की होगी। फिर न कोई ऊँचा होगा, न नीचा। न कश्मीरी, न गुजराती। न सच्चा, न झूठा। सोचो और समझो। वह उजाले आ रहे हैं रानी। आओ। चाहो तो। तुम्हारा जवाहर। (रानी की आवाज़ में) जवाहर ! (भागकर

दरवाजे तक जाती है। फट से दरवाजे के खुलने और तूफान की सरसराहट की आवाज) (चीखकर) जवाहर !

चाची : (आकर) क्या हुआ, क्या हुआ ? फिर कोई तूफान उठाया ?

रानी . कोई था दरवाजे पर।

चाची . नही तो, कोई भी नही। हवाओं के रेले है पगली।

रानी : नही-नही, वह था, वह···वह !

चाची : कौन बिटिया ?

रानी : अन्दाज हू-ब-हू तेरी आवाजें पा का था।
देखा निकल के घर से तो झोका हवा का था।

चाची . तुम भी शायरी करने लगी। क्या हो गया है तुम्हे ?

रानी : प्यार !

चाची : (हँसकर) पगली !

रानी : चाची माँ !

चाची : कहो न, क्या कहना चाहती हो !

रानी : चाची माँ ! कर लूँ !

चाची : कर ले, बिटिया। जो जी में आये कर ले। मैंने कभी रोका है तुझे।

रानी : क्यो नही रोकती हो ?

चाची : क्योकि मैं जानती हूँ, तुम कभी कोई गलत काम नही करोगी।

रानी : कैसे ?

चाची : क्योकि हर औरत में अपने-आपको सँभालकर रखने की सलाहियत मौजूद होती है। भटक जाये इसान तो अलग बात है।

रानी : यह सब नही, चाची माँ। मैं समझती हूँ, वह कभी नही आयेगा यहाँ।

चाची : वह ! वह छोकरा ! क्यो नही आयेगा ?

रानी : उसको निकाल दिया मैंने। क्यो निकाल दिया मैंने ? ओफ,

क्या करूँ ? कहाँ जाऊँ ?

चाची : उसके घर जाओ। चलूं तेरे साथ !

रानी : हूँ, पर···पर ऐसे कैसे आयेंगे। यूं तो पता उसका यह रहा···पर छोड, चाची माँ, गोली मार।

चाची : यह घड़ी मे तोला, घडी मे मासा। ऐसे कैसे निभेगी तेरी उस शान्त स्वभाव वाले आदमी के साथ।

रानी : वैलेंस बनाने में तो देर नही लगती चाची माँ। पर···पर अब क्या करूँ ? तूफान ! वह देख, फिर एक और तूफान उठा। फिर कोई आया। देख तो, देख तो चाची माँ ! (तूफान और दरवाज़े फड़फड़ाने की आवाज़।)

चाची : कोई तूफान नही उठा। कोई नहीं आया। यह सब हंगामे तेरे अपने अन्दर उठ रहे हैं, रानी।

रानी : नही, चाची माँ, नही, देख तो। कौन है दरवाजे पर ? कौन है ? (जोर से) आ जाओ, दरवाज़े खुले हैं। कौन है ? कौन है वहाँ ?

प्रोफेसर : (आते हुए) रानी, मैं आ जाऊँ ?

रानी : आओ, जवाहर। आओ। और अब आकार कभी नही जाना।

[परदा गिरता है।]

क़द्रों के क़ातिल

कहानी तो है वैसे क़दरे पुरानी,
मगर इसलिए पड़ रही है सुनानी।
कि जब-जब तरक़्क़ी के ग़ुंचे खिले हैं,
कुछ ऐसे भी क़द्रों के क़ातिल मिले हैं!

[पुलिस थाना। कोई भी शहर हो सकता है। कोई भी इलाक़ा।]

हवलदार : ऐसे-ऐसे चोर-उचक्के पैदा हो रहे हैं हजूर कि न कभी सुने न देखे। अब क्या रपट लिखूं और क्या तफ़तीश करूँ। एक से एक अनोखी और अजीब आपबीती लिये चले आ रहे हैं फ़रियादी। अब आप ही बताओ किस पंचायत में, किस अदालत में कौन इनकी सुनेगा, कौन इन्साफ करेगा?

कोतवाल : (डाँटकर) हवलदार रपटीराम, तुम्हारा काम क्या है?

हवलदार : पा···पा···पत्ता काटना। मा···मा···मेरा मतलब है—परचा काटना हजूर।

कोतवाल : तो बस, बैठे काटते रहो बेटा। उसके बाद तुमसे ऊपर वाले; और ऊपर वालों से भी ऊपर वाला क्या करेगा, इसकी चिन्ता क्यों करते हो।

हवलदार : जी, जी।

कोतवाल : भई जब समस्या है तो उसका समाधान भी होगा। होगा कि नहीं?

हवलदार : जी, जी।

कोतवाल : तो फिर देखते क्या हो। लग जाओ लिखा-पढी में। बनाओ एफ० आई० आर० पर एफ० आई० आर०; और दूसरे सिपाही को भिजवाओ; और जिन-जिन लोगों का पता चलता है उन्हें बुलवाओ फौरन।

हवलदार : जी, जी।

कोतवाल : आओ भई, आगे आओ। बोलो, बोलो अपना दुख-दर्द। अपनी घटना-दुर्घटना से अवगत कराओ।

[कुछ स्त्री-पुरुष आगे बढ़ते हैं।]

हवलदार : जी, जी। (बहुत-सा शोर) अरे-अरे, मछली मार्कीट है क्या? खामोश, खामोश! मत भूलो कि आप लोग अन्दर

हो। थाने के अन्दर हो। एक वक्त मे एक भला आदमी बोलेगा। समझे। नहीं तो यह लो कागज, और लिखो अपनी-अपनी शिकायत।

मुन्नी : मेरी सुनिए, हवलदार साहब। मैं लुट गई, बरबाद हो गई, तबाह हो गई।

कोतवाल : पर क्या हुआ, कुछ कहोगी भी।

अनाप : हत्या हो गई। खून हो गया। मार डाला। मार डाला। जालिम ने, हवलदार साहब !

हवलदार : दम तो लो। दम तो लो।

बेचैन : लूट लिया। लूट लिया। छीन लिया मेरा चैन, हवलदार साहब। मेरा चैन। मेरा···।

हवलदार : सोने का था ? चैन ! चेन कहो न भाई, सोने का था।

मुन्नी : वह तो स्त्रीलिंग होती है।

कोतवाल : तुम्हारी बारी आयेगी तो बोलना। हाँ तो चेन खो गई तुम्हारी, सोने की।

बेचैन : हाँ-हाँ, सोने की, जागने की, उठने की, बैठने की।

अनाप : हत्या हो गई हाय, आचार की हत्या हो गई।

हवलदार : चटनी-अचार की दुकान है आपकी।

अनाप : नही समझेंगे आप, हवलदार साहब। आप नही समझेंगे।

हवलदार : बुद्धू हूँ क्या ? जाओ, नहीं लिखता रपट।

बेचैन : कोतवाल साहब, दुहाई है ! कोतवाल साहब, इतनी बड़ी इस चहारदीवारी मे कोई नही सुनता हमारी !

मुन्नी : इतनी बड़ी दुनिया में कोई नही सुनता हमारी। तुम बैठे इस चहारदीवारी को रो रहे हो।

कोतवाल : सुनो भई, सबकी सुनो।

हवलदार : कोई मेरी भी तो सुने साहब बहादुर।

कोतवाल : तुम्हारी मैं सुनूंगा।

हवलदार : मेरी तो मेरी घरवाली भी नहीं सुनती, बाहर वाले क्या सुनेंगे। हे भगवान, क्या जमाना आ गया ! सुनाओ भई,

सब जन सब-कुछ सुनाओ। पर एक-एक करके। शान्ति-पूर्वक।

बेचैन : शांति, शांति कहाँ रही ?

अनाप : शांत महोदय, शांत !

हवलदार : हाँ भाई।

खान : लेडीज फर्स्ट।

हवलदार : हाँ माई।

मुन्नी : माई होगी तेरी माँ। मेरा नाम मुन्नीबाई है।

हवलदार : हाँ बाई।

खान : बाई बाई। हा-हा-हा।

हवलदार : क्यों मज़ाक कर रहे हो ?

कोतवाल : भई सीधे से नाम ले के बुलाओ।

हवलदार : हाँ भई मुन्नी।

खान : मुन्नी ! (ही-ही-ही) इतनी बड़ी मुन्नी !

कोतवाल : खामोश, खामोश। हमारे पास समय नही है नष्ट करने को। रपट लिखवानी हो तो लिखाओ। नही तो जाओ जहाँ से आये हो।

हवलदार : यही तो मैं कह रहा हूँ हजूर। लो, लो, लो। लो भई कागज़ और अपना-अपना हाल-अहवाल, अपनी-अपनी घटना-दुर्घटना विस्तारपूर्वक लिख दो।

मुन्नी : हैं ! एँ एँ एँ (रोती है, कुछ नक़ली, कुछ असली।)

हवलदार : एँ क्या हुआ ?

मुन्नी : मुझे लिखना नही आता।

अनाप : चले आते हैं लिखा-पढी करने।

कोतवाल : खामोश, खामोश ! तो भई इसमे रोने की क्या बात है ? हम किसलिए हैं। लिख भई रपटीराम, लिख ले।

हवलदार : मुझे ही करने होंगे ये कागज़ काले, यह रात काली !

खान : और करतूतें काली।

हवलदार : वह आप जो हो करने को। नालायक !

खान : आपकी नही, इनकी करतूतो की कह रहा हूँ, हजूर।
कोतवाल : हां भई, वह चेन वाला आगे आए।
बेचैन : आ गया जनाब।
हवलदार : लिखा-लिखा। बयान लिखा।
बेचैन : चैन भी गया, करार भी गया।
कोतवाल : अब यह करार-वरार कहां से आ गया।
हवलदार : किसी करारनामे की कह रहे हो ?
बेचैन : जी हां। जी हां। जिसने है चैन लूटा, उसने करार लूटा, रातों की नीद लूटी, दिन का···।
अनाप : अबे ओ बेतुके की औलाद, तुम्हे और कोई जगह नही मिली शायरी करने को ?
बेचैन : इस दिल की, इस दर्द की, इस प्यार की, इस पीड़ा की बस एक ही भाषा है। एक ही अभिलाषा है, एक ही, बस एक ही आशा है। और वे है आप माई-बाप !
खान : जरूरत के वक्त तो···।
हवलदार : रोक के, रोक के। बीच में क्यों बोलते हो ?
कोतवाल : यदि यही बात है तो हम आभारी हैं फ़रियादी, कि तुमने हममे, हमारे इन्साफ़ मे, हमारे कार्य में आशा रख के हमें विश्वास का प्रमाण दिया, हमको अपनाया···।
बेचैन : ओफ ओ ! मैं इस आशा की नहीं; अपनी आशा निराश-पुरी की बात कर रहा हूँ।
कोतवाल : करो-करो, किसी भी आशा-निराशा की बात करो, पर कर भी चुको।
बेचैन : हाँ, तो लिखिए हजूर, मेरे सपनो में आ-आ के, मेरी नीदें चुरा-चुरा के···।
मुन्नी : जब नीद ही चुरा के ले गई तो सपने कहाँ से आ गए ! सोचने की बात है। नही जी ?
कोतवाल : तुम खामोश रहो। ठहरो, यह ठीक कह रही है। काट दो, काट दो यह लाइन।

बेचैन : पत्ता ही काट दो।
कोतवाल : जलाल में न आओ। मजलूम तुम हो, हम नही है। गर्ज तुमको है, हमको नही।
बेचैन : (गाकर) जायें तो जायें कहां!
मुन्नी : कहां ? जहां से आए हो।
हवलदार : खामोश, खामोश। हां भई चैन मास्टर, नाम-पता बोल।
बेचैन : बेचैन लाल, सुपुत्र सुखचैन लाल। गली हल्ले वाली, मोहल्ला शोरवालान।
कोतवाल : आगे चल, आगे।
बेचैन : आगे अहवाल यह है कि मेरी पड़ोसन ने मेरा जीना हराम कर दिया है।
हवलदार : (लिखते हुए) ह···रा···म···कर···दि···या···है! हूं!
बेचैन : वह वक्त-बेवक्त उल्टे-सीधे राग शाम से ही अलाप-अलाप कर न तो खुद सोती है और न दूसरों को सोने देती है।
अनाप : तो क्या तुम्हारा सोने का और उसके सोने का एक ही टाइम है ?
कोतवाल : खामोश-खामोश ! हां, भई !
बेचैन : जिस समय वह स्वयं सुर में नही होती उसके सारे घरवाले भी बेसुरे हो जाते है और फिर ऐसे लगता है जैसे उन्होंने आसमान सिर पर उठा लिया हो।
कोतवाल : बस, इतनी-सी बात ?
बेचैन : नही, हजूर, नही। यह तो इब्तदाये इश्क है।
खान : इश्क। पडोसन से या उस आशा निराशपुरी से ?
कोतवाल : खामोश ! खामोश ! हूं, आगे।
बेचैन : आगे क्या, बस यह सिलसिला चल ही रहा होता है कि बराबर वाले जंज घर मे लाउडस्पीकर पर गन्दे-गन्दे गानों का तांता बंध जाता है।
मुन्नी : मुफ्त मे संगीत का रस लेते हो।
बेचैन : तुम ले लो।

कोतवाल : खामोश, खामोश ! फिर ?

वेचैन : फिर भजन मण्डली मैदान मे आ जाती है माई-बाप।

मुन्नी : अरे मूर्ख, उससे तो तेरा जन्म कृतार्थ होता है ! भगवान का नाम कानो मे पडता है।

कोतवाल : तुम लोग चुप करोगे भी कि··· (मुंह मे कुछ गाली बोलता है आहिस्ता से) बन्द कर दूंगा।

वेचैन : फिर सरकार, भाषण पार्क से भांत-भांत की बोली बोलने लगते है लीडर लोग।

खान : गीदड लोग।

हवलदार : खामोश ! जरा लिख लूं···हूँ···भांत-भांत की बोलने लगते है गीदड़ लोग !

वेचैन : लीडर लोग।

हवलदार : ओफ ओ ! गलत करा दिया न। क्यो बोलते हो बीच में। हाँ भई, लीड···र···लो···ग !

वेचैन : फिर कोई बारह-एक बजे जब बगल वाला सिनेमा टूटता है।

हवलदार : टूटता है !

वेचैन : छूटता कर लीजिए।

मुन्नी : अरे, कोई पहाड है, जो टूटता है। कोई फव्वारा है जो छूटता है। सीधी-सादी सरल भाषा मे कहो न कि फिनिस होता है, समाप्त होता है।

हवलदार : (लिखते हुए) समाप्त होता है···तो ?

वेचैन : तो घण्टा, आधा घण्टा वो हल्ला-गुल्ला, वो शोर लोगों का, तांगो का, कारो का, स्कूटरों का कि खुदा की पनाह।

कोतवाल : उसके बाद तो सो जाते हो न ?

वेचैन : कहाँ, हजूर ! एक-आध घण्टा आँख लगी तो कोई एक-आध घण्टे के बाद आँधी एक्सप्रेस दनदनाती हुई नींद की घाटियों को चीरती हुई चली जाती है।

कोतवाल : फिर क्या करते हो ?

खान : फ़ैमिली प्लेनिग।

कोतवाल : खामोश, खामोश !

बेचैन : फिर क्या। करवटें लेता हूँ कि इतने में प्रभात-फेरी वाले आ जाते हैं।

हवलदार : फिर ?

बेचैन : फिर वही अलाप माई-बाप, मेरी पड़ोसन वाला सन्ध्या समय समाप्त किया हुआ प्रभात की भैरवी के रूप में जागृत हो जाता है।

हवलदार : और फिर ?

बेचैन : मुझे भी जागृत कर देता है।

मुन्नी : झूठ बोल रहा है सरकार। अभी-अभी कह रहा था कि रात-भर जागा रहा।

बेचैन : ···मेरा मतलब है और जागृत कर देता है। भई, जागने की भी डिग्रियाँ होती हैं।

अनाप : कहाँ मिलती हैं ?

कोतवाल : खामोश ! खामोश ! कौन है तुम्हारी पड़ोसन ?

बेचैन : यही। यह रही मिस मुन्नीबाई।

कोतवाल : मिस अभी तक ? मैं तो समझा, तुम्हारी शादी हो चुकी है।

मुन्नी : जी हाँ, आपने ठीक समझा बडे साहब जी। शादी मेरी हो चुकी है—संगीत से।

खान : संगीत ! वो संगीतकुमार सिनेमा वाला।

मुन्नी : नहीं समझेंगे आप। संगीत। पूर्ण संगीत। स्वच्छ और सुन्दर संगीत।

हवलदार : नहीं समझा।

अनाप : या रब ! वे न समझे हैं न समझेंगे मेरी बात। दे और दिल उनको जो न दे मुझको जबान और !

कोतवाल : अबे ओ दिल वाले, जब तेरी बारी आएगी तो बोलियो।

हवलदार : हाँ भई !

बेचैन : मैंने तो हाल सुना दिया, हजूर। अब आप कीजिए कार्रवाई।

कोतवाल : ठहर जा, ठहर जा। यह कार्रवाई कच्चे कागज पर होगी अभी। कह नही सकता, यह ऊँट किस करवट बैठते है।

बेचैन : ऊँट ! हम ऊँट दिखाई दे रहे हैं आपको सरकार !

खान : ऊँट ही कहा, शुक्र करो गधे नहीं कहा।

बेचैन : गधे होगे तुम ! (बेचैन और खान हाथापाई करते हैं।)

हवलदार : अरे-अरे, यह क्या गधेपन का सबूत दे रहे हो। अरे मियाँ, फौजदारी तो मत करो।

कोतवाल : कर दो अन्दर सबको। एक तो इनकी ऊटपटाँग फरियाद सुनो और उस पर इनकी बहस कि ऊँट नहीं हैं गधे है, गधे नही घोड़े है।

अनाप : जो है सो तो है ही सरकार। आप किस दुविधा मे फँस गए। आगे चलिए।

हवलदार : हाँ भई मिस मुन्नी जान।

मुन्नी : खबरदार जो मुझे जान कहा।

हवलदार : खुदा के लिए मेरी जान छोड़, मेरी जान !

मुन्नी : हाय मुआ मरदूद मेरी जान, मेरी जान कहे जा रिया है।

कोतवाल : वह तुम्हारी जान को नही, अपनी जान को रो रहा है। तू नाम-पता बोल।

मुन्नी : बोलती हूँ। कुमारी मुन्नीबाई, सुपुत्री लाला चुन्नीलाल जी चवन्नी वाले।

हवलदार : चवन्नी वाले ?

मुन्नी : नकदी कराने का व्यापार है अपना। नकली चवन्नी, नकली अठन्नी। फटे-पुराने नोट नए करवा लो। जब भी चाहो हमारी दुकान से।

हवलदार : सरनामाँ बोल।

मुन्नी : नामा जितना चाहे ले आओ। कमीशन दो और नया माल ले जाओ।

बेचैन : नामा नही, सरनामाँ। पता पूछ रहे हैं, मुन्नीबाई। लिख लो जी, मेरे वाला ही लिख लो, हवलदार साहब।

मुन्नी : तुम बीच मे क्यो बोलते हो ? मैं जानूं, हवलदार साहब जानें।

बेचैन : लो, यहां भी लगी हुक्म चलाने। तेरे बाबा का घर नही है यह, समझी !

मुन्नी : तेरे बाबा का है ?

बेचैन : हां-हां, है।

खान : है तो मेरे का भी, पर मेरे मामे का है।

कोतवाल : तुम्हारे वालिद साहब का नाम ?

खान : नाडू खां सालारे नाडू खां।

मुन्नी : नाडू खां।

कोतवाल : अच्छा, वह नाडू खाँ का साला तुम्हारा बाप है ?

खान : जी हां, जी हां। इसमें क्या शक है। माई-बाप, वह बिलकुल मेरा बाप है।

कोतवाल : (पगड़ी पहनकर खड़ा होकर) लाओ भई, इसको कुर्सी दो। बैठो-बैठो, इसकी सुन लो।

हवलदार : अब मुन्नीबाई का बयान सिरे चढ़ाऊँ या इनको सिर पर चढ़ाऊँ।

कोतवाल : निपट लो उससे भी और इससे भी। जरा गीयर बदल लो और चलाते जाओ टापोटाप।

हवलदार : हां भई, मुन्नीबाई !

मुन्नी : हां जी, लिखिए-लिखिए। वह कोई चोर था।

हवलदार : (लिखते हुए) वह…कोई…चोर…था।

मुन्नी : चितचोर था।

हवलदार : चित…है ?

बेचैन : चारों खाने चित कर दिया होगा।

कोतवाल : खामोश ! खामोश ! उसका अता-पता ?

मुन्नी : (आंखें बन्द कर) वह दिल में रहता था, वह जिगर में रहता था। वह नस-नस में समाया था। वह सांसों में बसता था।

कोतवाल : ठहर जा, ठहर जा। यह कार्रवाई कच्चे कागज पर होगी अभी। कह नही सकता, यह ऊँट किस करवट बैठते हैं।

बेचैन : ऊँट ! हम ऊँट दिखाई दे रहे है आपको सरकार !

खान . ऊँट ही कहा, शुक्र करो गधे नही कहा।

बेचैन : गधे होगे तुम ! (बेचैन और खान हाथापाई करते है।)

हवलदार : अरे-अरे, यह क्या गधेपन का सबूत दे रहे हो। अरे मियाँ, फौजदारी तो मत करो।

कोतवाल : कर दो अन्दर सबको। एक तो इनकी ऊटपटांग फरियाद सुनो और उस पर इनकी बहस कि ऊँट नही हैं गधे हैं, गधे नही घोड़े हैं।

अनाप : जो है सो तो हैं ही सरकार। आप किस दुविधा मे फँस गए। आगे चलिए।

हवलदार : हाँ भई मिस मुन्नी जान।

मुन्नी : खबरदार जो मुझे जान कहा।

हवलदार : खुदा के लिए मेरी जान छोड, मेरी जान !

मुन्नी : हाय मुआ मरदूद मेरी जान, मेरी जान कहे जा रिया है।

कोतवाल : वह तुम्हारी जान को नही, अपनी जान को रो रहा है। तू नाम-पता बोल।

मुन्नी : बोलती हूँ। कुमारी मुन्नीबाई, सुपुत्री लाला चुन्नीलाल जी चवन्नी वाले।

हवलदार : चवन्नी वाले ?

मुन्नी : नकदी कराने का व्यापार है अपना। नकली चवन्नी, नकली अठन्नी। फटे-पुराने नोट नए करवा लो। जब भी चाहो हमारी दुकान से।

हवलदार : सरनामाँ बोल।

मुन्नी : नामा जितना चाहे ले आओ। कमीशन दो और नया माल ले जाओ।

बेचैन : नामा नही, सरनामाँ। पता पूछ रहे है, मुन्नीबाई। लिख लो जी, मेरे वाला ही लिख लो, हवलदार साहब।

मुन्नी : तुम बीच में क्यों बोलते हो ? मैं जानूं, हवलदार साहब जानें।

बेचैन : लो, यहाँ भी लगी हुक्म चलाने। तेरे बाबा का घर नहीं है यह, समभी !

मुन्नी : तेरे बाबा का है ?

बेचैन : हाँ-हाँ, है।

खान : है तो मेरे का भी, पर मेरे मामे का है।

कोतवाल : तुम्हारे वालिद साहब का नाम ?

खान : बाड़ू खाँ सालारे नाड़ू खाँ।

मुन्नी : नाड़ू खाँ।

कोतवाल : अच्छा, वह नाड़ू खाँ का साला तुम्हारा बाप है ?

खान : जी हाँ, जी हाँ। इसमें क्या शक है। माई-बाप, वह बिलकुल मेरा बाप है।

कोतवाल : (पगड़ी पहनकर खड़ा होकर) लाओ भई, इसको कुर्सी दो। बैठो-बैठो, इसकी सुन लो।

हवलदार : अब मुन्नीबाई का बयान सिरे चढ़ाऊँ या इनको सिर पर चढाऊँ।

कोतवाल : निपट लो उससे भी और इससे भी। ज़रा गीयर बदल लो और चलाते जाओ टापोटाप।

हवलदार : हाँ भई, मुन्नीबाई !

मुन्नी : हाँ जी, लिखिए-लिखिए। वह कोई चोर था।

हवलदार : (लिखते हुए) वह···कोई···चोर···था।

मुन्नी : चितचोर था।

हवलदार : चित···है ?

बेचैन : चारों खाने चित कर दिया होगा।

कोतवाल : खामोश ! खामोश ! उसका अता-पता ?

मुन्नी : (आँखें बन्द कर) वह दिल में रहता था, वह जिगर में रहता था। वह नस-नस मे समाया था। वह साँसों में बसता था।

बेचैन : (गाकर) यह कैसे लोग है जो दर्द बनकर दिल में रहते हैं।

मुन्नी : हाँ, वह दिल का दर्द बन गया था।

खान : हार्ट अटैक तो नहीं था ?

अनाप : ब्लड-प्रैशर होगा।

मुन्नी : जो कुछ भी था वह दिल का मेहमान एक इंसान बलाय-जान था।

हवलदार फिर ?

मुन्नी : फिर वह मेरा दिल चुरा के भाग गया।

हवलदार : दफ़ा तीन सौ अस्सी लगती है। चार सौ नौ के साथ··· हूँ ! विश्वासघात भी है···जबर्दस्ती भी की।

मुन्नी : जी हाँ, जी हाँ !

कोतवाल : फौजदारी भी बनती है ! चोरी नहीं, यह तो डकैती है।

हवलदार : अब कहाँ मिलेगा ?

मुन्नी : वह बेवफा था। अवश्य किसी दूसरे या तीसरे या चौथे या पाँचवें दिल में जा बसा होगा।

हवलदार : जितने यहाँ हैं उनकी तलाशी ले लूँ, सर ?

कोतवाल : केवल इस पड़ोसी की जाँच-पडताल कर लो।

बेचैन : मैं तो स्वयं फरियादी हूँ, फ़रियाद ले के आया हूँ, हुजूर !

कोतवाल . तुमने कभी देखा हो किसी को इनका दिल उड़ाते या कहीं मा···मा···मेरा मतलब है कहीं कोई टूटा-फूटा दिल पड़ा पाया हो, आसपास किसी सडक पर।

बेचैन : जमादारनी से पूछना पडेगा। शायद कमेटी वाले उठा के ले गए होंगे। मैंने तो नहीं देखा। पर सोचने की बात है जिसने उडाया होगा, वह भु[illegible] ही।

खान : उसको और मिल गए हैं ?

हवलदार : तो अब क्या करें ?

कोतवाल : क्या करें ? रपट [illegible] वालो के बस्ता अलिफ, बस्ता [illegible] जितने मुस्तवे—मेरा

पर शक किया जा सकता है, उनको पूछताछ के लिए यहाँ बुलवाओ। जाओ भई तफतीशी लाला रपटीराम ! ज़रा जल्दी कर लो।

हवलदार : अभी करते है। बैठ जा उधर हो के बुन्नी माई। म···म ···मेरा मतलब मुन्नीबाई। अब वह हत्याकांड। हाँ भई, वह अचार-बचार की क्या कह रहे थे तुम ?

अनाप : जी, जी, लिखो-लिखो। विचार नहीं, वास्तव मे जो हुआ वही वर्णन करता हूँ।

हवलदार : कर, कर, कुछ तो कर।

अनाप : लो, देर तो आप कर रहे हो। सबसे पहले लेना चाहिए था मुकद्दमा मेरे क़त्ल का।

कोतवाल : कौन है मक्तूल ?

अनाप : मैं और कौन।

खान : हा-हा-हा ! (सभी हँसते हैं।)

हवलदार : खामोश ! खामोश ! अरे मियाँ, क़त्ल कैसे हो गया, जब तुम मरे ही नही ?

अनाप : मरे से भी बुरा हवलदार साहब। यह जीना कोई जीना है।

हवलदार : दफा कौन-सी लगाऊँ ? तीन सौ मात तो नही बनती। अकदामे कत्ल होगा—तीन सौ चार ! कोशिश की होगी तुम्हें मारने की ! हैं ?

अनाप : आप समझते क्यों नही। कैरेक्टर एसेसीनेशन। उसने मेरे इखलाक का खून कर दिया, हजूर !

हवलदार : इखलाक कौन है ?

अनाप : (जोर से) इखलाक, आचार···कौन-सी भाषा मे बतलाऊँ ?

कोतवाल : चिल्लाओ नहीं। नाम लिखाओ।

अनाप : अनापचन्द वल्द शनापचन्द।

हवलदार : खूनी का नाम, वलदीयत, सकूनत।

अनाप : गालीराम गलौजचन्द, चालचलन बाजार, बस्ती जबर्दस्ती,

बेचैन : (गाकर) यह कैसे लोग हैं जो दर्द बनकर दिल में रहते हैं।
मुन्नी : हां, वह दिल का दर्द बन गया था।
खान : हार्ट अटैक तो नहीं था?
अनाप . ब्लड-प्रेशर होगा।
मुन्नी . जो कुछ भी था वह दिल का मेहमान एक इंसान बलाय-जान था।
हवलदार फिर?
मुन्नी : फिर वह मेरा दिल चुरा के भाग गया।
हवलदार : दफा तीन सौ अस्सी लगती है। चार सौ नौ के साथ··· हूं! *विश्वासघात भी है···जबर्दस्ती भी की।*
मुन्नी · जी हां, जी हां!
कोतवाल : फौजदारी भी बनती है! चोरी नहीं, यह तो डकैती है।
हवलदार : अब कहां मिलेगा?
मुन्नी : वह बेवफा था। अवश्य किसी दूसरे या तीसरे या चौथे या पाँचवें दिल मे जा बसा होगा।
हवलदार : जितने यहाँ हैं उनकी तलाशी ले लूं, सर?
कोतवाल : केवल इस पड़ोसी की जांच-पड़ताल कर लो।
बेचैन : मैं तो स्वयं फरियादी हूँ, फरियाद ले के आया हूँ, हजूर!
कोतवाल · तुमने कभी देखा हो किसी को इनका दिल उड़ाते या कहीं मा···मा···मेरा मतलब है कहीं कोई टूटा-फूटा दिल पड़ा पाया हो, आसपास किसी सड़क पर।
बेचैन : जमादारनी से पूछना पड़ेगा। शायद कमेटी वाले उठा के ले गए होंगे। मैंने तो नहीं देखा। पर सोचने की बात है जिसने उड़ाया होगा, वह भला ऐसे फेंकेगा थोड़े ही।
खान : उसको और मिल गए होंगे न। कह तो रही है।
हवलदार : तो अब क्या करें?
कोतवाल : क्या करें? रपट लिखके तफतीश करो। दिल वालों के बस्ता अलिफ, बस्ता बे बनाओ और इनके मोहल्ले में जितने मुस्तबे—मेरा मतलब है जितने आशिक़ हैं, जिन

पर शक किया जा सकता है, उनको पूछताछ के लिए यहाँ बुलवाओ। जाओ भई तफ़्तीशी लाला रपटीराम ! ज़रा जल्दी कर लो।

हवलदार : अभी करते हैं। बैठ जा उधर हो के बुन्नी माई। म···म ···मेरा मतलब मुन्नीबाई। अब वह हत्याकाड। हाँ भई, वह अचार-वचार की क्या कह रहे थे तुम ?

अनाप : जी, जी, लिखो-लिखो। विचार नहीं, वास्तव मे जो हुआ वही वर्णन करता हूँ।

हवलदार : कर, कर, कुछ तो कर।

अनाप : लो, देर तो आप कर रहे हो। सबसे पहले लेना चाहिए था मुकद्दमा मेरे क़त्ल का।

कोतवाल : कौन है मक़्तूल ?

अनाप : मैं और कौन।

खान : हा-हा-हा ! (सभी हँसते है।)

हवलदार : खामोश ! खामोश ! अरे मियाँ, क़त्ल कैसे हो गया, जब तुम मरे ही नहीं ?

अनाप : मरे से भी बुरा हवलदार साहब। यह जीना कोई जीना है।

हवलदार : दफ़ा कौन-सी लगाऊँ ? तीन सौ सात तो नही बनती। अक़दामे क़त्ल होगा—तीन सौ चार ! कोशिश की होगी तुम्हे मारने की ! हैं ?

अनाप : आप समझते क्यो नही। कैरेक्टर एसेसीनेशन। उसने मेरे इखलाक का ख़ून कर दिया, हज़ूर !

हवलदार : इखलाक कौन है ?

अनाप : (ज़ोर से) इखलाक़, आचार···कौन-सी भाषा मे बतलाऊँ ?

कोतवाल : चिल्लाओ नही। नाम लिखाओ।

अनाप : अनापचन्द वल्द शनापचन्द।

हवलदार : ख़ूनी का नाम, वलदीयत, सकूनत।

अनाप : गालीराम गलौजचन्द, चालचलन बाज़ार, बस्ती जबर्दस्ती,

मोहल्ला मारोमार।

हवलदार : ठहरो-ठहरो। यहाँ तो ए से लेकर जैड तक फौजदारी ही फौजदारी दिखाई दे रही है। मौके पर चलें सरकार?

कोतवाल . तफतीशी अब जा भी चुकी। लाओ घेर के सब मुस्तबों को फौरन।...हाँ भई, पहले भी कभी इन लोगों ने उस इलाके में कोई ऐसी वारदात की?

अनाप : दूर क्या जाना सरकार, मेरे साथ ही अत्याचार पर अत्याचार किए उन्होंने, कत्ल पर क़त्ल करने के प्रयत्न किए, माई-बाप।

कोतवाल : कैसे?

अनाप ' वह ऐसे कि एक वहन है इनकी हजूर, जिसने बरसों मुझ पर तीर चलाये। तीर पर तीर। बान पर बान।

कोतवाल : बान!

अनाप : हाँ हजूर, नैनो के बान। मेरा सीना छलनी कर दिया। वह तो कहिए मैं ही सख्त जान था, जो मरा नही। या यूँ कहिए कि यह मेरा दूसरा जन्म है। दूसरा भी नही, सोलहवाँ-सत्रहवाँ समझिए; या यूँ कहिए कि रोज़ मरता हूँ, रोज़ जीता हूँ।

कोतवाल : खामोश! खामोश! कही कमवख्त शायर तो नही।

अनाप : हूँ हजूर, हंडरेड परसेंट हूँ। (गाकर) हूँ वह लमहा जो गम मे बीता हूँ, मय को पानी समझ के पीता हूँ। जिन्दगी इस तरह से गुज़री है कि रोज़ मरता हूँ, रोज़ जीता हूँ।

कोतवाल : शराब भी पीते हो। नोट करो, नोट करो।

अनाप : आँखों से। आँखों से जरूर पीता हूँ, माई-बाप! (गाकर) तेरी आँखें यह कहती फिरती हैं, लोग नाहक शराब पीते हैं।

हवलदार : मामला समझ मे आ रहा है हजूर। इसने ज़रूर मुस्तबा मुजरिम की वहन की आँखों मे नाजायज शराब पी होगी और मस्त होके अपनी शायराना ज़बान मे वाही-तबाही वकी होगी और बिगड़कर उस बेवस विवश महिला ने

नयनों के वान चलाकर इस दुष्ट का मुकाबला किया होगा। इस हंगामे को लडकी के भाइयों ने देखा होगा और तैश में आकर इसके या इसके कैरेक्टर के खून के प्यासे हो गए होंगे।

कोतवाल : शावाश ! क्या अन्दाज़े लगाए है, मैं तुम्हारी तरक्की के लिए सिफ़ारिश करूंगा।

हवलदार : ऐसे-ऐसे नए हंगामों के लिए एक विशेष विभाग की स्थापना होनी चाहिए, हजूर। जिसमे आपका ओहदा बढ़ा कर आपको इचार्ज बनायें और मुझे उप-इचार्ज !

खान : यह आपस मे ओहदे ही बाँटते रहोगे या गरीबों की भी सुनोगे !

हवलदार : खामोश-खामोश ! सुन रहे हैं, सबकी सुन रहे है। कोतवाल साहब आपकी भी सुन रहे हैं, साथ-साथ मेरी भी सुन रहे है।

अनाप : नतीजा क्या निकला ?

हवलदार : लो। यह कोई झट मंगनी थोड़े ही है जो पट ब्याह हो जाय। अब तुमने रपट लिखवाई है। बाकायदा ढंग से तफतीश होगी। पूछताछ होगी। फिर नतीजा कोई हो सकता है निकले तो निकले, न निकले न ही निकले।

मुन्नी : तो ?

कोतवाल : तो आप लोग अपने-अपने घर जाओ। हमारी जाँच-पडताल का जो भी बुरा-भला परिणाम होगा, तुम लोगों को डाक द्वारा सूचित कर दिया जाएगा।

अनाप : इस बीच यदि कैरेक्टर-कत्ल जारी रहे तो ?

खान : नयनों के बान चलते रहे तो ?

बेचैन : सुख-चैन लुटते रहे तो ?

मुन्नी : चित के चोर बराबर चोरियाँ करते रहे तो ?

अनाप : सीनों में कोई आग लगाता रहा तो ?

बेचैन : हगामे पर हंगामा मचता रहा तो ?

कोतवाल : (ज़ोर से) तो सबको पकड के अन्दर कर दूँगा। उनको भी, तुमको भी।

खान : दुहाई है, दुहाई है ! इंसाफ का खून हो गया !

मुन्नी : (निकट आते हुए) हवलदार साहब, सच्ची, आप कितने अच्छे हो। आप मेरा दिल, मेरी जान लौटाने मे मेरी सहायता कीजिए न।

हवलदार : (पीछे हटते हुए) अब मैं तुम्हें अपना दिल, अपनी जान तो देने से रहा।

मुन्नी : मिल गया, मुझे मिल गया।

बेचैन : अमां दिल भी कोई ऐसी-वैसी वस्तु है कि एक ने उठा के सडक पर फेंक दी, दूसरे ने उठा ली।

खान : कमेटी वालो ने !

अनाप : (गाकर) कहते हैं न देंगे हम दिल अगर पड़ा पाया। अजी, दिल कहाँ कि गुम कीजिए हमने मुद्दआ पाया।

हवलदार : अरे-अरे ! यह लोग यही दिल-विल लेने-देने लगे।

कोतवाल : देखना-देखना, कही लेने के देने न पड़ जायें।

बेचैन : यह औरत झूठ बोलती है। कोई इसका दिल-जिगर चुरा के नही ले गया। यह स्वयं दिल फेंकती फिरती है। मैं दावे से कह सकता हूँ, इसका दिल अब भी इसके पास है। मेरी बात का विश्वास न हो तो इसकी तलाशी ले लो। बुलवा के डॉक्टर को पुछवा लो।

कोतवाल : खामोश-खामोश ! ए औरत, सच-सच बता, बात क्या है ?

मुन्नी : हे हे हे हे ! (रोती है) हमदर्दी का जमाना ही नही है। हे भगवान, हम ऐसे दुखी-दिल लोग कहाँ जाएँ ? उठा ले हमें, उठा ले।

खान : उठा लेगा, उठा लेगा। जल्दी क्यों मचाती हो। उसे और भी बहुत सारे काम हैं। उठा लेगा तुम्हें भी।

मुन्नी : उठाए तुम्हें, तुम्हारे सगे वालों को। जा, नही मरती मैं।

बेचैन : हजूर, आपने गौर किया। मिस मुन्नीबाई कह रही थी

हम दुखी-दिल ! इससे भी एक बार फिर साबित होता है कि इसका दिल अभी भी इसके पास है।

खान : (आहिस्ता से) मुझे तो लगता है इसने सरकार को अपना दिल रिश्वत मे दे दिया है।

अनाप : दिया नही है, तो कम-से-कम देने की कोशिश जरूर की है।

बेचैन : हां-हां, माई-बाप, अपराधी और कोई नही है। अपराधी यह स्वयं है।

खान : यहां सभी अपराधी है। सभी कसूरवार है। सभी मुजरिम है। (सब चिल्लाते है।)

हवलदार : यह···यह क्या कह रहे हो तुम ? यह क्या कर रहे हो तुम सब ?

अनाप : हत्या ! हत्या कर रहा है। खून कर रहा है। क़त्ल कर रहा है। कैरेक्टर का। बिलकुल उसी तरह। हत्यारा और कोई नही है हजूर—यही है, यही है।

[सब आपस मे गुत्थमगुत्था होते हैं।]

बेचैन : तुम क्यों हल्ला कर रहे हो ? क्यों हंगामा खड़ा कर रहे हो ? क्यो ? मै पूछता हूं क्यों शोर मचा-मचाकर दूसरो का सुख-चैन छीन रहे हो ? तुम भी लुटेरे हो।

कोतवाल : खामोश ! खामोश ! यह क्या हो रहा है ! अरे, तुम लोग फ़रियादी हो कि कसूरवार। एक तो नए-नए दोष, नए-नए जुर्म लेकर आये हो। हमारे काम को आसान करने की बजाय और उलझा रहे हो, मुश्किल बना रहे हो और ऊपर से वही कुछ कर रहे हो जो कुछ कह रहे हो कि दूसरे तुम्हारे साथ कर रहे है। कर दो अन्दर सबको, सबको पहले कर दो अन्दर हवालात के। किसी की एक न सुनो।

मुन्नी : है, है, है, ऐसे कैसे कर दोगे हवालात के अन्दर। तुम्हारे बाबा का राज है क्या !

खान : उलटा चोर कोतवाल को डांटे।

मुन्नी : चोर होगे तुम ! चोर होगा तुम्हारा···।

खान : हे मुन्नीजान। ज़बान को लगाम दो। नहीं तो, नहीं तो···।

मुन्नी : नही तो क्या ?

खान : नही तो मैं अपने मुंह को लगाम लगाता हूँ।

बेचैन : अरे मियाँ, इंसान हो, इंसानों की भाषा मे बात करो।

खान : कोई नही है इंसान यहाँ। सब हैवान हैं। सब जंगली हैं। सब जानवर है। सब उल्लू हैं। सब गधे हैं।

अनाप : अबे ओ गधे के बच्चे ! अबे ओ उल्लू के···।

खान : ज़बान सँभाल ज़बान। सँभाल नही तो, नही तो···।

अनाप : नही तो ?

खान : मैं सँभाल लूंगा।

अनाप : नालायक़ ! पाजी ! बेवकूफ ! निकम्मा ! नाअहुल ! नामाकूल !

बेचैन : यू फूल ! यू फूल !

अनाप : यही हत्या है। यही खून है। यही एसेसीनेशन है। कैरेक्टर एसेसीनेशन।

बेचैन : पर पहल तुम कर रहे हो।

कोतवाल : कर दो इसे अन्दर। इसे भी। इसे भी।

हवलदार : चलो अन्दर।

अनाप : मेरे जूते मेरे ही सिर !

बेचैन : जिसका जूता उसी का सिर ! (जोर-जोर से गाता है।)

हवलदार : अरे, चुप हो जाओ, खुदा के लिए चुप हो जाओ ! मैं पागल हो जाऊँगा !

बेचैन : पागल हो या प्रेमी हो। प्रेमी हो या कवि हो। सभी एक ही थैली के हैं।

कोतवाल . खामोश !

[सब चुप हो जाते है।]

बेचैन : उफ ! कितना सुनसान, कितना वीरान, कितना अनजान हो गया है हर एक पल ! हर एक साँस ! हर एक रंग ! ऐसे मे एक आवाज़, एक स्वर, एक साज की आवाज़

धड़कते हुए दिल का साथ देती है।

सभी : कहां है, कहां है ?

बेचैन : तुम्हारे सीने मे, तुम्हारे सीने में, तुम्हारे सीने मे।

कोतवाल : (कंधे पर हाथ रखकर) हे भाई, तुम जो नाडू खां के साले बने बैठे हो हाथ पर हाथ धरे।

खान : बने बैठे हो ! अरे मियां, बताया न, मैं उन्ही का बेटा हूँ। वह जो आप बता रहे हो।

हवलदार : तो घर जाओ भाई। यहां बैठे-बैठे क्या कर रहे हो ?

खान : तमाशबीनी। जुर्म है क्या ?

कोतवाल : जुर्म तो नही है पर झक ही मारनी है तो कही और जा के मारो।

खान : लो, और लो भई। यह आजाद देश अपनी चारों-चित जागीर है।

कोतवाल : माफ कीजिये। थाना आपके बाबा का घर नही है।

खान : बाबा का तो नहीं है, मैं मानता हूँ। पर मामा का तो है।

कोतवाल : अब कहना क्या चाहते हो ?

खान : असल मे मैं इनकी सिफ़ारिश के लिए आया था।

कोतवाल : निकल जाओ अभी इसी वक्त ! निकल जाओ यहां से मैंने कहा। (धक्का देता है।)

खान : (जाते हुए) लो और लो। भई, धक्के क्यो दिये जा रहे हो ! जा रहा हूँ। कैसे-कैसे लोग भरती हो गए। पहले तो इतने आदर-मान से सर-आँखों पर बिठाया और सिफारिश का नाम लिया तो धक्के मार के धकेल दिया।

कोतवाल : सिफारिश की कोई गुंजाइश नहीं है हमारे यहां। समझे ! अहमक कहीं का ! मैंने समझा कोई केस दर्ज कराने आया है।

खान : मैं मामाजी से कहलवाके तुम्हारी बदली करवा दूंगा। काले पानी भिजवा दूंगा। टिम्बकटू न पहुँचवा के दम लूँ तो खानजादा ढाढ़ू खान वल्द खान बहादुर बाडू खान सालारे जंग जनाब नाडू खान नाम नहीं।

कोतवाल : अरे जा-जा ! बड़े देखे तेरे जैसे सिफारिशी टट्टू।

मुन्नी : टट्टू पर लट्टू हुए जा रहे हो साहब बहादुर। गरीबों की कौन सुनेगा ?

कोतवाल . सुन ली। बहुत सुन ली। कोई केस नहीं बनता। सब-के-सब मामले ख़ारिज करो।

हवलदार : अब इनको अन्दर करूँ कि बाहर ?

कोतवाल : बाहर, समझे। बिलकुल बाहर। चले जाओ कोतवाली से कोसों दूर, सब-के-सब। समझे। दफा हो जाओ।

[डंडा घुमाता है।]

बेचैन : तो हम कब लौट के आएँ ?

कोतवाल : अभी कोई दफा नहीं लगती तुम्हारे ऊपर।

मुन्नी . तो बताइए, आप ही बताइए न। हम क्या करें ?

कोतवाल : मैं कुछ नहीं जानता।

खान : लो, यह भी कोई पूछने की बात है।

अनाथ : तो-तुम ही कह दो न, बड़े बनते फिरते हो नाडू खाँ के साले के साहबजादे।

खान : वह तो मैं हूँ, और रहूँगा भी। यह कोई इल्जाम नहीं है। मेरी मानो, भाई लोगो। जाओ, कुछ ऐसा करो जिससे मौजूदा कानून जोश मे आए।

बेचैन : या फिर हम जोश में आएँ।

खान : यह मैं नहीं जानता। जोश मे आओ। जलाल मे आओ। आओ सही। आगे आओ ताकि तुम्हारे साथ इन्साफ तो हो सके।

हवलदार : जाओ, भाई, अपने-अपने घर जाओ। दिन बरबाद कर दिया।

कोतवाल : कैसी कार्रवाई रही आज ? कुछ काम हुआ भी और नहीं भी। चार्ट मे क्या दिखायेंगे ?

हवलदार : अमनो अमान रहा।

बेचैन : अमनो अमान है यह ! (चिल्लाकर) हम ऊपर जाएँगे।

हमारी सुनवाई नहीं हुई ।

कोतवाल : जाओ-जाओ । मेरी तरफ से आज के जाते हुए अभी चले जाओ । बिलकुल ऊपर चले जाओ ।

मुन्नी : बिलकुल...!

कोतवाल : हाँ-हाँ, बिलकुल ।

अनाथ : कानून हमें हाथों में नहीं मिला तो हम कानून को हाथों में ले लेंगे ।

कोतवाल : यह भी कर देखो ।

खान : देखते क्या हो ।

वेधन : बोल री मुन्नीबाई । टें-टें करके तेरा पेट नहीं भरा यहाँ जो यहाँ चली आई ।

मुन्नी : सत्यानाश हो तुझसे पड़ोसी का । गज भर लम्बी जबान मिल गया वाही-तबाही बकने ! (चिढ़ाकर) 'वह मेरी आशा मेरे सपनों में आता है । वह मेरी पड़ोसन मुझे गा-गाकर जगाती है ।' तू ही रह गया न शहजादा परियों के देस का । हूँ !

[मुन्नी और वेधन लड़ते हैं ।]

वेधन : मैं-मैं···तेरी चोटी उखाड़ के तेरे हाथ में थमा दूँगा ।

मुन्नी : हाथापाई पर उतर आया मरदूद । मैं तुझे अभी याद दिलाती हूँ छठी का दूध । ले···ले । (काटती है ।)

वेधन : हाय ! काट लिया चुड़ैल ने ! इसने जोर से काट लिया । हाय, मैं मर गया ।

कोतवाल : ठहरो-ठहरो ! रुक जाओ, रुक जाओ !

अनाथ : अबे गधे, तूने क्यों हाथ उठाया औरत जात पर । तेरी यह मजाल ! आ, मैं तुझे बताऊँ । ले और ले···यह···यह··· (मारता है ।)

हवलदार : अरे, तुम भी लड़ने लगे । रुक जाओ । मैं कहता हूँ··· ।

खान : नहीं देख सकता, मैं अब और तमाशा नहीं देख सकता । कूदना होगा । मुझे भी इस मैदाने जंग में कूदना होगा ।

(लड़ने को लपकता है।)

बेचैन : क्या अखाड़ा है! क्या दंगल है! क्या कमाल है, फ्री फॉर आल है! हाय मेरा हाय!

खान : लो, वह मुस्तबे भी आ गए। आ जाओ भाई लोगो। अगर तुम्हें भी साबित करना है कि तुम मुजरिम नहीं हो तो जुट जाओ।

कोतवाल : (कड़ककर) रुक जाओ। मैं कहता हूँ, जो जहाँ-जहाँ है, जैसे है, वहीं जम जाए।

हवलदार : दफा हो जाओ यहाँ से।

कोतवाल : दफा लगाओ उलटे। देखते नहीं, क्या हो गया।

हवलदार . दगा हो गया। फसाद हो गया। मार-पिटाई! झगड़ा! ···अब···अब···।

कोतवाल : दफा तीन सौ तेईस। अन्देशा-ए-अमन खतरा। दफ़ा एक सौ सात के साथ एक सौ चवालीस। यही जुर्म बनता है।

हवलदार : बन गया काम, बन गया। आ जाओ भई, अच्छे बच्चों की तरह से आ जाओ अन्दर। (सबको धकेलकर हवालात की ओर ले जाता है।)

मुन्नी : (जाते हुए) जो बाहर है उनका क्या होगा?

खान : मेरे मामे को मतला कर देना।

बेचैन : मैं कह रहा था···।

अनाप : (गाकर) तमाशा खुद न बन जाना तमाशा देखने वालो।

[परदा धीरे-धीरे गिरता है।]

पात्र

•

डॉक्टर

मानव

मोना

अजनबी

माँ

मैमूना

पहला सीन

[मानव का घर। कलात्मक ढंग से, सुरुचि से सजा हुआ है। डॉक्टर मानव से बात कर रहा है।]

डॉक्टर : हूँ···आप किसी औरत के साथ सोये हैं ?

मानव : जी ! जी यह आ···आप क्या कह रहे हैं ?

डॉक्टर : बिलकुल वही जो आपने सुना। मेरा मतलब है किसी ऐसी-वैसी औरत के साथ···।

मानव : डॉक्टर साहब, मैं एक शरीफ शादी-शुदा आदमी हूँ, आप सोच सकते है, मैं···।

डॉक्टर : मैंने कब कहा, यह आपका खून है जो आपके ख़िलाफ़ गवाही दे रहा है। पाज़िटिव एम० टी० एस०। देखिए यह बी० डी० आर० एल० रिपोर्ट।

मानव : इम्पासिबल। ओह, नो-नो-नो ! यह हो नही सकता··· यह हो नहीं सकता···यह रिपोर्ट जरूर किसी दूसरी रिपोर्ट से मिल गई है···डॉक्टर, यह हो नही सकता।

डॉक्टर : यह हो गया है मानव बाबू, और जब तक आप कोआपरेट नही करेंगे और अपने डॉक्टर, अपने हमदर्द को भी, केस-हिस्ट्री नही बताएँगे, तो इसकी रोक-थाम के लिए अगला कदम उठाना बहुत मुश्किल होगा।

मानव : मैं कोई सूफी-सन्त नहीं हूँ डॉक्टर साहब, और न ही मैं बात-बात पर झूठ बोलता हूँ, पर मेरा भगवान जानता है मैंने कोई ऐसा काम नही किया जिससे किसी ऐसी भयानक बीमारी की बू तक भी आए। मैं आपको यकीन दिलाता हूँ कि शादी के बाद मैं किसी पराई औरत के पीछे नहीं भागा।

डॉक्टर : शादी से पहले ?

मानव : नहीं हूँ। भई मैं ऐसा आदमी नहीं हूँ···डॉक्टर साहब,

नही भागता मैं औरत के पीछे···आप समझते क्यों नही।

डॉक्टर : सोच मे डाल दिया मुझे भी आपने। हो सकता है, कोई आपके पीछे भागती हो।

मानव . अब क्या होगा···मजाक नही, डॉक्टर साहब ! बताइए न प्लीज, अब क्या होगा ?

डॉक्टर : इलाज। लेकिन इस अजीब कहानी का कोई सिर-पैर तो हाथ लगे पहले। हाँ, तो यह बताइए आपकी बीवी···।

मानव : मैं जानता हूँ···मैं जानता हूँ···आप मुझसे कोई ऐसा तकलीफदेह सवाल पूछने जा रहे हैं जिसके जवाब के लिए न तो मैं जहनी तौर पर तैयार हूँ और न ही सोच सकता हूँ !

डॉक्टर : कुनीन के कडवे घूंट की तरह, किसी हकीम हाज़िक के नश्तर की तरह, ऐक्वा पंक्चर की चीनी सुइयो की तरह, यह दर्द दवा बनेगा आपके लिए !

मानव : जी···।

डॉक्टर : हो सकता है आपकी बीवी को···।

मानव : डॉक्टर साहब !

डॉक्टर : जज्बाती होने की गुंजाइश नहीं है इसमें। यह भी एक हादसा है जिसका शिकार हममें से कोई भी हो सकता है।

मानव : मोना की परवरिश एक ऐसे गैरतमन्द खानदान मे हुई है जहाँ पार्टीशन से पहले औरतें पर्दे में रहती थी। पठानो के देश मे परवरिश पायी हुई इन रानियों के रुखसारो को सूरज की किरणें तक भी, कहते है, नही चूम पाती थी।

डॉक्टर : अच्छे थे वे दिन, बहुत अच्छे थे, पर वे जमाने तो कब के बदल गए।

मानव : पर नही बदले हम पुराने लोगो के तौर-तरीके, नहीं बदले, डॉक्टर साहब ! आजकल के दौर मे मानेंगे आप, शादी से पहले मैंने मोना को नही देखा था। बस एक इकरार था बुजुर्गों मे, वही परवान चढ़ा।

डॉक्टर : शादी के बाद क्या हुआ ?

मानव : वही, वही वालिहाना इश्क जो एक अल्हड़ लड़की और एक जिम्मेदार मर्द में होता है।

डॉक्टर : उसके माहौल ने उसके जज्बात को ठण्डा कर दिया होगा ?

मानव : नहीं, बल्कि वे एक आतिश-फशाँ पहाड़ की मानिन्द ऐसे उभरे कि सँभालना मुश्किल हो गया।

डॉक्टर : हो सकता है वह लावा अपनी लपेट मे कोई ऐसी जगह भी जाने-अनजाने मे ले आया हो जहाँ गन्दगी के ढेर हों।

मानव : जी चाहता है किसी से कुछ और कहे-सुने बिना यहाँ से भाग जाऊँ।

डॉक्टर : पर ज़िन्दगी की ज़िम्मेदारियो से भागकर कहाँ जाओगे मानव, मेरे दोस्त ! मैं जानता हूँ तुमको बहुत गहरी चोट लगी है, पर मत भूलो मैं तो तुम्हारे इलाज के वसीले ढूँढ रहा हूँ।

मानव : क्या करूँ मैं ? कहाँ जाऊँ ?

डॉक्टर : जाओ, आराम करो। इस वक्त तुम बहुत घबरा गए हो, सोच-विचार, सलाह-मशविरे के बाद लौट के आना मेरे पास, तुम्हारा इलाज करना होगा मुझे।

मानव : अच्छा जा रहा हूँ। यह रिपोर्ट रख लूँ ?

डॉक्टर : चाहो तो···लो। एक नेक सलाह दूँ···ऐसी ज़हनी हालत में कुछ ऐसा न कर बैठना जिससे तुम्हारी मुसीबत कम होने की बजाय ज्यादा हो जाये।

मानव : जी, बहुत-बहुत शुक्रिया। उफ ! इतना बड़ा बोझ, इतनी मुख्तसिर-सी रिपोर्ट ! मेरे सारे बदन में कँपकँपी-सी आ रही है। खून खौल रहा है मेरा, हलक सूख गया एकदम, डॉक्टर साहब···!

डॉक्टर : लो, पानी पी लो, साथ में यह सेडेटिव भी।

मानव : (पीता है) डॉक्टर साहब, कोई और वजह भी हो सकती है या सिर्फ सेक्स ऐक्ट ही से होता है यह ?

डॉक्टर : हो भी सकती है···पर तुम्हारे जैसे तन्दुरुस्त आदमी की

नही भागता मैं औरत के पीछे···आप समझते क्यो नही।

डॉक्टर : सोच मे डाल दिया मुझे भी आपने। हो सकता है, कोई आपके पीछे भागती हो।

मानव : अब क्या होगा···मज़ाक नही, डॉक्टर साहब ! बताइए न प्लीज़, अब क्या होगा ?

डॉक्टर : इलाज। लेकिन इस अजीब कहानी का कोई सिर-पैर तो हाथ लगे पहले। हाँ, तो यह बताइए आपकी बीवी···।

मानव : मैं जानता हूँ···मैं जानता हूँ···आप मुझसे कोई ऐसा तक-लीफदेह सवाल पूछने जा रहे है जिसके जवाब के लिए न तो मैं ज़हनी तौर पर तैयार हूँ और न ही सोच सकता हूँ !

डॉक्टर : कुनीन के कड़वे घूंट की तरह, किसी हकीम हाज़िक के नश्तर की तरह, ऐक्वा पंक्चर की चीनी सुइयों की तरह, यह दर्द दवा बनेगा आपके लिए !

मानव : जी···।

डॉक्टर : हो सकता है आपकी बीवी को···।

मानव : डॉक्टर साहब !

डॉक्टर : जज्बाती होने की गुंजाइश नही है इसमें। यह भी एक हादसा है जिसका शिकार हममे से कोई भी हो सकता है।

मानव : मोना की परवरिश एक ऐसे ग़ैरतमन्द खानदान में हुई है जहाँ पार्टीशन से पहले औरतें पर्दे मे रहती थी। पठानों के देश मे परवरिश पायी हुई इन रानियों के रुखसारो को सूरज की किरणें तक भी, कहते है, नही चूम पाती थी।

डॉक्टर : अच्छे थे वे दिन, बहुत अच्छे थे, पर वे जमाने तो कब के बदल गए।

मानव : पर नही बदले हम पुराने लोगों के तौर-तरीके, नही बदले, डॉक्टर साहब ! आजकल के दौर में मानेंगे आप, शादी से पहले मैंने मोना को नही देखा था। बस एक इकरार था बुजुर्गो मे, वही परवान चढ़ा।

डॉक्टर : शादी के बाद क्या हुआ ?

मानव : वही, वही वालिहाना इश्क जो एक अल्हड लडकी और एक जिम्मेदार मर्द में होता है।

डॉक्टर : उसके माहौल ने उसके जज्बात को ठण्डा कर दिया होगा ?

मानव : नही, बल्कि वे एक आतिश-फ़शाँ पहाड की मानिन्द ऐसे उभरे कि सँभालना मुश्किल हो गया।

डॉक्टर : हो सकता है वह लावा अपनी लपेट मे कोई ऐसी जगह भी जाने-अनजाने मे ले आया हो जहाँ गन्दगी के ढेर हो।

मानव : जी चाहता है किसी से कुछ और कहे-सुने बिना यहाँ से भाग जाऊँ।

डॉक्टर : पर जिन्दगी की जिम्मेदारियो से भागकर कहाँ जाओगे मानव, मेरे दोस्त ! मैं जानता हूँ तुमको बहुत गहरी चोट लगी है, पर मत भूलो मैं तो तुम्हारे इलाज के वसीले ढूँढ रहा हूँ।

मानव : क्या करूँ मैं ? कहाँ जाऊँ ?

डॉक्टर : जाओ, आराम करो। इस वक्त तुम बहुत घबरा गए हो, सोच-विचार, सलाह-मशविरे के बाद लौट के आना मेरे पास, तुम्हारा इलाज करना होगा मुझे।

मानव : अच्छा जा रहा हूँ। यह रिपोर्ट रख लूँ ?

डॉक्टर : चाहो तो···लो। एक नेक सलाह दूँ···ऐसी जहनी हालत में कुछ ऐसा न कर बैठना जिसमे तुम्हारी मुसीबत कम होने की बजाय ज्यादा हो जाये।

मानव : जी, बहुत-बहुत शुक्रिया। उफ ! इतना बड़ा बोझ, इतनी मुख्तसिर-सी रिपोर्ट ! मेरे सारे बदन में कँपकँपी-सी आ रही है। खून खौल रहा है मेरा, हलक सूख गया एकदम, डॉक्टर साहब···!

डॉक्टर : लो, पानी पी लो, साथ मे यह सेडेटिव भी।

मानव : (पीता है) डॉक्टर साहब, कोई और वजह भी हो सकती है या सिर्फ़ सेक्स ऐक्ट ही से होता है यह ?

डॉक्टर : हो भी सकती है···पर तुम्हारे जैसे तन्दुरुस्त आदमी की

क्या तमाशा है, यह क्या तमाशा है…।

मोना : (आते हुए) आदमी आरज़ू का लाशा है…ला-ला-ला-ला…
डार्लिंग, यह शेर कुछ जम नहीं रहा…लाशा क्या हुआ ?
फिर भी पहले मिसरे मे चलेगा…पूरा कर दो, प्लीज़ !

मानव : आदमी !

मोना : आदमी आरज़ू का लाशा है, ज़िन्दगी है कि…ज़िन्दगी है कि…।

मानव : इक तमाशा है ।

मोना : वाह ! ज़िन्दगी है कि इक तमाशा है…वाह, क्या गिरह बाँधी है।

मानव : मोना !

मोना : क्या हुआ ?

मानव : शायरी ज़िन्दगी से कितनी दूर है, मोना ! तल्ख हकीकतें दूध और शहद के दरिया नही…भूख और बीमारी भी हमारे नासूर है ।

मोना : यह कौन-सी फिलासफी ले बैठे । देखो रात का पहला पहर सितम्बर की पहली सर्द हवाओं का झोंका लेके आया है—इसका स्वागत नही करोगे…लाओ अपनी बाँसुरी और बजाओ यमन में वह धुन । इस मुरली मे सात छेद है, मेरे हृदय में लाखों…और नाचती हूँ मैं…।

मानव : अब और साज़ पर गा रे…।

मोना : बिलकुल यही, बिलकुल यही । कोई और गीत गाओ, कोई और धुन गुनगुनाओ। मानव, देखो ना, देखो ना, ज़िन्दगी कितनी तेज भागती है, नहीं तेज और बेतहाशा…बन गई बात बन गई…। भागती कितनी बेतहाशा है…ज़िन्दगी है कि इक तमाशा है…कितना खूबसूरत खयाल बँध गया, नहीं, निकाल दें ये आरज़ू के लाशे, ज़िन्दगी के कपबर्ड से…इस शेर से…।

मानव : ज़िन्दगी की इस तेज दौड़ मे कभी तुम्हारी साँस नहीं

जिस्मानी रेजिस्टेंस के लिए मैं समझाता हूँ किसी का तौलिया इस्तेमाल करने या फिर ऐसे किसी मरीज़ के साथ उठने-बैठने से असर नहीं होना चाहिए। खानदानी भी हो सकती है पर···।

मानव : हूँ ! तो बात आ-जा के उसी मर्कज़ पर लौटती है। यह कशमकश, यह शक, यह बगावत मेरे अपने खून की, यह बीमारी मुझे अपनी डार्लिंग डिस्डेमोना के लिए ऑथेलो न बना दे ? क्या है, यह सब क्या है ? ···यह बैठे-बिठाये क्यों बदलती जा रही है मेरी नन्ही-सी कायनात ? ···आसमान में सात रंग के सपने देखता हुआ निकला था मैं आज सुबह-सुबह···यह शाम होते-होते इतने सारे बादल एक साथ···।

डॉक्टर : पोस्त के फूलों-से नशई हो गये···।

मानव : नशा तो उतरेगा अभी, डॉक्टर साहब ! सारे सपने सो जायेंगे। जब···जब जाग जाऊँगा मैं।

डॉक्टर : शायर भी हो ?

मानव : शायरा का शौहर हूँ···हूँ··· (खड़ा होते हुए चकरा जाता है।)

डॉक्टर : सँभल के ज़रा···इजाज़त है··· (उठकर) अच्छा फ़ोन करना···वैसे मैं भी चक्कर लगाऊँगा।

[डॉक्टर का प्रस्थान।]

मानव : टू बी ऑर नॉट टू बी···दैट्स द क्वैश्चन···यह खूबसूरत कमरा, ये सोफे, सेट्टी, ये टेलीविज़न सेट, ये पेंटिंग्ज़। रास रचाते हुए भगवान कृष्ण। साक़ी को सँभालते हुए उमर ख़ैयाम और सबसे हसीन, सबसे दिलकश यह हनीमून की हमारी तसवीर···नारकण्डा के बर्फ़ज़ारों में चीनी चोटियों के आसपास···यह सब-कुछ स्वर्ग है या नरक···यह कराची का हलुआ···यह गुलनार का शर्बत···ये पिस्ते, ये बादाम··· ये काजू, ये किशमिश···यह···यह अमृत नहीं, ज़हर हैं··· यह कशमकश, यह बीमारी, यह औरत··· (ज़ोर से) यह

क्या तमाशा है, यह क्या तमाशा है···।

मोना : (आते हुए) आदमी आरज़ू का लाशा है···ला-ला-ला-ला··· डार्लिंग, यह शेर कुछ जम नहीं रहा···लाशा क्या हुआ ? फिर भी पहले मिसरे में चलेगा···पूरा कर दो, प्लीज़ !

मानव : आदमी !

मोना : आदमी आरज़ू का लाशा है, जिन्दगी है कि···ज़िन्दगी है कि···।

मानव : इक तमाशा है।

मोना : वाह ! ज़िन्दगी है कि इक तमाशा है···वाह, क्या गिरह बाँधी है।

मानव : मोना !

मोना : क्या हुआ ?

मानव : शायरी ज़िन्दगी से कितनी दूर है, मोना ! तल्ख हकीकतें दूध और शहद के दरिया नहीं···भूख और बीमारी भी हमारे नासूर हैं।

मोना : यह कौन-सी फिलासफी ले बैठे। देखो रात का पहला पहर सितम्बर की पहली सर्द हवाओं का झोंका लेके आया है— इसका स्वागत नहीं करोगे···लाओ अपनी बाँसुरी और बजाओ यमन में वह धुन। इस मुरली में सात छेद है, मेरे हृदय में लाखों···और नाचती हूँ मैं···।

मानव : अब और साज़ पर गा रे···।

मोना : बिलकुल यही, बिलकुल यही। कोई और गीत गाओ, कोई और धुन गुनगुनाओ। मानव, देखो ना, देखो ना, ज़िन्दगी कितनी तेज़ भागती है, नहीं तेज़ और बेतहाशा···बन गई बात बन गई···। भागती कितनी बेतहाशा है···ज़िन्दगी है कि इक तमाशा है···कितना खूबसूरत खयाल बँध गया, नहीं, निकाल दें ये आरज़ू के लाशे, ज़िन्दगी के कपबर्ड से···इस शेर से···।

मानव : ज़िन्दगी की इस तेज़ दौड़ में कभी तुम्हारी साँस नहीं

फूली ?

मोना : साथ-साथ भागने में साँस के उतार-चढाव बाँट नही लेता इंसान !

मानव . किसके साथ ?

मोना : हूँ !

मानव : चौक क्यो गई ? सवाल समझ मे नही आया क्या ?

मोना : साथ जिसका है उसी का है···क्यो कर रहे हो लड़ाई की बात···सॉरी बोलो···ये···ये···मुझे ऐसे क्यो देख रहे हो···क्या हो गया तुम्हे, मानव ! ···अरे···यह तुम्हारा चेहरा एकदम लाल···यह तुम्हारा जिस्म इतना गरम··· बीमार तो नही हो तुम ?

मानव : मैं तो समझता हूँ बीमार तुम भी हो !

मोना : यह बहकी-बहकी बातें तुम्हारे मुंह से मैंने सुनी नही हैं आज तक···शराब पी है तुमने ?

मानव : मैं एकदम होश मे हूँ ।

मोना : हो सकता है फिर यह बेखुदी हो···समझ लूं मै फिर कि यह बेखुदी है···बेखुदी···बेखुदी···बेखुदी का अजीब आलम है···आज सब-कुछ भुला दिया मैंने···हूँ···।

मानव : मुझे आज आसमान में एक ही रंग दिखाई दे रहा है ।

मोना : जानते हो, वह भी उसका अपना नहीं होता ।

मानव : अपने रग मे आज लगता है मोना, न आसमान है, न जमीन है, न मैं हूँ, न तुम हो···।

मोना : अगर यह शायरी है तो बहुत खूबसूरत है, अगर इसमें कोई तन्ज़ है तो अपने-आप मे से बाहर निकलकर आओ और कहो जो कहना चाहते हो । मत बुझाओ ये पहेलियाँ मुझमे ! कहो जो कहना है ।

मानव : तुमने पूजा कर ली ?

मोना : यह ऑथेलो कब से बन गए तुम माई लार्ड···यैस डेस्डे-मोना हैथ सैंड हर प्रेयर्ज़, सो !

मानव : तुम्हारी सेहत कैसी है ?

मोना : अरे, मैं बिलकुल भली-चंगी हूँ···दिखाई नही दे रही क्या···वैसे आज मेरी तबीयत ठीक नहीं है ।

मानव : क्या हुआ ?

मोना : वही···जैसे भला जानते नही हो।

मानव : तुमने कभी इश्क किया है जिन्दगी मे ? (सिगरेट सुलगाता है।)

मोना : बिलकुल ! जिन्दगी ही से इश्क किया है। इश्क से इश्क किया है । इन लव विद् द फीलिंग ऑफ लव और—और तुमसे···अब यह मत सोचना कि तुम तीसरी जगह आते हो···।

मानव : तुम्हारे यहाँ किसी को कभी कोई लम्बी-चौड़ी तकलीफ, कोई भयानक बीमारी तुम्हारे खानदान में···।

मोना : टच वुड···तुम्हारे सिर पर हाथ लगा लूं ना···वैसे तो यहाँ भी···यहाँ भी (अपने सिर को छूकर) वुड ही वुड लगती है (हँसती है)···बीमारी भगवान न करे, कोई ऐसी-वैसी तो कभी नही रही···वैसे तो सुख-दुख शरीर के साथ बने हुए है।

मानव : हूँ···और कोई बात ।

मोना : पूछ तुम रहे हो···एक सिगरेट मुझे भी देना।

मानव : तुम कहाँ पीती हो ?

मोना : आज पीना चाहती हूँ ।

मानव : क्या ?

मोना : *कुछ भी···सिगरेट···शराब···जानते हो क्यों ? ताकि* यह बेखुदी बनी रहे और तुम्हारे इन बेहद सवालों का जवाब बराबर देती रहूँ।

मानव : मुझको गलत मत समझना, मोना ! आज मैं अपने-आप में नहीं हूँ । बहुत बीमार हूँ मैं ।

मोना : हाय, मैं मर गई···क्या है तुम्हे ?

मोना : साफ-साफ कहो···कह दो, मानव, कह दो, जो कहना चाहते हो।

मानव : सुनो, अपना तवाज़ुन खोए बिना सुनो, और कह दो कि यह गलत है।

मोना : सुन रही हूँ मैं।

मानव : सोई हो कभी किसी दूसरे के साथ तुम ?

मोना : (चीखकर) मानव···यह तुम कह रहे हो···यह तुम सोच भी सकते हो कि तुम्हारी मोना तुम्हारी बाँहों में आने के बाद किसी ग़ैर मर्द का तसव्वुर भी कर सकती है।

मानव : उससे पहले ?

मोना : पत्थर बना लिया है मैंने अपने-आपको···मारो—पहला पत्थर तुम मारोगे। मारो, तुम मेरे मर्द हो ना !

मानव : तो फिर क्या हुआ है···बताओ मोना, बताओ। तुम्हें तमाम देवताओं की कसम दिलाता हूँ···नाम लो उस हादसे का, उन हालात का, जिनका शिकार पहले शायद तुम बनी और अब मैं।

मोना : क्या हुआ···क्या हुआ तुम्हें ?

मानव : एक भयानक बीमारी···जो···जो मुझे मिली है तो ऐन मुमकिन है तुमसे।

मोना : बीमार तुम और मैं !

मानव : हूँ, देखो-देखो यह रिपोर्ट।

मोना : (देखती है) ओह !···ओह माई गॉड !···ओह, नो-नो-नो ! इम्पासिबल !···यह हो नहीं सकता मानव···यह हो नहीं सकता।

मानव : यह हुआ है···याद करो, कल, परसों, तरसों, हफ़्तों, महीनों, बरसों पहले जरूर ऐसा कुछ हुआ है···याद करो प्लीज़···।

मोना : यादों के धुँधलके मुझे हादसों में उलझाए चले जा रहे हैं, मानव !···सँभालो-सँभालो मुझे···(चीख मारती है।) उफ, कितना अँधेरा हो रहा है मेरी आँखों के सामने···

मानव : कुछ है जो शायद तुम्हें भी है।

मोना : कुछ नही है, न तुम्हें, न मुझे···आज तुम्हें कोई ट्रिप पर तो नही ले गया—लाल और पीले पोस्त वाले फूलों के बाग मे ?

मानव : ऐसा कुछ है भी और नहीं भी···हाँ तो यह बताओ··· प्लीज़, कभी कोई दूसरा मर्द तुम्हारी ज़िन्दगी मे आया ?

मोना : कितने मर्द हो तुम जो अपनी औरत से ऐसा सवाल पूछते हो···यह जानते हुए कि उसने तुम्हें अपना सब-कुछ दे दिया है !

मानव : पियोगी ? (शराब निकालता है।)

मोना : नहीं।

मानव : सिगरेट ?

मोना : दे दो। पी लेती शराब भी, पर तुमने मूड ही बिगाड़ दिया है।

मानव : पहले भी कभी पी है ?

[मोना सिगरेट सुलगाती है।]

मोना : पी नही कभी ऐसे, वैसे एक बार तजुर्बा किया था।

मानव : कहाँ ?

मोना : घर ही मे पापा के बचे-खुचे मज़ाक घूंट और अनबुझे सिगरेट के टुकडे—उनके पीछे मज़ाक-मज़ाक मे शर्त के लिए पीए थे पल-भर के लिए—पर कड़वे लगे···वह भी एक ज़माना हुआ जब।

मानव : और कोई तजुर्बा ?

मोना : नही बाबा, नहीं।

मानव : कोई हंगामा, कोई हादसा ?

मोना : क्यों किये जा रहे हो बेतुके सवाल पर सवाल, मानव ! क्या हो गया है ?

मानव : हादसा···ज़रूर हो गया है कोई हादसा···जाने-अनजाने मे, जिसका बिलकुल कुछ भी पता नही चल रहा।

मोना : साफ़-साफ कहो···कह दो, मानव, कह दो, जो कहना चाहते हो।

मानव : सुनो, अपना तवाजुन खोए बिना सुनो, और कह दो कि यह गलत है।

मोना : सुन रही हूँ मैं।

मानव : सोई हो कभी किसी दूसरे के साथ तुम ?

मोना : (चीखकर) मानव···यह तुम कह रहे हो···यह तुम सोच भी सकते हो कि तुम्हारी मोना तुम्हारी बाँहों मे आने के बाद किसी गैर मर्द का तसव्वुर भी कर सकती है।

मानव : उससे पहले ?

मोना : पत्थर बना लिया है मैंने अपने-आपको···मारो—पहला पत्थर तुम मारोगे। मारो, तुम मेरे मर्द हो ना !

मानव : तो फिर क्या हुआ है···बताओ मोना, बताओ। तुम्हें तमाम देवताओं की कसम दिलाता हूँ···नाम लो उस हादसे का, उन हालात का, जिनका शिकार पहले शायद तुम बनी और अब मैं।

मोना : क्या हुआ···क्या हुआ तुम्हें ?

मानव : एक भयानक बीमारी···जो···जो मुझे मिली है तो ऐन मुमकिन है तुमसे।

मोना : बीमार तुम और मैं !

मानव : हूँ, देखो-देखो यह रिपोर्ट।

मोना : (देखती है) ओह !···ओह माई गॉड !···ओह, नो-नो-नो ! इम्पासिबल !···यह हो नही सकता मानव···यह हो नही सकता।

मानव : यह हुआ है···याद करो, कल, परसों, तरसों, हफ्तों, महीनों, बरसों पहले जरूर ऐसा कुछ हुआ है···याद करो प्लीज···।

मोना : यादों के धुँधलके मुझे हादसों मे उलझाए चले जा रहे है, मानव !···सँभालो-सँभालो मुझे···(चीख मारती है।) उफ़, कितना अँधेरा हो रहा है मेरी आँखों के सामने···

रात हो गई। भयानक रात...।

मानव : रात, भयानक रात ! क्या हुआ था किसी ऐसी भयानक रात में ?

मोना : हादसा !

मानव : तुम्हारे हाथ-पैर ठंडे हो रहे हैं...ठहरो...हूँ...यह लो...यह गोली खा लो...लो, पानी भी। लो...हाँ तो फिर ?

मोना : ऐसा ही कुछ समाँ था...ऐसा ही कुछ माहौल था...ऐसी ही, बल्कि यही खूबसूरत चीज़ें थीं आसपास...मेरी शादी की तैयारियाँ हो रही थीं...ढाका देने गये हुए थे सब...घर में कोई नहीं था...मेरे सिवाय...मैं बैठी सपने सजा रही थी कि अचानक...।

मानव : अचानक...।

दूसरा सीन

[मोना के मायके का घर। वही फ़र्नीचर, वही तसवीरें आदि, पर बिखरी हुई। चारों ओर शादी की तैयारियों का सामान है। अचानक बिजली चली जाती है।]

मोना : (चौंककर) रोशनी को क्या हुआ ? अचानक यह अँधेरा कैसा...कौन है...कौन हो तुम ?...(चीख़ मारती है।)

अजनबी : ख़ामोश, एक अजनबी हूँ मैं, और जब तक हूँ यहाँ, एक आह भी तुम्हारे लबों तक नहीं आनी चाहिए—नहीं तो अगली साँस तुम्हारी आख़िरी साँस होगी।

मोना : नहीं-नहीं-नहीं !...तुम ऐसा नहीं कर सकते...नहीं-नहीं-नहीं, प्लीज़ !...मैं तुम्हारे हाथ जोड़ती हूँ, जानते हो कुछ ही दिनों में मेरी शादी होने वाली है।

अजनबी : देख रहा हूँ—कौन है और घर में इस वक्त ?

मोना : कोई नहीं...मेरे, तुम्हारे और भगवान के सिवाय और

कोई नहीं यहाँ।

अजनबी : भगवान···कौन भगवान ! कहाँ है वह ?

मोना : वह···वह ऊपर···बहुत ऊपर···वह-वह ऊपर वाला···।

अजनबी : ओह, वह ! बहुत दूर है वह तुम्हारा भगवान और तुम्हारे लाख बुलाने पर भी यहाँ आने वाला नहीं है।

मोना : चले जाओ, मैं कहती हूँ यहाँ से अभी और इसी वक्त चले जाओ···मैं तुम्हारे पाँव पड़ती हूँ, प्लीज़।

अजनबी : हाथ और पाँव के बीच···।

मोना : नहीं-नहीं, छोड़ दो···मुझे छोड़ दो, छोड़ दो मुझे···उफ ···ओह···नो-नो···ओह···ओह-ओह !

अजनबी : घबराओगी जितना उतना और हंगामा होगा, मैं जो कर रहा हूँ करने दो मुझे चुपचाप···एकदम और जल्दी मुझे जो लेना है वह लेना ही होगा···सीधी-सादी बात है, समझ में आयी ?

मोना : ले लो, ले लो, यह चाबियाँ हैं तिजोरी की। यह मेरे सुहाग का सामान है आसपास···लूटने पर तुले हुए हो तो लूट लो सब-कुछ; लेकिन मुझे नहीं, प्लीज़···!

अजनबी : मैं लूटना चाहता हूँ तो तुम्हें···बस तुम्हें···दो-चार-दस पल के लिए···तुम्हारे सुहाग का सारे-का-सारा सामान बस यों ही बना रहेगा।

मोना : नहीं-नहीं-नहीं ! मेरी अस्मत से अजीज कोई चीज़ नहीं है सुहाग की प्लीज़···आई बेग ऑफ यू···मत लाओ कोई ऐसी कमी मेरी जिन्दगी में जो कभी पूरी न हो सके···।

अजनबी : कुछ नहीं होता···ऐसे हादसों से कुछ नहीं होता। समझना कि एक जलजला आया था, झिंझोड़कर चला गया।

मोना : समझदार लगते हो···मैं तुम्हें जान नहीं सकती ?

अजनबी : अनजान ही रहना होगा मुझे। इस नकाब में—इन अँधेरों में; और समझ और नासमझी के बीच जो दरार है उसे और वहम किए बिना पार करना होगा अभी और इसी

वक्त ।

मोना : मेरे माँ-बाप आते होंगे···।

अजनवी : आने दो । देखती हो यह खंजर—पर इसका इस्तेमाल मैं जब तक नही करूँगा जब तक नागुज़ेर होगा ।

मोना : उफ । तुम्हारी आवाज के उतार-चढ़ाव, तुम्हारी साँसों का उभरता हुआ कोहरा, तुम्हारे जिस्म की एक मख़सूस बू जानी-पहचानी लगती है ।

अजनबी : होश-ओ-आगही की बात मत करो । कुछ नहीं जाना हुआ तुम्हारा, कुछ नही जानना होगा । बस एक आग के दरिया से गुजरना होगा । आग जो आग को बुझा देती है । पानी बना देती है ।

मोना : तुम्हारे अखलाक और तुम्हारे अन्दाज मे फ़र्क दिखाई देता है मुझे···मैं तुम्हे वास्ता देती हूँ उस अच्छाई का जो तुम्हारी बुराई से टक्कर ले रही है । इस वक्त बख्श दो मुझे···।

अजनबी : कुछ भी अच्छा या बुरा नही है । मैं और वक्त बरबाद नही करूँगा । इससे पहले कि यह अनजान-सा हादसा एक अल्मिया मे बदल जाये, आओ, अपनी मर्जी से आओ···।

मोना . नही-नही···हाय राम, नही···इससे बडा हादसा और क्या होगा ?···मुझे कुछ हो जायेगा ।

अजनवी : कुछ नही होगा । कुछ नही होगा । इस लम्हे का लुत्फ लो···आओ नही तो···।

मोना : नही तो···!

अजनवी : जबर्दस्ती तो मैं कर के रहूँगा···जानती तो हो···व्हेन यू आर बीइंग रेप्ड···इट्स बैस्ट टु रिलैक्स एण्ड एज वैल एन्जॉय इट व्हैन यू कांट हैल्प ।

मोना : नही-नही-नही···मैं चिल्लाऊँगी···मैं जान से चली जाऊँगी लेकिन···।

अजनवी : ख़ामोश ! (थप्पड मारता है) ऐसे नही मानोगी, और लो, लो, लो, आओ, आओ···आ जाओ तुम मेरी जान !

मोना : नहीं-नही, ओह माँ···ओह माई गॉड !···ओह !···ओह नो-नो-नो···उफ़ओहो···हा-हा-हा···अँधेरा···!

तीसरा सीन

माँ : (आती हुई) अँधेर साईं दा—सुखी साँदी वत्ती बुझाए बैठी है। रोशनी क्यों नही करती ?

मोना : (सुबककर) रोशनी चली गई माँ।

माँ : पागल कही की···अब इन दिनों भी ऐसे मुँह फुलाकर बैठेगी तो हो ली शादी।

मोना : शादी ! नहीं, माँ नही। (सिसकती है) कुछ नहीं होगा, अब कुछ भी नहीं होगा।

माँ : हाय माँ···मोना, तेरा यह हाल···क्या हो गया ?

मोना : हादसा ! माँ···मत पूछ मुझसे···मत पूछ···।

माँ : कौन था वह ?···कहाँ गया ?

मोना : नही जानती मैं···कुछ भी नही जानती।

माँ : ठहर, पानी लाती हूँ तेरे लिए···उठ, बता मुझे···हिम्मत करके कपड़े बदल। बाल बना···तेरे पापा और बाकी लोग आ रहे है पीछे-पीछे।

मोना : बन्द कर दो दरवाजे और जहर दे दो मुझे माँ···इस हालत में मैं जिन्दा नही रह सकती···मैं मुँह नही दिखा सकती किसी को···नही दिखा सकती।

माँ : हिम्मत से काम लो···पठान की बेटी हो···क्या हो गया ?

मोना : बहुत-कुछ हो गया, माँ ! बहुत-कुछ हो गया।

माँ : चोर था ?

मोना : लुटेरा था। लूट ले गया मुझे अँधेरे में।

माँ : और···

मोना : और क्या रह गया लूटने को ?

मां : हूं, और सब तो ज्यों-का-त्यों लगता है···अजीब अनहोनी हुई।

मोना : अब क्या होगा ?

मां : सब-कुछ होगा···घबराओ नहीं, पुलिस के पास जाएँगे तेरे पापाजी।

मोना : पापाजी को मत बताना···मैं नहीं मुंह दिखा सकती, उन्हें कभी भी···कभी भी नहीं !

मां : फिर और कौन है हमदर्द तुम्हारा ?

मोना : मां, मेरा गला घोंट दो।

मां : शुभ-शुभ बोल बेटी···देख, तेरा शगुन देकर आये हैं···जा, जाके मुंह-हाथ धो। (मोना जाती है।)

मां : मैं सामान समेटती हूं···सोचती हूं···सोचती हूं बिटिया (भर्राई हुई आवाज़ में) हे हनुमान, यह क्या घटना घटी ···इतना बड़ा ज़ुल्म इस मासूम पर। और वह भी इस वक्त···क्या होगा···अब क्या होगा ?

मैमूना : (आकर) क्या हो गया, मौसी ?

मां : अरे मैमू तू···ही···आहिस्ता बिटिया, किवाड़ लगा दे। समझ में नहीं आता तुम्हें बताऊँ या न···।

मैमूना : है कोई राज़दां मोना का मुझसे बढ़कर···कहां है वह कमबख्त, उसी से पूछती हूं।

मां : मैमू ! मैमू ! बिटिया, मत जा अन्दर···बैठ मेरे पास। बताती हूँ—

मैमूना : ऐसा भी क्या मौसी मां—साफ छुपते भी नहीं, सामने आते भी नहीं, खूब पर्दा है कि···।

मां : मज़ाक मत कर, बात कर ज़रा अपनी मोना से, आती ही होगी···घबरा गई है बहुत।

मैमूना : कौन काफ़िर मज़ाक कर रहा है मौसी, आने तो दे मेरी मोनालीसा को !

मां : सँभल के बेटा, सँभल के बोलना···आती हूँ मैं अभी। तुम

से करेगी दिल की बात··· (माँ चली जाती है।)

मैमूना : अब जिगर थाम के बैठो मेरी बारी आई···तो आ ए मेरी महारानी मोनालीसा और बता कि क्या राज़ है तेरी उस मुसकान का जिसे आज तक दुनिया-भर के मुफक्किर, फलसफी और अदीब नही पहचान सके। यह मुसकान है कि हीजान, छुपाए हुए है कोई तूफान या किसी भारी पाँव की आहट।

मोना : बन्द करो यह बकवास। पाँव भारी हों किसी दुश्मन के··· यह ज़मीन फट जाए, यह आसमान पानी-पानी हो जाए और सदा-सदा के लिए समेट ले तुम्हारी मोनालीसा की लाश को अपने आग़ोश में···।

मैमूना : कौन ला रहा है ज़बान पर ये काफिर अल्फाज़···यक़ीनन यह तुम नही हो मोना !

मोना : हाँ-हाँ, मैं मैं नही मैमू···आज मर गई वह तुम्हारी मोना। मर गई कब की।

मैमूना : तो यह हम फिर क्या देख रहे है ?

मोना : एक लुटी हुई लाश।

मैमूना : पहेलियाँ न बुझाओ मोना आपा···बताओ न !

मोना : देखो, गौर से देखो···ये मेरे बिखरे-बिखरे बाल···ये खराशें मेरे सारे जिस्म पर···ये मुसे हुए कपड़े···ये मेरे उखड़े हुए साँस।

मैमूना : हाय अल्ला ! नही, यह नही हो सकता···यह नही हो सकता !

मोना : हो गया, यह भी हो गया।

मैमूना : अब क्या होगा ?

मोना : मैं कुछ नही जानती, मैं कुछ नही जानती।

मैमूना : बहादुर बनो, मोना। पठान की बेटी हो, आखिर कौन था वह ?

मोना : कह नही सकती। नौजवान था लम्बा-चौड़ा···लम्बे-लम्बे

बाल थे उसके'''चेहरे पर नक़ाब'''पहचान नहीं पाई। आवाज़ कुछ जानी-पहचानी-सी लगी। उसके जिस्म के पसीने से एक मखमूस-सी महक बस गई है मेरी नस-नस मे।

मैंमूना : देखूँ'''हूँ'''कहीं वह तो नहीं था, दीवानों का बेटा जो तुम्हारे हाथ का शैदाई था कभी'''जाजबीयत थी उसकी आवाज़ मे ?

मोना : कह नहीं सकती। वह जानता था वह क्या कर रहा है। वह कोई आम लुटेरा नहीं था मैंमूना'''उसने इतनी सारी क़ीमती चीज़ों में से किसी और को नहीं छुआ।

मैंमूना : और क्या था उसमें ?

मोना : होश और शऊर'''शायरी और जब्र।—बेबाक, बेसाख्ता लूट लेने का अज़्म।

मैंमूना : क्या किया उसने ?

मोना : वही जो किया करते है बेशर्म और बेग़ैरत हवस के मारे हुए मर्द औरतों मे'''।

मैंमूना : तुम्हारी शमूलियत थी ?

मोना : क्या बात करती हो, सोच सकती हो ऐसा ?

मैंमूना : इन्तक़ाम था कोई ज़ाती या ख़ानदानी ?

मोना : कह नहीं सकती।

मैंमूना : यह तो नहीं था कहीं जिससे तुम्हारी बात चल रही थी कभी ?

मोना : नहीं जानती, मैं कुछ भी नहीं जानती। जब तक होश था, दहशत रही। फिर होश आया तो जा चुका था वह।

मैंमूना : देखो मोना, जो हो चुका सो तो हो चुका। सोचने या रोने-धोने से वक़्त को मुड़वाँ को वापस नहीं ला सकती तुम। बेहतर यही होगा कि इसको एक बुरे ख़्वाब की तरह भूल जाओ।

मोना : क्या बात करती हो ! अभी पापा को पता चलेगा''' तक ख़बर जाएगी। [illegible] को मालूम ह [illegible]

और मौत के बीच बहुत-से मरहले हैं अभी, मैंमूना !

मैंमूना : तुम्हारे लब खुलेंगे न जभी तो !

मोना : मेरे जिस्म में, मेरी रूह में समाये रहे यह बीज गुनाह के, तो और बुरा होगा। नहीं बर्दाश्त कर सकूँगी और फिर··· फिर क्या मुँह लेकर जाऊँगी यह गलीज़ जिस्म अपने होने वाले मर्द के रूबरू···!

मैंमूना : मौसी माँ को मैं समझा दूँगी। ऐसे करो, इस हादसे को अपने अन्दर ही दफन रहने दो। महीना-पन्द्रह दिन और देख लो। कुछ नहीं हुआ तो कुछ नहीं होगा।

मोना : मर जाऊँगी मैं ऐसे भी और वैसे भी।

मैंमूना : अब कुछ तो कम्प्रोमाइज़ करना होगा हालात से। कुछ तो कुर्बानी करनी ही होगी। मोना, बताओगी अपने होने वाले शौहर को यह बात जो तुम्हारे बस की बात नहीं थी, तो दुख नहीं होगा उसे ? और फिर सोचा जाए तो शादी के दायरे से बाहर ताल्लुक जायज या नाजायज पहले या बाद में कोई ऐसी अनसुनी या अनहोनी बात भी नहीं है।

मोना : ज़ख्मों पर नमक छिड़क रही हो, मैंमू !

मैंमूना : मरहम है, मोना। मत लाओ हर्फ मेरी वफा पर। जानी-पहचानी राह दिखा रही हूँ। अगले रोज औरत के ताज़ा-तरीन शुमारे में ऐसे ही एक दुखियारा सवाल का जवाब दिया हुआ था कि नई जिन्दगी शुरू करते वक्त पुराने *हादसों को भुलाना ही बेहतर है और फिर 'टैंस' नहीं पढ़ा* तुमने। मर्द मुआफ नहीं करते। औरत कर देती है। हो सकता है, तुम्हारा शौहर भी दूसरे मर्दों से मुखतलिफ न हो। मर्द की, मेरा मतलब है, मुजक्कर की फितरत ही कुदरत ने ऐसी बनाई है कि उसे एक पर क़नाअत नहीं, *लेकिन औरत अजल से ही आदम की रही है आमतौर पर।*

मोना : मत दो मुझे यह सरमन। यह वाज, यह ज्ञान। मेरी समझ में कुछ नहीं आ रहा। कुछ भी नहीं।

मैमूना : हस्सास हो, शायरा हो न। अब आराम कर लो। सोफते मे सोचना। समझ मे आ जाएगा।

मां : (आकर) यह गर्म-गर्म दूध पी ले। छुआरे और बादाम का तेल डाल के लाई हूँ। हां, तो क्या बात हुई बहनों मे? हाय राम, क्या अँधेर हो गया बैठे-बिठाये, अब!

मैमूना : बात हो गई, मौसी मां। अब यही बेहतर है कि बात न की जाये एक भी और इसके बारे में। मोना के अब्बा-मियां को जानती तो हो। नाखून से गला दबा देंगे। आस-पडोस मे गोली चल जाएगी। लम्बी-लम्बी जबानें अलग जीने नही देंगी उनको जो बच जायेंगे। अब तो आने वाले मुकद्दस मौके को आने ही दो ज्यों-का-त्यों।

मां : चश्म-बद्दूर, कितनी अकल वाली लड़की है। पर कुछ और हो गया तो।

मैमूना : अव्वल तो इन्शाअल्ला कुछ नही होगा। खुदा-न-ख्वास्ता अगर एक फीसदी हुआ भी तो हम है, सँभाल लेंगे। अल्ला वाली है सबका, मौसी मां। उमी पर तवक्कल रखो।

मां : गारत करे उस मरदूद को जिसने इतना बड़ा जुल्म किया।

मैमूना : भूल भी जा मौसी मां अब। समझ ले कि कुछ नही हुआ। आँख लग रही है बेचारी की। आ, मैं तेरी मदद करूँ यह बिखरी चीजें सँवारने में।

मां : जुग-जुग जी बेटी। मारकंडे जितनी उम्र हो तेरी।

मैमूना : मर जाऊँगी। पर बात सुन। मुझे नही पिलायेगी वह छुआरे वाला दूध।

मां : लाती हूँ, तेरे लिए भी लाती हूँ दूध। (जाती है।)

मैमूना : तेरा ही पीते है, मौसी मां। रुक जा न। नही मानेगी। बेचारी थक-हार के सो गई। मोना, रोशनी चुभती होगी। रोशनी कम कर दूं। (बत्ती बुझा देती है।)

चौथा सीन
[मानव का घर]

मोना : रोशनी फिर चली गई।

मानव : है, रोशनी अभी है इस घर मे, मोना ! मद्धम कर दी थी मैंने। तुम्हारी आँख लग गई थी। (बत्ती जला देता है।)

मोना : बात करते-करते बेहोश हो गई फिर ?

मानव : बेहोशी नही, बेखुदी थी शायद।

मोना : एक बहुत बुरे ख्वाब से जागी हूँ मैं मानव। मेरे मानव, मुआफ कर दिया तुमने अपनी मोना को या अब भी डेस्डेमोना हूँ तुम्हारी नज़रो मे।

मानव : मासूम वह भी थी, मासूम तुम भी हो, मोना। मैं जानता हूँ, एक बहुत भयानक मजाक किया है हालात ने हमारे साथ। लेकिन सोचता हूँ तो चौंक जाता हूँ।

मोना : क्या सोच रहे हो ?

मानव : इस बहुत बुरे ख्वाब की ताबीर क्या होगी। वह किसी अनजान इयागो का गलीज़ और अजनवी ज़हर जो मेरे और तुम्हारे खून को नापाक और नकारा कर गया है वह हमें तो बरबाद करेगा ही, हमारी आने वाली नस्लों को भी सदियों तक कही नहीं छोड़ेगा।

मोना : नही-नही, ऐसा मत कहो।

मानव : यह सच्चाई है। एक हकीक़त, एक कडवा घूंट। हाँ तो एक बात और बताओ मोना, तुम्हे कभी यह एहसास नही हुआ कि तुम बीमार हो ?

मोना : मैमूना मेरी मददगार रही। पन्द्रह ही दिनों के अन्दर पता चल गया था मुझे कि किसी ऐसी-वैसी बात का डर नही था। पर यह बात कभी भी मेरे या मैमूना या माँ के दिमाग मे नही आई कि एक घिनौना घुन लग गया था मेरे जिस्म को। मेरे शफाफ और भरपूर जिस्म की न तो

शबाबी गुलाबी रंगत कम हुई, न ही कोई दाग दिखाई दिया ।

मानव : दिया हो, हो सकता है तुमने गौर न किया हो या नजर-अन्दाज कर दिया हो अनजाने में ।

मोना : कह नहीं सकती । अब इस वक्त कटहरे में खड़ी हुई मैं कुछ भी नहीं कह सकती मानव, कुछ भी नहीं ।

मानव : क्यों कहती हो यह, कसूरवार तुम नहीं हो जमाना है । यह हादसा किसी भी लड़की के साथ हो सकता है । यह बताओ तुम्हारे माँ-बाप, तुम्हारे सगे-सम्बन्धियों का क्या रवैया रहा ?

मोना : कहा न मैंने । माँ और ममूना तक ही महदूद रहा यह राज । माहौल ही कुछ ऐसा था । मैंने इसे लाख भुलाने की कोशिश की । शादी थी कि एक आँधी की तरह आई और जिन्दगी की धारा के साथ-साथ बहती चली गई मैं । तुम्हें भी मैंने लाख बताने के इरादे किए पर अपनी और तुम्हारी खुशी देखकर होंठ खोलने की हिम्मत नहीं हुई मेरी ।

मानव : ताज्जुब है ! इतना बड़ा बोझ लेकर दिल व दिमाग पर तुम जैसी शायरा, शौहर के मजबूत कंधों पर सिर रखे शोलों से खेलती रही । मैं तो समझता हूँ यह एहसान हुआ ऊपर वाले का कि हम अभी तक माँ-बाप बनने के बीज नहीं बो सके । नहीं तो, नहीं तो'''।

मोना : नहीं-नहीं । मत बताओ मुझे कि मैं माँ नहीं बन सकती ।

मानव : नहीं, इस हालत में कभी नहीं ।

मोना : मत छीनो मुझसे जिन्दा रहने का हक । मर जाऊँगी मैं । छत से कूदकर, कुछ खाकर । सिर फोड़-फोड़कर ।

मानव : तुम्हें जीना होगा । मेरे लिए जीना होगा ।

मोना : मानव !

मानव : हाँ, मोना !

मोना : अब क्या होगा ?

मानव : इलाज और परहेज़।

मोना : परहेज़। तो तुम···तुम मेरे पास नहीं आओगे। तुम मुझे प्यार नहीं करोगे। तुम मुझे अपनी बाँहों में, अपनी आगोश में, अपनी पनाह में नहीं लोगे। नहीं मानव, नहीं। जीते-जी ऐसा नहीं होगा। ऐसा नहीं होगा।

मानव : ऐसा नहीं होगा, मोना। मेरी मोनालीसा। मरकर भी ऐसा नहीं होगा।

मोना : डेस्डेमोना !

मानव : डेस्डेमोना से भी बेपनाह प्यार था ऑथेलो को, जानती हो।

मोना : मैंने कब कहा।

मानव : फिर !

मोना : मैंने सोचा, वह सब्ज़ आँखों वाला साँप अब भी डकसा रहा है किसी को।

मानव : ऐसा कुछ नहीं है, मोना ! यह उतार-चढ़ाव तो बने हुए हैं शादी-ब्याह के बन्धनों में। चुभती हुई नोकों को हम लोग ही तो हमवार करते हैं। नहीं ?

मोना : इतनी सारी उलझनें एक साथ समा गईं मेरे दिलो जान पर। बताओ न राजे, मैं क्या करूँ ?

मानव : शायरी।

मोना : मज़ाक मत करो। रो पड़ूँगी मैं।

मानव : कौन काफिर मज़ाक कर रहा है।

मोना : तुम !

मानव : नहीं यार, क्या था वह···भागती···कितनी बेतहाशा है।

मोना : ज़िन्दगी है कि इक तमाशा है। हा-हा-हा···।

मानव : अरे, बात-बात में कितना समय गँवा दिया। उठूँ।

मोना : अभी नहीं।

मानव : फिर।

मोना : कुछ नहीं।

मानव : मोना !

मोना : मैं जानती हूँ। आज के बाद तुम कुछ नहीं करोगे।

मानव : भूलती हो। अभी तो कुछ करने का मौका आया है। देखती जाओ। सब-कुछ करूँगा।

मोना : यकीन नहीं आता।

मानव : एक देवदासी थी मथुरा की। सजीली, नशीली। भिक्षु आनन्द की राहों में आई पर उनका दामन न थाम सकी। भिखारी बना हुआ बौद्ध भिक्षु आगे बढ़ गया यह कह-कर—मैं आऊँगा तुम्हें उठाने के लिए जब मुनासिब होगा। और जब भिक्षु आनन्द लौटे तो वह गिरी हुई औरत लाचार और बीमार उन्हीं राहों में पड़ी थी और उन्होंने उसी दम उस अभागिन को उठा लिया।

मोना : गुरुदेव की झलक में उजालों की आस बँधा रहे हो मानव!

मानव : हाँ मोना, हाँ। मैं नहीं कर सकता मज़ाक जो हालात ने हम से किया है! कितना बड़ा मज़ाक!

मोना : अब?

मानव : डॉक्टर साहब कहते तो थे आऊँगा। अगला कदम उनकी सलाह से उठायेंगे।

मोना : किस मुँह से मैं उनका सामना करूँगी।

मानव : बिलकुल इसी से, जो चूम लेने के क़ाबिल है।

मोना : तो चूमते क्यों नहीं?

[कदमों की आहट।]

मानव : आ गए शायद। आ रहा हूँ। आप···।

डॉक्टर : (आते हुए) हाँ-हाँ, मैं ही हूँ।

[मोना अन्दर जाती है।]

मानव : आइए-आइए, डॉक्टर साहब। बड़ी लम्बी उम्र है आपकी।

डॉक्टर : क्या करूँगा ले के।

मानव : अरे, तुम कहाँ भाग गईं। आप सच कहते थे डॉक्टर साहब, सच कहते थे।

डॉक्टर : क्यों, हुई न वही बात।

मानव : हाँ, हुई तो, पर वैसे नही, जैसे हम सोचते थे। शायद इसीलिए आपका सामना नहीं कर पाई मोना।

डॉक्टर : क्या हुआ था ?

मानव : हादसा !

डॉक्टर : मैं भी सोच रहा था।···हाँ, बुलाओ तो। अपने डॉक्टर को अपना दुख दूर नही करने दोगे।

मानव : शायद उसे एक बेपनाह गुनाह का एहसास है डॉक्टर, जिसके लिए मैं जानता हूँ वह हरगिज जिम्मेदार नही है।

डॉक्टर : शायद अब भी उस हादसे के हालात मुझे बताने से गुरेज करो तुम। फिर भी यह बात जहन मे रखना कि गुनाह के एहसास का जाना या अनजाना वह गिल्ट कॉम्पलैक्स कभी न आने देना, अपने या अपनी बीवी के दिल मे। वह गुनाह से भी ज्यादा मोहलक होगा।

मानव : ऐसा भी क्या है। बुलाता हूँ। मोना ! मोना ! अरे भई, आओ तो। देखो, डॉक्टर साहब आये हैं।

मोना : (आते हुए) नमस्ते, डॉक्टर साहब ! अब के तो बहुत दिनों में देखा।

डॉक्टर : भई हम डॉक्टर लोग चाहते हैं भी और नही भी कि आपको हमारी जरूरत पडे। वैसे मैं आया था मोना जी, आप थी नहीं।

मोना : गई हुई थी मैं जरा बाहर।

डॉक्टर : हाँ तो कैसी चल रही है आपकी शायरी और जिन्दगी ?

मोना : मय भी पीते है, तौबा भी करते हैं। यह भी जारी है, वह भी जारी है।

डॉक्टर : वाह, क्या बात कही है। डॉक्टरो पर कभी कुछ नही कहा।

मोना : जिगर ने कहा है—काम कुछ न आ सकी इसमें मसीहाई ए ग़ैर। बात यह है कि मुहब्बत है मुहब्बत का इलाज।

डॉक्टर : मुहब्बत से आराम आने लगा तो दवाई के पैसे कौन देगा।

मानव : लीजिए, लीजिए, चाय भी हमदर्दी भी। टी एंड सिम्पैथी।

मोना : अभी ला रही हूँ (जाती है।)

डॉक्टर : नही-नही, पी के आया हूँ।

मानव : और पी लीजिए। हां तो डॉक्टर साहब ! किस्सा कोताह यह है कि शादी से कुछ रोज पहले किसी अजनबी ने ज़बर्दस्ती की, इस मासूम और मजलूम लड़की के साथ। एक ऐसा हादसा हुआ जिसे न तो यह जबान पर ला सकी और न ही उसका अन्जाम जान सकी। इससे ज्यादा जानना मैं समझता हूँ जरूरी नही होगा।

डॉक्टर : उसका कुछ अता-पता। मेरा मतलब है नौकर था, रिश्ते-दार था। दोस्त था या···।

मानव : फ़र्क पड़ेगा उससे। अजनबी था। जिसका खून गलत था, गलीज था।

डॉक्टर : हूँ ! बात तो ठीक है। कोई भी गलत हो सकता है। गलीज हो सकता है।

मानव : हो गया जो हो गया, डॉक्टर साहब। कहिए, अब क्या होगा।

डॉक्टर : अब होगा इलाज, भरपूर इलाज—तुम्हारा और भाभी का। और चन्द दिनो ही मे न ठीक कर दिया तो नाम बदल देना।

मानव : हा-हा-हा···नाम बदल जाये, फिर भी डॉक्टर तो डॉक्टर ही कहलाता है।

डॉक्टर : नही-नही, कोई जरूरी नही। क्वैक भी कहला सकता है।

मानव : तो ?

डॉक्टर : अभी तो लाखो सी सी मे यह इंजेक्शन देने होंगे—पेंसि-लीन के, पाम के। आज से ही श्रीगणेश करते है।

मानव : सुना है बहुत दर्द करते है।

डॉक्टर : दर्द दूर भी तो करते हैं।

मोना : (आकर) दर्द का हद से गुजरना है दवा हो जाना।

लीजिए, चाय तो लीजिए।

डॉक्टर : जवाब नहीं। शुक्रिया। हूँ, गुड टी। नाउ हाऊ अबाउट सम सिम्पैथी।

मोना : वह आप जो दे रहे हैं। पर जबानी जमा-खर्च से क्या होता है ?

डॉक्टर : मैं डॉक्टर हूँ मैडम, शायर नहीं।

मोना : तारीख के दामन पर चमकते हुए कितने ही सितारे गिन लो जो मसीहा भी थे और मुफक्किर भी। धनवन्तरी, लुकमान, बू अली सीना।

डॉक्टर : बड़ा खूबसूरत सोचती है आप।

मोना : यह खूबसूरती किसी काम की नहीं। जानते हो डॉक्टर, औरत के लिए सबसे खूबसूरत किरदार मां का है और आज मुझे कुछ ऐसा एहसास हो रहा है कि जिस हालत में मैं हूँ, मां नहीं बन पाऊँगी।

डॉक्टर : मैं जानता हूँ और अब यह मेरी ज़िम्मेदारी है कि वह तमाम खुशियाँ जो आपकी सेहत का, आपकी खुशहाली का, आपकी ज़िन्दगी का हिस्सा हैं, बहाल हो जायें। उसके लिए मुझे आपके और मानव के कोआपरेशन की बहुत जरूरत होगी।

मानव : तुम्हें सौंप दिया अपने-आपको आज से डॉक्टर।

डॉक्टर : शाबास ! दैट्स लाइक ए गुड ब्वॉय ! मोना भाभी, आपको भी क्लीनिक में आना होगा।

मोना : मैं तैयार हूँ।

मानव : हैव दाऊ सैंड, दाई प्रेयर्स…।

मोना : इट्स बैटर एज़ इट इज़।

मानव : यह अल्फ़ाज इयागो के ?

मोना : यही जवाब बनता था।

डॉक्टर : चलता हूँ। तुम ले आना भाभी को। लंच-ब्रेक के बाद। चाय अच्छी थी।

मोना : और हमदर्दी ?

डॉक्टर : दर्द दूर करने के लिए हमदर्दी तो चाहिए ही। नही ?

मोना : हूँ !

डॉक्टर : ओ० के० (जाता है।)

मानव : वाई।

मोना : अब क्या होगा ?

मानव : क्या होगा ? अच्छा ही होगा।

मोना : जरा ऊँचा कर दो रेडियो राजे, यह कव्वाली मुझे बहुत अच्छी लगती है। जो दवा के नाम पर जहर दे उसी चारागर की तलाश है।

मानव : फिर तुमने अपने उलझे हुए खयालात की चहारदीवारी मे घूमना शुरू कर दिया।

मोना : मैं नही निकल सकती इस माहौल से बाहर, नही निकल सकती मानव। लाख कोशिश करने पर भी मैं अपने से ऊपर नही उभर सकती। एक बाज़ाब्ता बचपन से जकड़ी हुई जवानी तक मैं अपने-आपको देख नही पाई और इक बज़दवाजी जिन्दगी का आसमान आया अपनी कौसे कज़ा के सात रंग लिए तो उफ इतनी अजीयत, इतना अलम, इतना अँधेरा !

मानव : इन सबसे ऊपर उभरना होगा। अपने-आपसे मोना। मेरी मदद से। मसीहाओं की मसीहाई से।

मोना : (हल्की हँसी) काम कुछ आ न सकी इसमे मसीहाई ए गैर।

मानव : तो भी…तो भी…बात यह है कि मुहब्बत है मुहब्बत का इलाज।

मोना : मुझे ऐसा कुछ महसूस होता है मानव, कि तुम मुझसे मुहब्बत नही करोगे। वह मुहब्बत जो माँ का दूध बनकर मेरी ममता को परवान चढ़ा सके।

मानव : क्यों नही ?

मोना : नही मानव, नही। मैं जानती हूँ। मैं जानती हूँ तुम नही छूना चाहते मुझे। तुम नही सो सकते मेरे साथ।

मानव : क्यो नही ?

मोना : हुआ भी कुछ ऐसा, तो बहुत बुरा होगा। बच्चे के लिए बहुत बुरा होगा। मैं जानती हूँ। मैं जानती हूँ।

मानव : जो होगा अच्छा ही होगा।

मोना : इटम बैटर एज इट इज।

मानव : इट इजन्ट। नहीं है ठीक। ऐसे नही है। पर जो होगा अच्छा ही होगा।

मोना : मैं सोचती हूँ, अच्छे दिन अब कभी नही आयेंगे।

मानव : क्यों कहती हो ऐसे। क्यों सोचती हो ऐसे आने वाले अनजान दिनों के बारे मे।

मोना : जानती हूँ मैं मानव, जब तक यह घुन लगा रहेगा मियाँ-बीबी वाली बात, वह ताल्लुकात जाहिर है मुमकिन नही है, नही न ! और फिर एक ख़याल, एक डर, एक दरार जो हमारे दिलो-दिमाग पर बादल बनकर छा गयी है। हो सकता है एक उलझन, एक कॉम्पलैक्स बनकर ज़िन्दगी को खिलने से पहले तार-तार कर दे !

मानव : तुम्हारी तबीयत ठीक नही लगती। आओ मेरी बाँहों मे। आओ मोना। अरे यह तुम्हारा ज़िस्म एकदम इतना गर्म ! मोना-मोना ! क्या हुआ तुम्हें ?

मोना : दर्द। एक बेपनाह दर्द। सिर से पाँव तक मेरे ज़िस्म को चूर-चूर कर रहा है राजे।

मानव : पुरानी क़द्रों की कसम है मुझे मोना ! मैंने भी पठान माँ का दूध पिया है। मजाल है जो मेरी वफ़ा मे, मेरी मुहब्बत मे बाल-भर भी फ़र्क आये। मैं तुम्हें कभी उदास नही होने दूँगा। मैं तेरे साथ जिऊँगा, तेरे साथ मरूँगा। इस जन्म में। जन्म-जन्म में।

मोना : इस जिन्दगी के बाद कोई जिन्दगी नही है। इस लम्हे के

बाद कोई लम्हा नहीं है खुशी का। अँधेरे···ये पल-पल के अँधेरे बढ़ते जा रहे हैं। बढ़ते जा रहे हैं।

मानव : यक़ीन मत गँवाओ ज़िन्दगी में, खुशी में मोना। ये योवाद वीव्र, यह हमेशा-हमेशा जीने की तमन्ना, यह पल-पल उजालों की आस, बनाये रखो यह सब।

मोना : उजाले। आयेंगे उजाले?

मानव : अंधेरा आरज़ी है। मोना, ब्रम उजाला अदबी है। रोज़े अव्वल से लेकर आखिर तक।

मोना : कहाँ है वह सुबह? वह सुबह कहाँ है? क्यों नहीं उठा लेती अपने उजालों की ओट में आखिरे शब के इन अँधेरों को? ओफ़!

मानव : मोना-मोना! फिर बेहोश हो गई। उठो! वह देखो दूर गगन में उजालों के आसार। कई नई सुबहों के पेशकार। वह उजालों के आसार पर पर-आसार के आमद तक और इन्तज़ार करना होगा। शायद कई दिन कई साल आयेंगे। जरूर आयेंगे। वह सब नई सुबहों के साल। एक-न-एक दिन।

पाँचवाँ सीन

[वही कमरा। साल बाद।]

मोना : कितनी सारी किरणें लेकर यह एक और नई सुबह आई है। सालहा साल से जाग-जागकर, सो-सोकर, जिसके सपने सजाये थे वही सुबह···।

मानव : सितारों को दुआ दो, जो इस क़ाबिल बना दिया हमें कि अपनी तमाम खुशियाँ जहाँ छोड़ी थीं वहीं से शुरू करके मुकम्मिल कर सकें।

मोना : सितारों को क्यों, तुम्हें क्यों नहीं। डॉक्टर को क्यों नहीं?

मानव : हम सब एक निज़ाम, एक चौपड़, जो इस नीली छत के नीचे छाया हुआ है, उसी की शतरंज के मोहरे हैं। अभी तो···।

मोना : फ़लसफ़ा नहीं, हक़ीकत बयान करो।

मानव : यह तुम कह रही हो। एक शायरा। टूटते हुए सितारों के पीछे भागती हुई तिलमिलाती तितलियों की तहर आज़ाद। बहार की हर बुलबुल की हमनवा।

मोना : इन तमाम जायजों से ऊँचा एक जायजा और भी है। माँ बनने का एजाज। मैं माँ कहलाऊँगी। एक नन्ही-मुन्नी जान की माँ।

मानव : वह बिटिया होगी न ?

मोना : बेटा नहीं ? कोई भी हो। हो तो।

मानव : अब तो डॉक्टर ने भी हरी झंडी दिखला दी है। तन्दुरुस्त माँ-बाप के तन्दुरुस्त बच्चे की आमद के लिए।

मोना : फिर क्या सोच रहे हो ? (शरारत भरी हल्की हँसी।)

रिश्ते रोशनी के

ये रिश्ते रूह के ग्रौर रोशनी के,
दीये दो हो बचे हैं जिन्दगी के।

पात्र

•

रोशन

माँ

चेयरमैन

प्रेम

सिपाही

दौलत

इंस्पेक्टर

क्षमा

पहला सीन

[निम्न मध्यवर्गीय मकान का एक कमरा। सलीक़े से सजा हुआ। माँ और रोशन बात कर रहे हैं।]

रोशन : रिश्ते, रिश्ते, रिश्ते! मेरे कोई रिश्तेदार नहीं हैं माँ।

माँ : मैं तुम्हारी माँ हूँ रोशन। कम-से-कम मुझे तो ऐसा मत कहो और फिर रिश्तेदारी फूलों की आब होती है बेटा। मानो तो बहुत कुछ, नहीं मानो तो कुछ भी नहीं। आज इतने ऊँचे पद पर पहुँचे हो, उसमें कुछ-न-कुछ तो माँ-बाप का, भाई-बहिनों का, तेरे उस्तादों का, तेरे यार-दोस्तों का हाथ होता ही। कहाँ नहीं तुम्हारी मदद की! अच्छे-से-अच्छे स्कूल-कॉलिजों में अपनी थोड़ी-सी तनख्वाह के अन्दर गुज़ारा करते हुए तेरे पापा ने तुझे पढ़ाया-लिखाया। तेरी नौकरी के वक्त तेरे चाचा ने, तेरे मामा ने कहाँ-कहाँ सिफ़ारिश नहीं लड़ाई? यह अलग बात है कि कहीं ढंग से काम बना ही नहीं। कितने बड़े-बड़े घरों के रिश्ते तूने लौटा दिए यह कहते हुए कि अभी शादी नहीं करूँगा। अब, मैं पूछती हूँ, कब हम पीछे हटे हैं?

रोशन : ज़िन्दगी की सबसे निचली पायदान पर पाँव रखकर क़दम-क़दम मैं जो ऊपर आया हूँ तो बस काम से। मेरा ज़िन्दगी में कोई नाता है, रिश्ता है, तो बस अपने काम से। आई एम वैडेड टू वर्क। काम ही में मुझे आराम मिलता है माँ!

माँ : तो किए जाओ काम आराम से। कौन रोकता है तुम्हें? पर यह सारी निराशा तेरी अपनी बनाई हुई है। अब भी मेरी मानो बेटा। शादी कर लो।

रोशन : किससे?

मां : रिश्तों की कमी नही रोशन। तुम हां तो करो। लाइन लगा दूंगी लडकियो की।

रोशन : हा-हा-हा ! इन्द्रप्रस्थ कॉलिज के सामने लगा हुआ बस का क्यू दिखा दोगी, क्यों ?

मां : इन्द्रप्रस्थ का क्यू दिखाऊँ या इन्द्र का अखाड़ा, यह मुझ पर छोड दो।

रोशन . नही, मां, नही। मेरी शादी हो चुकी।

मां : काम से न ?

रोशन : तुम तो जानती ही हो।

मां : तो फिर तुम गए काम से। यह पागलपन छोडो। वही करो जो नॉर्मल लोग करते है।

रोशन : एबनॉर्मल हूँ तो भी कुछ हूँ तो। मां, मुझे मस्त रहने दो अपने-आप मे। अपनी इस दीवानी दुनिया मे चाहे यह लाख मेरे लिए जहन्नुम हो, जन्नत हो। दीवानो की जन्नत, द फूल्ज़ पैराडाइज।

मां : जहाँ तुम्हारी खुशी हो रहो। मेरा क्या है। मैं आज हूँ, कल नही हूँगी, पर मैं अच्छी तरह जानती हूँ तुम खुश नही हो। आती हूँ अभी। (जाती है।)

रोशन : खुश हूँ मां, मैं बहुत खुश हूँ। कभी-कभी काम करते-करते या थककर अचानक जो यादों के ताने बुनने लगता हूँ न, तो तुम्हारे वे तमाम रिश्तेदार, जिनका तुम इतना दम भरती हो, एक-एक करके मेरे जहन मे उभरने लगते है। एक दिन था जब खिचडी और दही खिलाकर तुमने मुझे एक बार और इण्टरव्यू के लिए भेजा था। (फ्लैश बैक)

[इण्टरव्यू बोर्ड]

चेयरमैन : चौथी बार आये हो ?

रोशन : जी।

चेयरमैन : बार-बार आने से अब तक तुम्हें वैसे पता तो चल गया होगा कि कितने पानी मे हो। फिर क्यों बेकार कोशिश

कर रहे हो ?

रोशन : कोशिश करना तो फर्ज बनता है सर। आगे सब आपके और ऊपर वाले के अख्तियार है।

चेयरमैन : किसी से कहलवाया है तुमने। सच-सच बताना।

रोशन : माँ क़सम मैंने किसी से नहीं कहलवाया। सर, सच मानिए। हाँ, माँ ने किसी रिश्तेदार का दरवाजा खटखटाया हो या किसी मन्दिर में जाकर भगवान से घंटियाँ बजाकर सिफ़ारिश की हो तो कह नहीं सकता।

चेयरमैन : भगवान ने तो नही बताया। हाँ, एक इंसान ने हमे यह सिफ़ारिशी चिट्ठी भेजी थी तुम्हारे लिए। और हो सकता है यह रिश्तेदारी तुम्हें बहुत महँगी पड़े।

रोशन : (गुस्से मे) नही देनी तो मत दीजिए मुझे वह नौकरी। पर भगवान के लिए मत बनाइए मुझे और बेवकूफ़। मैं भूखा रह लूंगा। मैं भीख माँग लूंगा। मैं मजदूर बनकर, बैरा बनकर, बाबू बनकर जिन्दगी बिता लूंगा, लेकिन मैं नही सुन सकता अब और यह सब-कुछ। नही सुन सकता।

चेयरमैन : एंगरी यग मैन ! जलाल मे मत आओ। यह सच्चाई है, जो मैंने तुम्हे दिखाई। जाओ, कोई रोशनी की राह तलाश करो। हम दोषी तुम्हे नही ठहराते। अँधेरो मे भटक-भटककर तुम लोग इतने अनजान हो गए हो कि अब इतना भी नहीं जानते कि तुम्हारा दायाँ हाथ कौन-सा है और बायाँ कौन-सा।

रोशन : जा सकता हूँ मैं ?

चेयरमैन : हूँ।

रोशन : हूँ।

माँ : (आते हुए) अरे बैठे-बैठे कहाँ खो जाते हो खयालो में एकदम। ज्यादा सोचा मत करो।

रोशन : सोचता था माँ ! जिस महकमे में बाबा घिसते-पिटते आख़िरी दिनों में इनकमटैक्स अफ़सरी की मंज़िल तक

पहुंचकर रिटायर हुए, मैं आई० ए० एम० द्वारा एक ही छलांग में वहाँ से शुरू करके कमश्निर बन जाऊँगा।

मां : अब भी क्या कम हो। असिस्टेंट एपीलेट कमिश्नर और फिर यह तो तेरी बहादुरी है कि क्लर्क भर्ती होकर भी महकमे के इम्तहान पास करते-करते बाबू से अफ़सर—बड़े अफसर बन गए। और अभी जवान हो। भगवान करेगा बड़े कमिश्नर भी हो जाओगे एक-न-एक दिन।

रोशन : पर यह समझ में नही आता माँ कि तब क्या कमी थी मुझ में जो अब पूरी हो गई है।

मां : कमी कोई नही थी तुम में। मौके-मौके की बात है बेटा। अब छोड़ ये फाइलें। चाय लाती हूँ तेरे लिए। रेडियो लगा ले। भजन आ रहे होंगे। ला, मैं ही लगा लूं (जाती है। रेडियो पर पंकज का गाया हुआ भजन आ रहा है : '''कहत कबीर उदास भयो जीवन। हर एक सहारा टूटा।
प्रेम का नाता टूटा। आस का बन्धन टूटा,
प्रेम का नाता छूटा, नाता टूटा। प्रेम न टूटा।
बात का पालन छूटा। नियम धर्म से बोल रे ज्ञानी
क्या सच्चा, क्या झूठा'''।)

रोशन : प्रेम का नाता टूटा'''प्रेम! पता नही कहाँ होगी अब। इसी दिल्ली में ऐसी ही शाम थी। कुदसिया घाट से परे लहलहाते हुए सरकंडों के साज पर सरसराती हुई ऐसी ही हवा मेरे पहलू में बैठी प्रेम के गुलाबी गालों को चूमती चली जा रही थी। जाने हम कब से जमुना की लहरें गिनते-गिनते कहाँ खो गये थे'''(फ्लैश बैक)

प्रेम : हूँ।

रोशन : क्या हुआ ?

प्रेम : कहाँ हो ?

रोशन : तुम्हारे पास।

प्रेम : सो गये थे हम।

रोशन : खो गए थे शायद, एक-दूसरे मे। (हल्की हँसी)

प्रेम : कम बैक।

रोशन : मैं बिलकुल तुम्हारे पास हूँ।

प्रेम : देखो-देखो, लहरों पर लहराते हुए वे सी-गल्ज, है न !

रोशन : लगते तो हैं। सी-गल्ज या रिवर-गल्ज !

प्रेम : यहाँ कैसे आ गए इतनी दूर ?

रोशन : जैसे हम ! (दोनो हँसते है।)

प्रेम : यहाँ से कहाँ जाएँगे ?

रोशन : वापस।

प्रेम : इतनी दूर ?

रोशन : क्यों नहीं ! जहाँ लगन होती है वहाँ रास्ते लम्बे नही लगते।

प्रेम : रोशन !

रोशन : हूँ।

प्रेम : क्यों जा रहे हैं हम अलग-अलग रास्तों पर ? क्यों नही चल सकते हम साथ-साथ ?

रोशन : बड़ा अजीब है यह आवारगी का रिश्ता। गुबारे राह सही, हमसफर है, क्या कहिए ?

प्रेम : गुबारे राह, रास्ते की धूल, है न ? मैं जानती हूँ, मै तुम्हारी राहों में पड़ी हुई धूल हूँ। मिट्टी हूँ, पत्थर हूँ तुम्हारे रास्ते का।

रोशन : प्रेम !

प्रेम : पत्थर भी हूँ तो भी किसी अहिल्या की तरह अपने राम के कदमों की राह देख रही हूँ।

रोशन : जिस भगवान, जिस इंसान की राह देख रही हो मै जानता हूँ वह मैं नही हूँ।

प्रेम : मत बीच में लाओ मेरी मजबूरियों को, रोशन। मैं रो पड़ूँगी। तुम नही अपनाओगे तो तुम्ही बताओ, मेरे बाबा मुझे पडे रहने देंगे यूँ घर मे।

रोशन : इन्तजार और इन्तजार नही कर सकती हो न।

प्रेम : हर औरत अपने सपनों के ताजमहल सजाती है, रोशन ! वह घर की चारदीवारी चाहती है। वह हिफाजत चाहती है। वह माँ बनकर जिन्दगी का सबसे बडा सेहरा अपने और अपने जीवन-साथी के सिर पर सजा हुआ देखना चाहती है। मै सब-कुछ त्याग सकती हूँ तुम्हारे लिए। पर मेरी बेबसी। मेरे हालात। मेरे माँ-बाप वक्त के साथ इतनी तेज रफ्तार से भागते हुए। मुझे दम नही लेने देंगे। नही जीने देंगे, रोशन ! मैं भटक रही हूँ अँधेरों मे। मुझे राह दिखाओ, रोशनी की राह। बताओ न राजे, मैं क्या करूँ ? मै कहाँ जाऊँ ? मेरे पास सिर्फ़ आज की रात है फैसला करने को।

रोशन : क्या करता है वह ?

प्रेम . बिजनेस। पता नही मुझे अच्छी तरह से। कुछ-न-कुछ स्याह या सफेद करता ही होगा। वैसे सुना है पैसे वाले है।

रोशन : हमारे यहाँ तो ऐसा कुछ नही है, प्रेम। हम लोग खानदानी तो है पर पैसे वाले नही। मैं ठहरा एक मामूली-सा बाबू, इनकमटैक्स दफ्तर मे। मैं तुम्हारे क्या काम आ सकता हूँ ?

प्रेम : दफ्तर की नही। घर की बात कर रही हूँ बुद्धू। मुझे बाबू नही, रोशन चाहिए।

रोशन : सोचना होगा। यह जिन्दगी के सौदे हैं, प्रेम। मुझ जैसे सस्ते नही। और फिर इन हालातों में कौन मानेगा तुम्हारे घर मे कि एक बिजनेसमैन,को छोड तुम्हे एक बाबू के पल्ले बाँध दिया जाए।

प्रेम : भाग चलें ?

रोशन : कहाँ ?

प्रेम : वहाँ उस पुश्ते की रोशनियों से पार—दूर, बहुत दूर।

जहाँ गगन धरती से मिलता है। जहाँ से ये चहचहाती हुई चिड़ियाँ आती है। वही चले जाएँगे।

रोशन : जाएँगे प्रेम, पर आज नही, कल। मुझे मालूम है, मेरे हालात अच्छे हो जाएँगे। बहुत अच्छे हो जाएँगे। आज असिस्टेंट हूँ। कल अफसर बन जाऊँगा। परसों हो सकता है कमिश्नर बन जाऊँ। फिर हमारे सारे क्लेश कट जाएँगे। जानती हो मैं दिन-रात मेहनत कर रहा हूँ। अच्छे दिनों की इन्तजार मे। कुछ दिन और मेरी राह देख लो।

प्रेम . पर कैसे ?

रोशन · न कर दो।

प्रेम : न नही हो सकती न मुझसे। तुम समझते क्यो नही, रोशन ! उफ ! मुझे चक्कर आ रहा है। जाने मुझे क्यों इतने सारे सितारे एक साथ दिखाई दे रहे हैं सब तरफ। सँभालो मुझे, रोशन ! कुछ भी मेरे वस मे नही है। उफ, मुझे अपनी बाँहो मे ले लो।

रोशन : तुम सदा मेरे साथ हो। कभी भी जिन्दगी में मैं तुम्हारे काम आ सका तो देखना मैं पीछे नही हटूँगा।

प्रेम : अब ! अब क्या हो रहा है तुम्हे ! प्रिंस ऑफ डेनमार्क बने बैठे रहना यूँ ही जमुना किनारे और ऐसे ही अचानक मेरे बाबा का चुना हुआ प्रिंस चार्मिंग आ गया तो कह नही सकती, क्या होगा।

सिपाही : (आकर) : इगे के हो रिया से भाई ?

रोशन : प्यार ! क्यों ?

सिपाही : क्यों के बच्चे, चलो थाने !

प्रेम : क्या किया है हमने ?

सिपाही : प्यार। बता तो रिया है तेरा यार।

रोशन : तमीज से बात करो ! यह···मेरी···मेरी···।

सिपाही : बीवी है···कह दे, कह दे।

रोशन : बीवी तो नही, पर बातचीत चल रही है।

रोशन : इन्तजार और इन्तजार नहीं कर सकती हो न।

प्रेम : हर औरत अपने सपनों के ताजमहल सजाती है, रोशन ! वह घर की चारदीवारी चाहती है। वह हिफाजत चाहती है। वह माँ बनकर ज़िन्दगी का सबसे बड़ा सेहरा अपने और अपने जीवन-साथी के सिर पर सजा हुआ देखना चाहती है। मैं सब-कुछ त्याग सकती हूँ तुम्हारे लिए। पर मेरी बेबसी। मेरे हालात। मेरे माँ-बाप वक्त के साथ इतनी तेज रफ़्तार से भागते हुए। मुझे दम नहीं लेने देंगे। नहीं जीने देंगे, रोशन ! मैं भटक रही हूँ अँधेरों में। मुझे राह दिखाओ, रोशनी की राह। बताओ न राजे, मैं क्या करूँ ? मैं कहाँ जाऊँ ? मेरे पास सिर्फ आज की रात है फैसला करने को।

रोशन . क्या करता है वह ?

प्रेम : बिजनेस। पता नहीं मुझे अच्छी तरह से। कुछ-न-कुछ स्याह या सफेद करता ही होगा। वैसे सुना है पैसे वाले हैं।

रोशन : हमारे यहाँ तो ऐसा कुछ नहीं है, प्रेम। हम लोग खानदानी तो हैं पर पैसे वाले नहीं। मैं ठहरा एक मामूली-सा बाबू, इनकमटैक्स दफ्तर में। मैं तुम्हारे क्या काम आ सकता हूँ ?

प्रेम . दफ्तर की नहीं। घर की बात कर रही हूँ बुद्धू। मुझे बाबू नहीं, रोशन चाहिए।

रोशन : सोचना होगा। यह ज़िन्दगी के सौदे हैं, प्रेम। मुझ जैसे सस्ते नहीं। और फिर इन हालातों में कौन मानेगा तुम्हारे घर में कि एक बिजनेसमैन को छोड़ तुम्हें एक बाबू के पल्ले बाँध दिया जाए।

प्रेम : भाग चलें ?

रोशन : कहाँ ?

प्रेम : वहाँ उस पुश्ते की रोशनियों से पार—दूर, बहुत दूर।

जहाँ गगन धरती से मिलता है। जहाँ से ये चहचहाती हुई चिड़ियाँ आती हैं। वही चले जाएँगे।

रोशन : जाएँगे प्रेम, पर आज नही, कल। मुझे मालूम है, मेरे हालात अच्छे हो जाएँगे। बहुत अच्छे हो जाएँगे। आज असिस्टेंट हूँ। कल अफसर बन जाऊँगा। परसों हो सकता है कमिश्नर बन जाऊँ। फिर हमारे सारे क्लेश कट जाएँगे। जानती हो मैं दिन-रात मेहनत कर रहा हूँ। अच्छे दिनों की इन्तज़ार मे। कुछ दिन और मेरी राह देख लो।

प्रेम : पर कैसे ?

रोशन . न कर दो।

प्रेम : न नहीं हो सकती न मुझसे। तुम समझते क्यों नही, रोशन ! उफ ! मुझे चक्कर आ रहा है। जाने मुझे क्यों इतने सारे सितारे एक साथ दिखाई दे रहे है सब तरफ। सँभालो मुझे, रोशन ! कुछ भी मेरे बस में नही है। उफ, मुझे अपनी बाँहो मे ले लो।

रोशन . तुम सदा मेरे साथ हो। कभी भी जिन्दगी मे मैं तुम्हारे काम आ सका तो देखना मैं पीछे नही हटूँगा।

प्रेम : अब ! अब क्या हो रहा है तुम्हें ! प्रिंस ऑफ डेनमार्क बने बैठे रहना यूँ ही जमुना किनारे और ऐसे ही अचानक मेरे बाबा का चुना हुआ प्रिंस चार्मिंग आ गया तो कह नही सकती, क्या होगा।

सिपाही : (आकर) : इंगे के हो रिया मे भाई ?

रोशन : प्यार ! क्यों ?

सिपाही : क्यों के बच्चे, चलो थाने !

प्रेम : क्या किया है हमने ?

सिपाही : प्यार। बता तो रिया है तेरा यार।

रोशन : तमीज़ मे बात करो ! यह···मेरी···मेरी···।

सिपाही : बीवी है···कह दे, कह दे।

रोशन : बीवी तो नही, पर बातचीत चल रही है।

प्रेम : देखो हवल्दार साहब, हम बड़े दुखी हैं। हम कुछ नही कर रहे। कोई गडबड़ वाली बात नही। अभी बैठे है, बात कर रहे है। अभी चले जाएँगे।

सिपाही : वह तो ठीक से बहनजी। पर तुम जानो, ऐसे खुलेआम बैठने से अन्देशा अपने-आप हो जावे मे। बैठो-बैठो, पर जल्दी-जल्दी अपनी बातचीत सिरे चढ़ा के बस चल दो। (सिपाही चला जाता है।)

प्रेम : थैंक यू। समझाने मे देखो न, समझ गया कितनी जल्दी।

रोशन . जल्दी! कितनी जल्दी है ज़िन्दगी मे। जाओ प्रेम, जाओ, तुम भी जल्दी मे ही, जाओ। अपने उस प्रिंस चार्मिंग के पास जाओ। सजाओ उसके स्याह-सफ़ेद सपनो की दुनिया। समझ लेना कि रोशन नही था तुम्हारा रास्ता।

प्रेम : रोशन, रास्तों के राही, यह नाता, यह रिश्ता प्रेम का इतनी आसानी से जमुना जल में प्रवाह कर दोगे?

रोशन : कोई रिश्ता निभता दिखाई नही देता, प्रेम! एक ही गुमनाम राह है *काम की, जो लगता है, अपना अंजाम* बनेगी।

प्रेम : फिर कभी मिलोगे ज़िन्दगी मे?

रोशन : क्यो नही!

प्रेम : पहचानोगे?

रोशन : वक्त आने दो।

प्रेम : चलें।

रोशन : सुनो। कही दूर से आवाज़ आ रही है (नेपथ्य मे पंकज की आवाज मे : प्रेम का नाता टूटा…)

प्रेम : नही-नही-नही।

रोशन : (जोर-जोर से) प्रेम…प्रेम…(नेपथ्य मे सगीत साज़ पर : प्रेम का नाता टूटा…)

माँ : (आकर) क्या हुआ? क्या हुआ, बेटा?

रोशन : टूट गया।

माँ : क्या टूट गया, बेटा ?

रोशन : रिश्ता।

माँ : यही होगा। यूँ ही जान मारते रहोगे न दिन-रात तो यही होगा। न सोने की सुध, न खाने का खयाल। तुझे तो मैं समझती हूँ मालनकोलिया हो गया शायद। डॉक्टर को दिखा, बेटा। ऐसे ही बैठा-बैठा बहकने लगेगा तो पागल हो जाएगा।

रोशन : मैं बराबर होश मे हूँ, माँ। उफ! कई गानो के साथ पुरानी यादें बँधी हुई होती हैं। ऐसे ही जाने क्यों, कहाँ से कुछ गूँज-सी सुनाई दी मुझे गुज़रे हुए ज़माने की।

माँ : ले, चाय ले। और लेट जा। चार पल आराम भी कर लेना चाहिए। शीरा पिएगा बादाम डाल के ?

रोशन : नही, माँ।

माँ : क्या हर वक्त, हर बात मे नन्न की रट लगाये रहता है ! लाती हूँ अभी। दिमाग में ताकत आती है।

रोशन : बेचारी…माँ, तुम्हे याद है हमारे पड़ोस में एक लडकी हुआ करती थी—प्रेम।

माँ : लड़कियाँ बैठी थोड़े ही रहती है माँ-बाप के यहाँ। कब की चली गई अपने घर। जानें कितने बच्चों की माँ होगी।

रोशन : होगी तो दिल्ली में ही यहीं कहीं।

माँ : क्या पता चलता है इतनी बड़ी दिल्ली है। और फिर जहाँ जाना ही नही, वहाँ की राह क्या पूछना।

रोशन : तुम तो शीरा लाने जा रही थी।

माँ : अरे, मैं तो भूल ही गई तेरे प्रेम के चक्कर में। अभी लाई।

रोशन : प्रेम जाने कहाँ होगी, किस हाल मे होगी।

दूसरा सीन

[एक बहुत खूबसूरत घर। नेपथ्य में विदेशी संगीत। सुबह का समय।]

प्रेम : हाल बेहाल कर दिया ! दस साल में दस दिन भी सुख के नहीं देखे। न किसी ने माँ कहा, न किसी ने साथी समझा।

दौलत : यह हीरे-जवाहरात ! यह लॉकर ! यह नौकर-चाकर ! यह बँगले बड़े-बड़े। संगमरमर के। यह दुनिया-भर से खरीदे हुए सुख के सामान ! क्या कमी है। क्या है इस दुनिया में जो मैंने दिन-रात जान मार-मारकर झूठ-सच बोलकर स्याह-सफ़ेद करके तुम्हारे क़दमों में लाकर न रखा हो।

प्रेम : इसमें मुझे एक ही रंग दीखता है—स्याही का रंग। मैं, मैं भाग जाना चाहती हूँ—दूर, बहुत दूर। जहाँ जमुना किनारे कोई झोपड़ी हो। जहाँ बस दाल-रोटी मिले पेट भरने को और सच्चा साथ मिले उजालों का। जहाँ कोई साहबे-जायदाद, कोई मैन ऑफ प्रापर्टी मुझे अपनी जाइ-दाद न समझे।

दौलत : तो कल की जाती आज चली जाओ। तुम्हें रोकता कौन है ? प्रेम की कमी नहीं है कोई आजकल कहीं भी।

प्रेम : जानती हूँ दौलत। मेरे जैसी लाखों मिल सकती हैं तुम्हें।

दौलत : तुम्हारा भी तो था कोई बाबू इनकमटैक्स वाला। क्या नाम था···रोशनलाल।

प्रेम : नाम मत लो रोशन का, दौलत। वह एक रूहानी रिश्ता था। रोशनी की राहों का।

दौलत : तो फिर देर क्या है ? क्यों भटक रही हो अँधेरे में ? चली जाओ न अपनी जानी-पहचानी रोशनी राहों में।

प्रेम : जाऊँगी, जब वक्त आएगा तो चली जाऊँगी (सिसकने लगती है।)

दौलत : प्रेम ! (आगे बढ़कर उसे छूता है।)

प्रेम : मत छुओ मुझे।

दौलत : देखो, सुबह-सुबह मूड मत खराब करो, अपना भी और मेरा भी। (घंटी बजती है) देखो तो कौन आया है सवेरे-सवेरे। मुंडू ! ओ मुंडू ! पता नही कहाँ मर गया कमबख्त ! लपककर देख लो जरा।

प्रेम : मैं नही देखती। अच्छा देखती हूँ। कौन ?

इंस्पेक्टर : इनकमटैक्स स्क्वेड।

प्रेम : हाय राम ! ए जी !

इंस्पेक्टर : दरवाजा बन्द मत कीजिए। मैं हूँ इनकमटैक्स इंस्पेक्टर दास। यह रहा मेरा कार्ड। आप है आई० टी० ओ० कुमारी क्षमा देवी। यह रहे वारण्ट ! आपके घर की तलाशी ली जाएगी। आप लोग जहाँ-जहाँ हैं वही-वही रहेंगे। घर की चाबियाँ हमें दे दीजिए और किसी चीज़ को छुइए नही। टेलीफोन कोई नही करेगा और हर आने वाली कॉल हम सुनेंगे।

क्षमा : आपके वे कहाँ है ?

प्रेम : मुझे नही मालूम। मुझे कुछ नही मालूम।

इंस्पेक्टर : घबराइए नही। हम कोई ऐसा काम नही करेंगे जो क़ानूनी न हो।

प्रेम : वह तो यहाँ नही हैं।

इंस्पेक्टर : वह है। हम जानते हैं वे बिलकुल यही है। और यह भी जान लीजिए, वह यहाँ से कही जा नही सकते। आसपास सब जगह सिपाही घेरे हुए है, सभी रास्तों को। बाथरूम में देखो।

दौलत : रुकिए, मैं आ रहा हूँ।

क्षमा : पडोसी को आवाज़ दीजिए। उसे गवाही देनी होगी।

प्रेम : भाई साहब, ज़रा आ जाना। एकदम।

इंस्पेक्टर : तलाशी शुरू करो। यह कपबोर्ड खोलो। सिरहाने के नीचे वह क्या है डायरी-सी और काग़ज़। सभी समेट लो। वह

मेज़ पर से चार घड़ियाँ उठाओ। ड्रेसिंग टेबुल पर वह हीरों का सैट, वे सोने की अँगूठियाँ। वह सभी उठाओ। लिस्ट बनाओ इनकी। वाह, कितना खूबसूरत सजा हुआ घर है आपका, मैडम। यह दो-दो टन के दस एयर कंडीशनर पाँच कमरों मे! यह जम्बो साइज़ के चार फ्रिज! ये हर कमरे में टेलीविज़न, टेप-रिकॉर्डर, ट्राजिस्टर। उफ! ये फ्रेंच और जापानी साड़ियों और सूटों के ढेर। यह सब आपके है? यह शाडलियर! यह वॉल टू वॉल कारपैट! यह पीरियड फर्नीचर! यह कट ग्लास! यह बोन चाइना! यह सब आप ही के हैं न?

प्रेम : जी हाँ।

क्षमा : इस्तेमाल होते है?

प्रेम : क्यों नही।

इंस्पेक्टर : यही?

प्रेम : बिलकुल।

क्षमा : कहाँ से आए है?

प्रेम : विलायत से।

इंस्पेक्टर : कौन लाया?

प्रेम : हम।

इंस्पेक्टर : पासपोर्ट दिखाइए।

क्षमा : हूँ। अरे, यह तो जाली दीखते हैं।

प्रेम : (चिल्लाकर) नही, नही, नही!

इंस्पेक्टर : घबराइए नही। बताइए न!

प्रेम : मैं कुछ नही जानती। मैं कुछ नही जानती। आप आइए न···दौलत (आकर) कहिए!

क्षमा : आइए। आइए। यह बताइए दीवान साहब यह इतनी सारी अच्छी-अच्छी चीज़ें आपने अपनी आमदनी से खरीदी हैं?

दौलत : बिलकुल।

इंस्पेक्टर : इसका हिसाब ?

दौलत : है मेरे पास···यह···यह देखिए।

क्षमा : इस पर पूरा इनकमटैक्स भरा आपने ?

दौलत : भरा होगा, ज़रूर भरा होगा। वह सब तो मेरे वकील करते हैं।

इंस्पेक्टर : आपकी रिटर्नस के मुताबिक आपकी सालाना आमदनी ३६ हजार रुपया है और आपके रहन-सहन, आपकी इन अनमोल चीजों से पता चलता है कि कम-से-कम ३६ लाख का सामान तो इसी कमरे में होगा।

दौलत : यह झूठ है। यह सब नकली है।

क्षमा : तो आप ही बताइए असली क्या है ? क्या करते है आप ?

दौलत : धन्धा।

इंस्पेक्टर . काला धन्धा !

दौलत : यह जाल है। यह फरेब है। यह धोखा है। यह शरीफ़ शहरियों पर नाजायज दबाव है। यह झूठ है।

क्षमा : तो आप ही बताइए सच क्या है।

दौलत : मैं एक्सपोर्ट करता हूँ। मैं इम्पोर्ट करता हूँ। मेरी इन्डस्ट्री है। मेरा फार्म है। मेरी फर्म है देश-विदेश में।

इंस्पेक्टर . गलीचे के नीचे पाँच पास-बुक मिली है। स्विस बैंक, बैंक ऑफ टोकियो, चार्टर्ड बैंक, अमरीकन एक्सप्रेस··· इतने सारे विदेशी बैंकों में इतना सारा पैसा ! जाहिर है सारे-का-सारा आपका है।

दौलत : यह भी झूठ है। उफ़ ! (दर्द में कराहता है।)

इंस्पेक्टर : मैं मानता हूँ। आपके यहाँ झूठ बहुत है और सच्चाई बहुत कम। पर इन्हें अलग-अलग भी आप ही को करना होगा। बोलिए-बोलिए। यह लीजिए कागज़-पेंसिल और लिखिए अपना बयान ! इनवेन्टरी पूरी हो गई। इन सब कागजों पर मोहर लगाकर दस्तखत करवाइए—इनके और गवाहों के। एक-एक कापी इन्हें दीजिए और आप

चलिए हमारे साथ।

दौलत : उफ़ !

प्रेम : देखिए, इनको दिल का दर्द रहता है। अभी भी अटैक हो गया लगता है। आप चलिए और जहाँ भी कहिए यह आज शाम या कल तक पहुँच जाएँगे।

क्षमा : ठीक है। समझ लीजिए कुछ हेरा-फेरी नहीं होगी।

प्रेम : आप कुछ पानी-वानी तो पीजिए।

इंस्पेक्टर : नहीं, शुक्रिया। चलें !

प्रेम : सुनिए, अगर हम बेकसूर साबित हो गए तो ? मेरा मतलब है हमने सब हिसाब-किताब दिखाकर आपकी तसल्ली कर दी तो ?

क्षमा : तो आपकी छुट्टी हो जाएगी। कानून तो अपराध का सत्यानाश करने के लिए बना है, अपराधी का नहीं।

दौलत : सुनवाई कहाँ होती है ?

इंस्पेक्टर : अव्वल तो हमारे यहाँ। नहीं तो फिर अपील में।

क्षमा : उसके लिए एपीलेट कमिश्नर है। असिस्टेंट एपीलेट कमिश्नर है।

दौलत : इस इलाके के कौन है ?

क्षमा : कोई भी हो, उससे आपको क्या लेना। वह तो इन्साफ़ ही करेंगे। वैसे यहाँ मिस्टर लाल हैं—रोशनलाल।

दौलत : रोशनलाल…।

इंस्पेक्टर : हो गया भई।

क्षमा : इन मकरान मारबल की बुत बनी हुई औरतों की एसेसमेंट कर ली ?

सिपाही : जी हाँ। एक औरत इनमें रबड़ की बनी हुई है।

क्षमा : छोड़ो उसे।

इंस्पेक्टर : चलें।

क्षमा : तो कल आपको आना होगा। ग्यारह बजे सुबह इन्द्रप्रस्थ एस्टेट में। मालूम है न ?

प्रेम : जी हाँ ! (चले जाते हैं।)

दौलत : मरवा दिया। कितने दिनों से चिल्ला रहा था, मत रखो यह सब यहाँ। छोड आओ मैके। अपने भाई के यहाँ। पर मेरी सुनता कौन है। अब भुगतो बैठ के।

प्रेम : कानून उनके लिए नही है क्या ? मरवा देती उनको भी मुफ्त मे ! कब से चिल्ला-चिल्लाकर कह रही हूँ मुझे नही चाहिए ऐशो-आराम की ये चीजें, जो मन का चैन छीनकर ले गईं।

दौलत : मत करो ऐसी बात जिससे मेरा दिल बैठ जाए। तुम मेरे सुख-दुख की साथी हो। तुम इस सब स्याह-सफेद की मालिक हो। अब जब मैं बैठा जा रहा हूँ तो तुम्हें उठना होगा और वही करना होगा जो मैं कहने जा रहा हूँ।

प्रेम : क्या करना होगा ?

दौलत : इन्तज़ाम जमानत का। सिफारिश का, बचाव का। हर हालत मे, हर सूरत मे, हर क़ीमत पर। तन, मन और धन से। समझी !

प्रेम : यह क्या कह रहे हो तुम ?

दौलत : मैंने बिलकुल वही कहा जो तुमने सुना। जानती हो उन्होंने एक नाम लिया था।

प्रेम : रोशन।

दौलत : हाँ, मै समझता हूँ यह बिलकुल वही रोशनलाल है जो तुम्हें रोशनी की राहें दिखाया करता था। और उसे अब भी कोई-न-कोई राह सुझानी होगी।

प्रेम : यह नही होगा। मेरा उससे कोई रिश्ता नहीं है और मान लो अगर हो भी तो···तो इतने समझदार हो तुम। तुम्ही बताओ, ऐसे मे वह करेगा कुछ। यह नही होगा।

दौलत : यह होगा और आज ही होगा। अभी, इसी वक्त।

प्रेम : हे राम ! मै क्या करूँ ? मै कहाँ जाऊँ ?

दौलत : मैंने कह दिया है। जाओ।

प्रेम : दाँव पर लगा दिया है तुमने मुझे भी, दौलत ! हार जाओगे।

दौलत . हार-जीत तो बनी हुई है ज़िन्दगी में। और यह सब भी यहाँ से उठवाओ।

प्रेम : जाने वह पहचानेगा भी कि नहीं। वे दरवाज़े कब के बन्द हो गए मेरे लिए।

दौलत : जाओ। जाकर खटखटाओ तो सही··· (साज़-संगीत।)

[प्रेम जाती है।]

तीसरा सीन

[रोशन का घर। प्रेम आकर दरवाजा खटखटाती है।]

रोशन : चले आइए, दरवाजा खुला है।

प्रेम : रोशन !

रोशन : प्रेम !

प्रेम : आगे नहीं आओगे, हमारी अगवानी करने के लिए।

रोशन : क्यों नहीं ! कैसी हो ?

प्रेम : कैसी लग रही हूँ ?

रोशन : बिलकुल वैसी जैसे बरसों पहले जमुनाजी की लहरों पर लहराती हुई, चहचहाती चिड़ियों की चहेती प्रेम लगा करती थी अपने रोशन को।

प्रेम : मैं अब भी वही हूँ। वही प्रेम। रोशन राहों के लिए भटकती हुई।

रोशन : तुम्हारे वह कैसे है ?

प्रेम : ठीक ही है।

रोशन : आये नहीं ?

प्रेम : आयेंगे।

रोशन : कैसे आ गईं रास्ता भूलकर ?

प्रेम : ऐसे ही मिलने।

रोशन : बैठो।

प्रेम : यह क्या लिए बैठे हो ?

रोशन : काम। काम बहुत बढ गया है अचानक। तुम तो जानती हो न ! आजकल रेड-वेड हो रहे है। पर तुमने मेरा पता कहाँ से लगाया ?

प्रेम : कौन नही जानता तुम्हे, रोशन। सुना है गरीबो की सुनते हो।

रोशन : अमीरों की भी सुन लेता हूँ पर अपील होनी चाहिए।

प्रेम : एक अपील मेरी भी है।

रोशन : सेक्स अपील।

प्रेम : वह भी होनी चाहिए ?

रोशन : है, बहुत है। कहो।

प्रेम : इतनी दूर से कैसे ! पास आओ न।

माँ : (आते हुए) मन्दिर जा रही हूँ, रोशन। वहीं से बाजार··· अरे, प्रेम, तुम ! तुम कब आयी ?

प्रेम : जब आपने देख लिया, माँ जी ! (प्रणाम करती है।)

माँ . जीती रहो। अरे, बिलकुल नही बदली तुम। दिल्ली में ही रहती हो ?

प्रेम : जी, माँ जी !

माँ : इसकी खूब खातिर करो भई ! बरसो बाद हमारे यहाँ आयी है। क्या पिएगी ?

रोशन : आप जाओ मन्दिर। मैं करता हूँ इनकी देखभाल।

माँ : मुंडू को बुलवाओ ! मुंडू ! ओ मुंडू ! काम के समय कभी नही सुनता।

प्रेम : क्यों चिन्ता करती हो, माँ जी। खा-पीकर आई हूँ।

माँ : वह तो जानती हूँ मैं। खाते-पीते घराने की बहू हो।

प्रेम : रोशन दुबला हो गया, माँ।

माँ : अपनी सुध-बुध तो लेता नही। देख न, क्या हाल कर लिया है। जरा समझा इसे।

रोशन : हम समझते हैं; समझाते है एक-दूसरे को, तुम मंदिर तो हो आओ।

मां : अच्छा, चलती हूँ। खाना खाकर जाना। आ जाऊँगी मैं दो घंटे मे।

रोशन : आप जाओ तो सही।

प्रेम : बेचारी कितना करती हैं।

रोशन : तुम्हारे लिए कौन नही करेगा, प्रेम !

प्रेम : हूँ। करोगे कुछ ?

रोशन : क्यों नही ! कहो तो।

प्रेम : कुछ भी।

रोशन : करूँगा।

प्रेम : करोगे ?

रोशन : हूँ-हूँ।

प्रेम : शादी ?

रोशन : प्रेम ! पागल हो गई हो।

प्रेम : रोशन ! मैं बहक गई हूँ। भटक-भटक के अँधेरों में। मैं आज तुमसे रोशनी की भीख माँगने आई हूँ। मुझे राह नही दिखाओगे ?

रोशन : मैं तो रास्ते का दीया जरूर हूँ पर नाम का ही रोशन हूँ। प्रेम, जानती हो फ़ैज़ क्या कहते है हम जैसों के बारे मे। कर न सकें जो रोशनी ऐसे दीये बुझा ही दो।

प्रेम : डूबते हुए सूरज ने कहा—मेरा काम कौन संभालेगा। धरती तसवीर की तरह खामोश रही। एक नन्हा-सा दीया बोला—मालिक, मैं—जितना भी हो सका।

रोशन : टैगोर ?

प्रेम : इन्ही बातो के लिए तरस गई थी मैं, रोशन !

रोशन : बात क्या है ?

प्रेम : हम लोग बहुत मुश्किल मे हैं।

रोशन : क्या हुआ ?

प्रेम : रेड। हाँ, रोशन, हमारे यहाँ आज इनकमटैक्स वालों का रेड हुआ।

रोशन : ओह, आई सी। कहाँ रहते हो आप लोग ?

प्रेम : अँधेरों में ही समझो। उजाला पार्क में।

रोशन : मिस्टर…दीवान।

प्रेम : जानते हो ?

रोशन : हूँ।

प्रेम : वह जानता है हमारी पुरानी दोस्ती को और उसी का वास्ता देकर उसने मुझे तुम्हारे पास भेजा है। अपने पुराने प्यार के पास।

रोशन : फ्रैंडशिप इज़ कान्स्टेंट इन ऑल अदर थिंग्स। सेव इन ऑफ़िस एण्ड अफेयर्स ऑफ़ लव।

प्रेम : नही-नही, ऐसा न कहो। शेक्सपीयर नहीं, रोशन चाहिए मुझे।

रोशन : इजाजत है ?

प्रेम : हाँ, उसने मुझे खुद लाइसेंस दिया है तन, मन, धन से तुम्हे रिझाने का।

रोशन : रिश्वत ! उसकी गैरत को क्या हुआ ?

प्रेम : वह समझता है लडाई और प्यार में सब जायज़ है। सब चलता है।

रोशन : क्या करता है वह ?

प्रेम : सच बताऊँ ?

रोशन : बिलकुल। कहो, सच-सच कहूँगी और…।

प्रेम : सच के सिवा सब-कुछ कहूँगी। हा-हा-हा !

रोशन : मैं जानता हूँ तुम झूठ नही बोल सकती। बताओ !

प्रेम : पहले वादा करो, मुझे इस नर्क से निकाल लोगे। नही तो न तो मैं आगे आ सकूँगी न पीछे जा पाऊँगी और वही बात होगी खैयाम वाली—फूल्ज़ यूअर रिवार्ड इज़ नाइदर हीयर नॉर देयर।

रोशन : देखो प्रेम, मैं नहीं जानता कि तुम किस कमजोरी में आकर क्या कहने जा रही हो। लेकिन इतना जान लो कि अगर दौलत जो हम समझते हैं वह है, तो आजकल के जागे हुए हिन्दुस्तान में, मैं तो क्या हम इन्सानों में सबसे बड़ा इन्सान या फिर भगवान भी उसे न बचा पायेंगे।

प्रेम : उफ ! मैं नहीं जानती, मैं क्या करूँ। क्या करूँ मैं ?

रोशन : वही जो तुम्हारी आत्मा की आवाज कहती है।

प्रेम : कह गई तो कहीं की नहीं रहूँगी, रोशन। वह मुझे जीने नहीं देगा।

रोशन : और मैं तुम्हें अपने जीते-जी जहाँ तक मुझसे बन सका, नहीं मरने दूँगा, प्रेम !

प्रेम : सच ! मुझे उस अन्धी दुनिया से निकाल पाओगे ?

रोशन : क्यों नहीं !

प्रेम : सच। तलाक़ दिलवा सकोगे मुझे ?

रोशन : उसके लिए अदालतों के दरवाज़े हमेशा खुले हैं, प्रेम। अगर उन सात बातों में से जो कानून की किताब में हैं, एक भी साबित हो जाए तो बिलकुल आज़ाद हो सकती हो तुम।

प्रेम : फिर ? फिर कहाँ जाऊँगी ? माँ के घर'''तुम्हारे'''।

रोशन : सभी जगह तुम्हारा स्वागत होगा। लेकिन तुमसे नाता जोड़कर मुझे नौकरी छोड़नी होगी।

प्रेम : फर्ज और प्यार की जो कशमकश तुम्हें परेशान कर रही है वह मेरी नस-नस को भी चूर-चूर कर रही है। नहीं रह सकती मैं बताये बिना, नहीं रह सकती।

रोशन : मैं तुम्हें मजबूर नहीं कर रहा। सोच लो।

प्रेम : सोच लिया, मेरा घरवाला एक बहुत बड़ा स्मगलर है और देश ही नहीं, विदेश के भी बहुत बड़े-बड़े स्मगलर्स के साथ उसकी हिस्सा-पत्ती है।

रोशन : इन काली करतूतों से तुम्हारा सम्बन्ध ?

प्रेम : धागों में बँधी हुई बेबस बीवी का, बस। लेकिन मैं सब

जानती हूँ।

रोशन : लिखकर दे सकोगी ?

प्रेम : उससे क्या होगा ?

रोशन : इन्साफ !

प्रेम : लो, अभी लो।

रोशन : एक बहुत बड़ी उलझन आसान कर दी तुमने। अब मैं तुम्हारी उलझन सुलझाऊँगा, लेकिन उसमे देर लगेगी।

प्रेम : क्या करना होगा मुझे ?

रोशन : इन्तजार !

प्रेम : तुम भी कर रहे हो न ?

रोशन . हूँ।

प्रेम : कब तक ?

रोशन : लम्बी जरूर है लेकिन ये राहे रोशनी की हैं, प्रेम। ये रिश्ते रूहानी है।

प्रेम : लेकिन अभी ? अभी तो अकेले चलना होगा, बिलकुल अकेले ! दूर, बहुत दूर !

[नेपथ्य मे संगीत—जौदी तोरे डाक शुने केऊ न आशे, तोबे एकला चालो, एकला चालो, एकला चालो रे !…]

चस्का चोरी का

पड़ी पाता हूँ कोई शै कहीं पर।
उठा लेता हूँ अपना दिल समझकर !

पात्र

•

वैरा
वेयस
मैनेजर
यार
चपरासी
कप्तान
सिपाही
बॉस
हसीना
डॉक्टर

पहला सीन
[रेस्तरां में]

बैरा : आपको मैनेजर साहब बुला रहे है।

बेवस : क्यों भई, हमने कौन-सा मोर्चा मारा है ?

बैरा : वही बतायेंगे।

बेवस : चलो, हम आ रहे हैं चाय पीकर।

बैरा : अभी बुलाया है हजूर, इसी दम।

बेवस : अरे, दमपुख्त आलू के शोरवे! शोर क्यों मचा रहा है बे! पल्ले से पी के ऐश कर रहे है तुम्हारे रेस्तरां में। जा, उन्हे यही बुला ला। उन्हे भी पिलायेंगे।

बैरा : आइए न साहब यह दो कदम पर। देखिए न, सामने ही तो बैठे है। चार कुर्सियां छोडकर।

बेवस : तो उन्ही से अर्ज करो न बच्चू कि अपने दो क़दम आगे बढा-कर इधर ही आ जाएँ।

बैरा : मानिए न।

बेवस : अच्छा यह अगले फ्लोर-शो का तमाशा देख के आते हैं।

बैरा : अभी तो क़व्वाली होगी—तमाशा खुद न बन जाना तमाशा देखने वालो।

बेवस : वह और भो अच्छा है।

बैरा : तो मैं बोल देता हूँ मैनेजर साहब को।

बेवस : अरे, गोली मार मैनेजर साहब को। तू बस बिल ला एकदम। अपने पैसे ले और चलता बन। छुट्टी कर अपनी भी और हमारी भी।

मैनेजर : (आते हुए) इतने सस्ते में कैसे छूट जाएँगे आप! मुझे भी ठिकाने लगाकर। आइए आप मेरे साथ।

बेवस : कहाँ जाना होगा ?

दूसरा सीन
[घर में दोस्त के साथ]

बेबस : सच यार, मजाक तो मजाक रहा पर अन्दर-ही-अन्दर शर्म बड़ी आई।

यार : क्यों करते हो ऐसे बेमानी मजाक बेबस भइया, जो बहुत भयानक सूरत में बदल सकते है। और कहीं पुलिस को पकड़वा दिया होता तो उलटे लेने के देने पड़ जाते। जमानत देने वाला भी कोई न मिलता।

बेबस : वह क्या कहते है, यह गुनाह बेलज्जत जानें मैं क्यों करता हूँ ? क्यों हो जाता हूँ अचानक बेबस। क्यों उठती है एक लहर-सी कि कोई भी काम की चीज जब कोई न देखता हो, चाहे वह किसी भी कीमत की न हो, उठा लूँ, चाहे वह बाद मे मेरे किसी भी काम न आए।

यार : चोरी तो चोरी होती है, चाहे राख की हो चाहे लाख की और फिर ऐसी छोटी-छोटी बेमानी चोरियाँ किस काम की ?

बेबस : मजा आता है, यार। जानते हो, बचपन में मैंने राह चलते हुए एक रेढी वाले का अमरूद उठा लिया था। उसने दिन-भर मुझे बिठाए रखा। शाम को जब पापा के प्यादे चारों तरफ दौड़ाए गए तो जा के बड़े साहब के बेटे को छुड़ाकर लाया गया।

यार : पिटाई हुई ?

बेबस : पिटाई ! अरे, सिकाई भी हुई। पर तुम जानो अपने को तो दो पड़ी, बिसर गईं। यारों की दूर बलाएँ गईं।

यार : फिर ?

बेबस : फिर क्या, एक बार मैंने कॉलेज होस्टल के खेत से कच्चे तर-बूज चुराये। प्रिंसिपल साहब ने पाँच रुपये जुर्माना किया। वह भी मैंने इधर-उधर से काबू करके भर तो दिया पर बड़ी नामोशी हुई।

यार : जब तुम्हें एहसास भी है अपने किए का, तो फिर ऐसा क्यों ? किसी साइकैटेरिस्ट को दिखायें तुम्हे ?

बेबस : वह भी सर्टीफिकेट ले चुका मैं कब का यार ! पर साइकटेरिस्ट से नही । वह कोई क्या कहते हैं क्लेप्टोमोनिया करके एक मूजी मर्ज होता है । मर्ज तो क्या, बला ही होगी ।

यार : यह तो एक खब्त हुआ । क्या मिलता है इसमें ?

बेबस : एक खास तरह की लज्जत होती है इसमें । अंग्रेजी समझते हो ?

यार : बुद्धू बना रहे हो मुझे भी ?

बेबस : मजाक मे भी मजा आता है । एक खास किस्म की किक होती है इसमे भी ।

यार : यह तो गधापन हुआ ।

बेबस : कुछ भी कह लो ।

यार : बच कैसे जाते हो ?

बेबस : बच ही जाता हूँ अकसर । भई, कोई लाख-दो-लाख की चोरी थोड़े ही करता हूँ । फँस भी जाता हूँ । पर मेरी वजह-कतह को देखकर, मेरी टीप-टाप, मेरी शराफ़त, मेरी पोजीशन को देखकर अकसर शक व शुबह मुझसे उठाकर दूसरो पर लाद दिया जाता है । तुम जानो, आखिर मैं ही तो अकेला चोर नही हूँ न दुनिया मे । और फिर मैं और चोरों जैसा चोर भी नही हूँ ।

यार : चोर की दुम हो । देखो, सौ दिन तुम्हारे जैसे लोगों के होते है, और एक दिन हम जैसों का । वह दिन दूर नही बेटा ।

बेबस : वह तो आ के चला भी गया मेरे साधूराम !

यार : कब ?

बेबस : अभी, अगले ही रोज । किसी को बताना नही । दफ्तर में सुबह-ही-सुबह ग्यारह बजे की चाय के बाद चपरासी आया । कुछ सोचता-सा, कुछ झिझकता-सा । कभी मेरे मुँह की तरफ

देखता हुआ। कभी मेरे बैग की तरफ। जब सस्पेंस एकदम क्लाइमेक्स पर पहुँच गया…।

तीसरा सीन

[फ्लैश बैक। दफ्तर का कमरा]

चपरासी : साहब जी !

वेबस : जी।

चपरासी : आजकल बल्ब बड़े फ्यूज हो रहे हैं।

वेबस : हो रहे होंगे।

चपरासी : बिना जले भी खराब हो सकते हैं?

वेबस : क्यों नहीं, जो जन्म से ही बुझा हुआ होगा वह कैसे जलेगा?

चपरासी : नहीं जी। मैं खुद टैस्ट करके लाया था जी, कल चार बल्ब आपके कमरे के। मैं चला गया न चार बजे आपसे छुट्टी लेकर। सुबह आया तो देखा, थे तो चारों के चारों अपनी-अपनी जगह पर, पर उनमें रोशनी नहीं थी।

वेबस : करेन्ट नहीं होगा।

चपरासी : करन्ट था जी। मुझे मारा। आप भी देख लो।

वेबस : अच्छा-अच्छा। जाओ, बदलवा के लाओ। और देखो, यह साबुन कहाँ गया?

चपरासी : यह भी मैं आपसे पूछने वाला था साहब जी। सुबह सात बजे तो था। फराश ने हाथ धोये थे।

वेबस : मेरे साबुन से। क्या मतलब? वही उठा के ले गया होगा। रिपोर्ट करो उसकी।

चपरासी : अब किस-किसकी, किसने, कहाँ तक रिपोर्ट करूँ साहब जी। आए दिन कभी गिलास गायब, कभी जग, कभी पेंसिल, कभी पैन।

वेबस : तुम ठेकेदार हो? भई, काम में आने वाली चीजें हैं, काम में

आ गई।

चपरासी . नहीं जी। वह बाबू कहता है, मैं चोर हूँ। फराश बेईमान है, दफ्तरी दगाबाज है।

बेबस : जो है सो तो है।

चपरासी : सो तो है, पर हो सकता है जो नहीं है, वह हो।

बेबस . यह भी सोचने की बात है। (दरवाजे पर खट-खट)

कप्तान : मे आई कम इन ?

बेबस : आइए।

कप्तान · गुड मार्निंग। देखिए, मैं सिक्योरिटी से आया हूँ। कैप्टेन चौकस। यह रहा मेरा कार्ड।

बेबस : आइए, बैठिए। कहिए, मैं आपके लिए क्या कर सकता हूँ ?

कप्तान : करना तो हमें ही है आपके लिए कुछ।

बेबस : कीजिए।

कप्तान : आपको गार्ड ने रोका था गेट पर, बैग की तलाशी देने के लिए।

बेबस : हूँ-हूँ।

कप्तान : फिर आपने दी नहीं।

बेबस : क्यों देता ?

कप्तान : देखिए, यह हुक्म है सरकार का, जिसके मुताबिक आप कोई मैगजीन, कोई अख़बार अन्दर नहीं ले जा सकते।

बेबस : आप कैसे कहते है, मैं लाता हूँ।

कप्तान : परसों भी उसने आपको रोका था। आपके हाथ में मैगज़ीन था। कल भी आप ज़बर्दस्ती एक और अन्दर ले गए और आज आप बैग लाए हैं जिसे आपने खोलकर दिखाने में इनकार किया।

बेबस : हाँ, किया। कर लीजिए, क्या करते है आप ?

कप्तान : मै तलाशी लेता हूँ इसकी।

बेबस : इसको हाथ मत लगाइये। हाथापाई हो जाएगी।

कप्तान : आप ऐसे नहीं मानेंगे। मैं अभी सिपाही बुलवाता हूँ। (सीटी

बजाता है) यह थैला हिरासत में ले लो।

[सिपाही थैला छीन लेता है।]

वेवस : यह क्या कर रहे हैं आप ?

कप्तान : कानूनी कार्रवाई।

वेवस : मैं बड़े बॉस के पास जाऊँगा। मैं अदालत के दरवाज़े खट-खटाऊँगा। मैं आपको डिसमिस करा दूंगा। मैं आपको कैद करा दूंगा।

सिपाही : (थैला खोलकर देखते हुए) तीन मैगज़ीन, चार लाटू, एक टिकिया साबुन, एक डिब्बा खाने का, कुछ सफेद कागज़, एक मोमबत्ती, एक माचिस और एक गिलास।

कप्तान : बनाओ-बनाओ, इनवेंटरी बनाओ। शहादत डलवाओ और दस्तखत करवाओ इनके भी।

वेवस : यह सरासर अंधेर है।

कप्तान : अभी दिखाई देगा, अंधेर है कि सवेरे है। यह बल्ब जो है, यह आपके हैं ?

वेवस : क्यों नहीं ?

कप्तान : हूँ।

चपरासी : अरे मालिक ! मिल गए सारे के सारे लाटू, मिल गए माई-बाप। साबुन भी। गिलास भी। एक लोटा भी था।

वेवस : बकवास बन्द करो।

कप्तान : बोलो-बोलो। इसका बयान भी लिखते चलो।

वेवस : मैं फोन करता हूँ।

कप्तान : आप कुछ नहीं करेंगे। बराबर अपनी सीट पर बैठे रहेंगे। कितने दिनों से छोटी-छोटी चोरियों के इल्जाम छोटे-मोटे गरीब कर्मचारियों पर लग रहे थे अंधाधुध। आज इन्साफ़ होगा इसका। कुल कितनी मालियत का होगा यह सब सामान ?

सिपाही : पन्द्रह-बीस मुश्किल से।

कप्तान : यह सब सामान आपका है ?

वेबस : और क्या आपके बाप का है ?
कप्तान : तमीज से बात कीजिए।
वेबस : बदतमीज़ी तो आपने दिखाई।
कप्तान : यू आर अण्डर अरेस्ट। यह चोरी का माल है।
वेबस : अभी तो इल्ज़ाम भी नही लगाया आपने। कैद कैसे कर लोगे ?
कप्तान : हूँ। देखता हूँ।
बॉस : (आते हुए) ऐसा क्या देख-दिखा रहे हो भाई कि सारा दफ़्तर सिर पर उठा लिया ?
कप्तान : पूछिए इनसे।
बॉस : क्यों भई, क्या परेशानी है ?
वेबस : ऐसे ही सरासर बेबुनियाद इल्ज़ाम पर इल्ज़ाम लगाए चले जा रहे है। मैं शराफ़त में चुप हूँ और आप है कि बराबर चोर ठहराए जा रहे है मुझे। चोर दिखता हूँ मैं !
कप्तान : और क्या चोरो के सिर पर सीग होते है ?
बॉस : पर हुआ क्या, मै भी तो सुनूं।
वेबस : कहते है यह चार पैसे की माचिस चुराई है मैंने। यह टके-टके के बल्ब उठाए हैं। यह सडा-सा साबुन जो मेरे थैले से निकला है मेरा नहीं है। भला कोई बात हुई ? मैं कोई छोटा-मोटा आदमी नही तुम्हारी तरह। किसी भूल मे न रहना। मैं अगर चोरी भी करूँगा तो बडी सारी।
बॉस : देखिए जरा सरकारी मोहर है इन चीजों पर कोई।
वेबस : देखिए, देखिए।
सिपाही : दिखती तो नही, लेकिन…।
वेबस : लेकिन-वेकिन क्या। ऐनक लगाकर जरा और गौर से देखिए। चले थे इल्ज़ाम लगाने।
कप्तान : हूँ ! चोरी और उस पर सीनाजोरी। कोई जरूरी नही मोहर लगी हो। आजकल कई चीजें है जो नही मिलती सरकारी स्टॉक मे। बाजार से ले लेते हैं लोकल परचेज़ करके।
बॉस : हूँ, तो आपने भी बाजार से खरीदी है।

वेबस : वेशक !

कप्तान : चपरासी को बुलवाओ। फराश को। बाबू को। सबसे पुछवाओ।

बॉस : देखिए मैं इसका बडा बॉस हूँ। यह मामला मेरे दफ़्तर का है। मैं निपट लूँगा। और वैसे देखा जाए तो इस अफसर की इनटेगरिटी इतनी आसानी से इस इल्ज़ाम पर खटाई मे डाल देना और वह भी तब जबकि शक-शुबह बेनीफिट ऑफ़ डाउट इनके हक मे है, मुनासिब नही होगा। आप जाइए इतमीनान मे। मै सँभाल लूँगा सब-कुछ।

कप्तान . जैसा आप मुनासिब समझें।

बॉस : थैंक यू। आप जाओ सब लोग। हमें जरा अकेला छोड़ दो।

सिपाही : चलो भई, चलो।

[सब लोग जाते है।]

वेबस : मर···मर···मर···।

बॉम : शर्म आनी चाहिए तुम्हें। सच-सच बताओ। यह सब सरकारी है या तुम्हारी ?

वेबस : बिलकुल मेरी है सरकार।

बॉस : तुम झूठ बोल रहे हो।

बेबस : नही-नही।

बॉस · नहीं-नही क्या ?

बेबस : आप यकीन कीजिए, सर !

बॉस : हूँ। होता तो नही, पर तुम्हारी काबलियत और तुम्हारे अच्छे रिकॉर्ड को देखते हुए इसे आज यही रफा-दफा करता हूँ हिदायत के साथ। वरबल वार्निंग देता हूँ। आइन्दा ऐसा कुछ नहीं सुनूँगा।

वेबस : थैंक यू, सर !

बॉस : ठीक है। पर जानते हो उस शीशे में से जहाँ तुम साफ दिखाई देते थे आज तक, आज एक दरार-सी आ गई है। अच्छा, चलता हूँ।

चौथा सीन
[घर में]

बेबस : चला तो वह गया, पर मत पूछ यार क्या हालत हुई मेरी ! ऐसे महसूस हुआ बहुत दिन जैसे मैंने अपना चैन ही चुरा लिया हो।

यार : उसके बाद भी तुमने कुछ चुराया ?

बेबस : चुराने को तो चुराया। कहो…।

यार : चमचा, कहीं तरबूज !

बेबस : नहीं यार, अन्दाज़ा लगाओ।

यार : कोई लाटू या लालटेन ?

बेबस · नहीं, यार !

यार : डाका डाला कोई ?

बेबस : नहीं भई, नहीं।

यार : तो फिर ?

बेबस : एक अन्दाज़ा और लगाओ।

यार : अता-पता दो।

बेबस : बे-भाव की चीजें समझो।

यार : अनमोल !

बेबस : हूँ !

यार : चैन चुराने की बात कर रहे थे तुम।

बेबस : हाँ, जब अपने ही हाथों अपना चैन लुटा हुआ पाया तो इस कमी को पूरा करने के लिए…।

यार : तुमने किसी का चैन चुरा लिया।

बेबस : करैक्ट ! थाउजेंड परसेंट करैक्ट !

यार : फिर ?

बेबस : चैन से चैन की तलाफी या यूँ कहो कि खानापूरी तो हो गई लेकिन वह चस्का चोरी का चूँकि बराबर बना हुआ था इसलिए साथ-साथ अबके एक दिल भी चुरा लिया।

यार : जाहिर है किसी हसीना का होगा।
बेबस : नया नहीं था; लगता था पहले भी हाथ लग चुके थे उसको।
यार : तो ?
बेबस : तो तुम जानो ऐसे मामलों में आम मुहावरों से बात नहीं बनती। इसलिए शायरी शुरू की।
यार : हा-हा-हा। तुम और अशार !
बेबस : हाँ, हैरानी तो हो रही होगी तुम्हें, लेकिन तुम जानो, जरूरत अचानक आ पड़ी थी, इसलिए अच्छे-अच्छे शेर उनको रिझाने के लिए चुराने पड़े।

पाँचवाँ सीन

[हसीना का घर]

बेबस : अर्ज किया है।
हसीना : इरशाद !
बेबस : अपनी ताज़ा-तरीन तख़लीक का हासिले गज़ल शेर पेश करता हूँ।
हसीना : तरन्नुम से।
बेबस : लीजिए। हाँ तो हुजूर, शेर कहा है कि कहते हैं (खाँसकर, गाकर)—
कहते हैं नहीं देंगे, दिल अगर पड़ा पाया।
अजी दिल कहाँ कि गुम कीजिए हमने मुद्दआ पाया।
हसीना : वाह ! पर यह शेर तो उलटे मुझे कहना चाहिए था।
बेबस : आप अपना लीजिए। मैं और लिख लूँगा।
हसीना : कहाँ से ?
बेबस : कहाँ से···आ···आ···आमद से···आ···आ···इन्सपीरेशन से आ···आ···।
हसीना : पर यह शेर आपका है ?

वेबस : बन्दा किस काबिल है ! अपना ही समझिए।

हसीना : पर इसमें तो गालिब का रंग झलकता है।

वेबस : पुरानी शराब नई बोतलो मे डाल दी जाए तो कुछ ऐसा ही महसूस होता है। आप और सुनिए—
पडी पाता हूँ कोई शै कही पर।
उठा लेता हूँ अपना दिल समझकर।

हसीना : यह भी मैंने सुना हुआ है !

वेबस : मुझी से सुना होगा !

हसीना : अजीब पशोपंज मे डाल दिया आपने। एक-आध और सुनाइए।

वेबस : एक-आध और सुनाइए ! दिवान के दिवान खुलवा लीजिए चाहे तो। फिलबंदी कहता हूँ इसी संगलाख ज़मीन मे। हाँ तो, चर्चा चल रही थी चोरी की। आजाद बहर में अर्ज किया है। तहतुललफ़्ज होगा पर तेरी···तेरी दीवार के साये तले बैठे हैं तेरा क्या लेते हैं···हम कोई चोर नही।

हसीना : लक़ लक ?

वेबस : लग रहा है न ? हाँ, लगेगा। मिलेगा। मिलेगा तो सही कही-न-कही, पर बड़े शायर का कुलाबा किसी दूसरे शायर से। हर बड़े अदीब का अदब किसी दूसरे अदीब से। हर दिलफेंक आशिक का दिल किसी दूसरे दिल से···।

हसीना : बस-बस, रहने दीजिए यह दिल फेंकने और शेर उठाने के अफसाने ! कहना क्या चाहते हो ?

वेबस : दिल की बात।

हसीना : तो कह भी चुको।

वेबस : कह नही सकते उनसे दिल की बात। रोज मिलते है, बात होती है।

हसीना : लब पे आई है बात कह डालो। बात कहने की बात होती है।

वेबस : माशा अल्ला ! क्या गिरह बाँधी है ! यह आपका अपना है ?

हसीना : वह आपका अपना था ?

बेबस : था भी और नहीं भी। वैसे होगा तो शायद आप ही का ही, या फिर शायद आपके वालिदे बुजुर्गवार का, पर मैंने अपना लिया है।

हसीना : शर्म आनी चाहिए आपको। यह अशआर न मेरे है, न आपके। ले जाइए अपना दिल। और दीजिए इसे किसी थानेदार के रिश्तेदार को, ताकि वह इसे कम-से-कम हफ्ता दस दिन की क़ैद बामुशक्कत दे के ठिकाने लगा दे। ताकि आपको पता तो चले कैसे चैन चुराते है लोगो का ! कैसे उड़ा के ले जाते हैं दिल दिलवालो का चुराए हुए शेरों से !

बेबस : ऐसी चोरियाँ कोई चोरियाँ थोडे ही कहलाती है ?

हसीना : क्यो नही ?

बेबस : ताजीराते हिन्द जो मैंने पढी है, उसमे चैन चुराने वालो की खातिर-तवाजों का तो इन्तजाम है, चैन चुराने वालो का जिक्र नही है। मानिए आप।

हसीना : मुझे कुछ नही मानना। आप तशरीफ ले जाते हैं कि बुलवाऊँ इन अशआर के असली मालिको को और तमाशा देखूँ आप की पिटाई का।

बेबस : तमाशा ! आ···आ···।

हसीना : देखती हूँ, अभी देखती हूँ आपको भी, और आपके शौके शायरी और चस्काए चोरी को भी।

बेबस : सुनिए-सुनिए, अर्ज किया है···।

हसीना : अर्ज के बच्चे, मेरे अब्बाजान के अशआर सुना के मुझे ही पटाता है ! अभी तेरी खबर लेते है हम दोनो। बाबा··· बाबा···।

बेबस : नही बाबा ! तौबा ! तौबा मेरी ! मैं बाज आया इस मरी शायरी से।

हसीना : लगाओ कान को हाथ।

बेबस : तौबा ! मेरी तौबा ! मेरे बाबा की तौबा ! मेरे बाबा के बाबा की तौबा।···बस-बस, उठा लो पानदान अपना।

हसीना : फिर वही पानदान…।
बेबस : खानदान। मेरे खानदान में अब कोई शायरी नहीं करेगा।
हसीना : चोरी !
बेबस : तोबा-तोबा-तोबा ! चोरी का नाम नहीं लूंगा। और शायरी का भी। भाड़ में जाए शायरी और जहन्नुम में जाए आशिकी।
हसीना : कहो, मगर अपने कहो। चुराने का क्या मतलब ?
बेबस : नहीं जी, वैसे भी क्या मतलब ? अच्छा !
हसीना : जाओ और ख़बरदार !
बेबस : आप बेफिक्र रहिए। ऐसा मौका फिर नहीं दूंगा।

छठा सीन

[बेबस के घर में]

यार : हा-हा-हा !
बेबस : वह दिन और आज का दिन, उसके बाद मैंने शेर कभी नहीं चुराया और दिल-विल, चैन-वैन चुराने का चस्का भी त्याग दिया।
यार : और अब क्या करते हो ?
बेबस : अब वह क्या कहते हैं क्लेप्टोमोनिया का चक्कर-वक्कर तो उतना नहीं। हाँ, अलबत्ता कोई चीज सड़क पर पड़ी हुई, रद्दी की टोकरी में गिरी हुई, या कहीं किसी अकेली काउंटर पर किसी की रह गई हो, तो भले ही उठा लूं। बस उठाने की खातिर। वैसे शौक बहुत कम हो गया छोटी-मोटी चोरियों का।
यार : फिर भी तुम्हें किसी साइकैटेरिस्ट को दिखाना मुनासिब होगा।

सातवाँ सीन
[डॉक्टर का क्लीनिक]

डॉक्टर : (अन्दर से) बैठिए, मैं अभी आ रही हूँ। अखबार उठा लीजिए। मैगज़ीन भी वहीं मिलेंगे।

वेवस : जी, अच्छा। एनुअल आर्ट नम्बर! अरे, वाह! मुगल मिनियेचर्स! मोनालीसा! मुहम्मद तुगलक! यह तो मैं कब से ढूँढ रहा था। (आहिस्ता से) एक-आध उड़ाओ। क्या पता चलेगा।

डॉक्टर : (अन्दर से) जी!

वेवस : आप ने कुछ नहीं कहा, डॉक्टर साहब!

डॉक्टर : (दूर से) बोर तो नहीं हो गए?

वेवस : इतने सजे-सजाए वेटिंग लाउंज में कौन बोर होगा, डॉक्टर साहब! मैं मजे में हूँ। आप लीजिए पूरा टाइम पहले वाले पुराने मरीज़ के साथ। (अपने आपमें) वाह, कितना प्यारा पेपरवेट है! दुनिया दिखाई दे रही है इसके अन्दर। यह भी जायेगा जेब के अन्दर! क्या पता चलेगा।

डॉक्टर : (दूर से) पता चला।

वेवस : चल गया डॉक्टर साहब! मैगज़ीन भी मिल गए और आप चिन्ता मत कीजिए। मुझे जो चाहिए ले लूँगा। लगता है अपने यहाँ ही हूँ। आइ एम वैरी मच एट होम हियर।

डॉक्टर : गुड!

वेवस : और...और नहीं। कहीं पकड़ा ही न जाऊँ। पहली-पहली मुलाकात है। पर...पर छिपाऊँ कहाँ? अन्दर वाली जेब में? कहीं कपड़े ही न उतारने पड़ जाएँ। क्या पता है, डॉक्टरी मुआइने की नौबत आ जाए। नहीं-नहीं। नहीं आएगी। मैं मर्द हूँ। कुछ तो आँखों की शर्म, कुछ लिहाज़...पर डॉक्टरों का क्या है?

डॉक्टर : (अन्दर आती है) किससे बात हो रही है अकेले में?

वेबस : डॉ···डॉ···डॉक्टर साहब आ···आप ही से···।
डॉक्टर : आप वेबस हैं न ?
वेबस : जी हाँ, जी हाँ।
डॉक्टर : क्लेप्टोमोनिया कम प्लेजरिज्म का केस है न आपका ? आइए, यहाँ बैठिए। कब से है आपको यह बीमारी ?
वेबस : बीमारी ?
डॉक्टर : मेरा मतलब है, यह शौक छोटी-मोटी चीजें चुराने का।
वेबस : उसने आपको सब-कुछ बता दिया।
डॉक्टर : देखिए इसमें कोई बुराई नहीं है। यह एक आदत है जो अच्छी नहीं समझी जाती और आप जैसे अच्छे ओहदे वाले खानदानी लड़के को मैं समझती हूँ इतनी छोटी-मोटी चीजों की परवाह भी नहीं होगी। देखिए न।
वेबस : जी, देख रहा हूँ।
डॉक्टर : यह पेपरवेट्स की जोड़ी है···अरे, दूसरा कहाँ गया ? सिस्टर ! सिस्टर !
वेबस : क्या हुआ ?
डॉक्टर : यहाँ आपने ऐसे दो नहीं देखे ?
वेबस : जब मैं आया तो एक ही था। एक को अलबत्ता मैंने यहाँ से जाते हुए जरूर देखा।
डॉक्टर : आदमी को या इसको ?
वेबस : आदमी को।
डॉक्टर : तो यह कहाँ गया ?···किसी की जेब में तो नहीं चला गया होगा अचानक अपने-आप।
वेबस : (झूठी हल्की हँसी) आजकल क्या पता चलता है, डॉक्टर साहब !
डॉक्टर : अभी पता चलेगा। ऐक्सक्यूज मी ! (नम्बर घुमाती है) हैलो डॉ० धीरज हियर ! वे आ गए। भेज दीजिए अन्दर।
वेबस : और कोई लाइलाज आ रहा है, डॉक्टर साहब !
डॉक्टर : लाइलाज नहीं इलाज आ रहा है आपका।

बेबस : चलता-फिरता ?

डॉक्टर : घबराइए नही । हाँ तो मै बता रही थी, यह क्लेप्टोमोनिया भी जैसा कि नाम से जाहिर है एक मोनिया है। एक जनून है। एक खब्त है। एक तरह का पागलपन है।

बेबस : मैं पागल हो गया हूँ डॉक्टर साहब !

डॉक्टर : नहीं-नहीं, आप तो बडे समझदार हो। होश वाले हो। वैसे बड़े-बडे जीनियस, आपने सुना होगा जनूनी रहे है। किसी-न-किसी तरह का जनून, कोई कमजोरी, कोई कमी हममें से हर एक मे हो सकती है। चाहे वह अमीर हो, गरीब हो। फ़कीर हो या बादशाह हो। देखिए, मैं आपको दिखाती हूँ तसवीर एक ऐसे इंसान की, नाम तो आपने सुना होगा, मुहम्मद बिन तुगलक···अरे, यह तसवीर कहाँ गई ?···आपने तो नही देखी ?

बेबस : नही तो।

डॉक्टर : कभी नही ?

बेबस : जी हाँ, जी नही।

डॉक्टर : आर यू श्योर ?

बेबस : आप बात बढाकर शशोपंज मे डाल देते है। यह सस्पेंस और न बढाइए। बताइए न।

डॉक्टर : मैं समझती थी, बढा तो आप रहे है। आपका डॉक्टरी मुआइना किया जाएगा।

बेबस : ऐसे ही कपड़े पहने-पहनाए हो जाएगा ?

डॉक्टर : नही।

बेबस : नही-नही डॉक्टर साहब मुझे शर्म आएगी।

डॉक्टर : घबराइए नहीं, कोई और भी होगा।

बेबस : तो और शर्म आएगी।

डॉक्टर : आप कुछ छिपा रहे है इसीलिए।

बेबस : नही-नहीं। हूँ भी, नही भी।

डॉक्टर : वे पत्ते से क्या आपकी निचली जेब से बाहर निकल रहे हैं ?

वेबस : है-है-है। मनी-प्लाट है, डॉक्टर साहब। आपकी क्लीनिक के बाहर लगे हुए थे। इधर-उधर कोई नहीं था, मैंने एक टहनी तोड़ ली।

डॉक्टर : कोई बात नहीं।

वेबस . वैसे सुना है, चुराकर लगाओ तो फलता है। तो यह चोरी तो चोरी न हुई डॉक्टर साहब ?

डॉक्टर : जो ईमान और कानून की नजरों में नामुनासिब है, वह मुनासिब कैसे हो सकता है, आप ही बताइए।

वेबस : सो तो है। सो तो है।

डॉक्टर : आपने यहाँ से और क्या उठाया ?

वेबस : कुछ नहीं, कुछ नहीं। डॉक्टर साहब, मैं चलूँ; मुझे घबराहट हो रही है।

डॉक्टर : घबराइए नहीं। *अच्छा यह बताइए,* आपने *जिन्दगी* में और क्या किया है। मेरा मतलब है दफ्तर में नौकरी के अलावा।

वेबस : मैंने ! मैंने मुहब्बत की है। शायरी की है'''मैंने'''।

डॉक्टर : उसमें भी कहीं कभी चोरी से काम लिया ! मेरा मतलब है कभी कोई दिल चुराया हो, शेर चुराया हो !

वेबस . है-हैं-है'''आप मजाक करने लगीं। भला वह चोरी भी कोई चोरी हुई, डॉक्टर साहब ! कमाल कर रही हैं आप भी ! कहाँ आशिक, कहाँ शायर, कहाँ चोर।

डॉक्टर : लवर्स लूनैटिक्स एण्ड पोयट्स आर ऑल ऑफ इमेजीनेशन इमपैक्ट।

वेबस : समझा नहीं।

डॉक्टर : समझाते हैं अभी'''(खट-खट) वेट ऑन प्लीज। जरा ठहरिए। एक बात और बताइए, कभी आपकी जिन्दगी में कहीं कोई कमी रही ?

वेबस : नहीं तो। जैसे खानदानी खाते-पीते मिडिल क्लास लोग होते हैं, वैसे हम हैं।

डॉक्टर : तभी तो।

बेबस : मैं बहुत ईमानदार आदमी हूँ डॉक्टर साहब ! और मेरे बाबा की ईमानदारी तो दूर-दूर तक मशहूर थी। उस जमाने के तहसीलदार आप जानो बादशाह होते थे। फिर भी दौरे पर जाते तो मजाल कि किसी के यहाँ पानी भी पीते। घोड़ी को भी घर आकर दाना-पानी नसीब होता।

डॉक्टर : ओह आई सी। तनख्वाह मे पूरा पड जाता था।

बेबस : नही भी पडता था, तो मन मार लेते। कई एक चीजो को तरसने भी रहते। पर कभी किसी के आगे किसी चीज के लिए हाथ नही फैलाए।

डॉक्टर : तो अब क्या हो गया ?

बेबस : कह नही सकता। अब आप मे क्या छिपाना। शर्म भी आती है। नदामत भी होती है, फिर भी जाने क्यों बेबस होकर यही कोई छोटी-मोटी चीज चुराने से पीछे नही हटता, चाहे वह मेरे किसी काम की न हो। इसका इलाज कर देंगी आप ?

डॉक्टर : क्यो नही··· (खट-खट) आइए। (कुछ लोग अन्दर आते है) इनसे मिल चुके हैं आप ?

बेबस : अ···रे···अ···रे···आ···प···मैनेजर साहब···।

मैनेजर : चमचा चुराते हुए तकलीफ नही हुई आपको। शर्म आनी चाहिए। लाइए, चुकाइए अपना बिल और जाइए और फिर कभी यहाँ क़दम रखा तो हमसे बुरा कोई न होगा।

बेबस : नहीं-नही, नही मिलना मुझे इनमे···तुम···तुम कप्तान ! यह चार पैसे की माचिस चुराई है मैंने ! यह टके-टके के बल्ब ! यह सड़ा-मा साबुन !

कप्तान : आप ऐसे नही मानेंगे। मैं अभी सिपाही बुलवाता हूँ। (सीटी) यह थैला हिरासत मे ले लो।

बेबस : खुदा के लिए मुझे मेरे हाल पर छोड़ दो ! आ···आप··· बा···बा···बॉस !

बॉस : शर्म आनी चाहिए तुम्हे। तुम्हारे अच्छे रिकॉर्ड को देखकर आज यही रफा-दफा करता हूँ।

बेबस : उफ़ ! आप ! आपकी कमी थी !

हसीना : दस दिन की कैद बामुशक्कत मिले, ताकि पता तो चले आप कैसे चैन चुराते हैं लोगों का। कैसे उड़ा के ले जाते हैं दिल दिलवालों का, चुराये हुए शेरों से !

बेबस : मुझे नही कराना इलाज अपना।

डॉक्टर : अब मैं आपसे निपटती हूँ। निकालिए वह पेपरवेट ! मैगज़ीन से चुराई हुई तसवीरें ! वह···वह···।

बेबस : (फेंकते हुए) यह दो पैसे का पत्ता। यह मेज पर पडा हुआ पत्थर। यह रद्दी कागज़ के टुकडे। सँभाल लीजिए इन्हे और खुदा के लिए मुझे मेरे हाल पर छोड दीजिए।

डॉक्टर : सुना है आपके घर मे हर चीज़ चुराई हुई है।

बेबस : (जोर से) यह झूठ है ! यह बेइज्जती है। यह सजा है ! आइ एम शॉक्ड !

डॉक्टर : यही इलाज है आपका।

बेबस : लेकिन मैं बीमार नहीं हूँ।

डॉक्टर : तो क्या हो ?

कईआवाज़े : चोर !

बेबस : नहीं, नही, नही। मैं चोर नही हूँ।

आत्मा : (गूँज के साथ) चोर तो नहीं···हाँ, बस जरा-सा चस्का है तुम्हें।

बेबस : यह आवाज कहाँ से आ रही है ? कौन है ? कौन है ?

डॉक्टर : कोई भी तो नही।

बेबस : है, कोई है ! जो मेरे दिल के दरवाजे खटखटा रहा है।

डॉक्टर : यह आपकी अपनी आत्मा की आवाज है। सुन रहे हो ?

बेबस : (सिसकते हुए) हाँ !

इकलौता बेटा

जिन चिरागों से हुआ करते हैं आँगन रोशन,
उन चिरागों से कई घर भी जले हैं अक्सर।

पहला सीन
[बस में]

कंडक्टर : और कोई विना टिकट ?

प्रकाश : दफ़्तर एक ।

कंडक्टर : डाकखाने से ?

प्रकाश : नही, भरती दफ़्तर से ।

कंडक्टर : साठ पैसे ।

प्रकाश : हूँ ।

कंडक्टर : क्या हुआ ?

प्रकाश : अ···आ···कुछ नही । यह तीस पैसे में कहाँ तक पहुँच सकते है ?

कंडक्टर : अगले मोड़ तक । क्यो, क्या हुआ ?

प्रकाश : कुछ नही, कुछ नही । यह लो तीस ।

कंडक्टर : जेब कट गई ।

प्रकाश : नही तो ।

कंडक्टर : बटवा भूल गये ?

प्रकाश : नही-नही । मोड़ ही पर उतार देना ।

कंडक्टर : क्या हुआ ? आज तुम एक स्टॉप घर से, एक दफ़्तर से, कम कर रहे हो । यह पद-यात्रा और बस-यात्रा का मेल-मिलाप कब से ?

प्रकाश : नही-नही, बात यह है···।

कंडक्टर : बात की फ़ुर्सत कहाँ ? यह लो साठ पैसे का । उतरना आराम से दफ्तर ।

प्रकाश : ये लो अठन्नी ! दस दे दूँगा कल ।

कंडक्टर : दो दो, न दो, न भी दो । कोई बात नहीं । तुम दोस्त आदमी हो । भई, और कोई विना टिकट ?

पात्र

•

प्रकाश
मंटवाटर
मैना
बाबू
माधी
टॉमी
परमानन्द
पम्मी
गुलबहार
नानी
भैया
अजनबी

पहला सीन
[बस में]

कंडक्टर : और कोई बिना टिकट ?

प्रकाश : दफ्तर एक।

कंडक्टर : डाकखाने से ?

प्रकाश : नहीं, भरती दफ़्तर से।

कंडक्टर : साठ पैसे।

प्रकाश : हूँ।

कंडक्टर : क्या हुआ ?

प्रकाश : अ···आ···कुछ नहीं। यह तीस पैसे में कहाँ तक पहुंच सकते हैं ?

कंडक्टर : अगले मोड़ तक। क्यों, क्या हुआ ?

प्रकाश : कुछ नहीं, कुछ नहीं। यह लो तीस।

कंडक्टर : जेब कट गई।

प्रकाश : नहीं तो।

कंडक्टर : बटवा भूल गये ?

प्रकाश : नहीं-नहीं। मोड ही पर उतार देना।

कंडक्टर : क्या हुआ ? आज तुम एक स्टॉप घर से, एक दफ़्तर से, कम कर रहे हो। यह पद-यात्रा और बस-यात्रा का मेल-मिलाप कब से ?

प्रकाश : नहीं-नहीं, बात यह है···।

कंडक्टर : बात की फ़ुर्सत कहाँ ? यह लो साठ पैसे का। उतरना आराम से दफ़्तर।

प्रकाश : ये लो अठन्नी ! दस दे दूंगा कल।

कंडक्टर : दो दो, न दो, न भी दो। कोई बात नहीं। तुम दोस्त आदमी हो। भई, और कोई बिना टिकट ?

अजनबी : यह कौन आदमी है ?
दोस्त : था। यह एक आदमी था।

दूसरा सीन
[कैंटीन में]

बैरा : टेबुल नम्बर दस। खाया-पिया कुछ नहीं, गिलास तोड़ा आठ आने का।
प्रकाश : आठ आने !
बैरा : क्यों ?
प्रकाश : कुछ नहीं। चलता हूँ। यह लो।
बैरा : आये काहे को थे ? चाय पियो।
प्रकाश : अच्छा, चलो, ले आओ।
बैरा : एक चाय पैशल दस नम्बर।
प्रकाश : स्पेशल ! (हल्की हँसी।)
बैरा : चाय जैसी चाहे। काम-चोर चाय। नींद-तोड़ चाय। हाथ-जोड चाय। पलंग-तोड चाय...।
प्रकाश : कह चुके सब।
बैरा : कभी आपने वह नहीं पी होगी। सौ मीली, पाँच सौ मीली, हजार मीली चाय।
प्रकाश : बहुत कुछ पिया है, प्यारे ! बहुत दिन जिया है बरखुरदार।
बैरा : लीजिए एक पैशल चाय चार आने।
प्रकाश : यह लो रुपया। चवन्नी लौटाओ।
बैरा : चवन्नी के पकौड़े ले आऊँ गर्मागर्म ?
प्रकाश : नहीं।
बैरा : चलो, आज हमारी तरफ से खा लो।
प्रकाश : नहीं।
बैरा : साहब जी, कभी तो आप इतना खाते-खिलाते थे और

अब...।

प्रकाश : चवन्नी।

बैरा : लीजिए।

अजनबी : यह कौन आदमी है ?

दोस्त : था। यह एक आदमी था।

तीसरा सीन

[दफ़्तर में]

बाबू : अरे बड़े बाबू ! अभी तक बैठे हो ! सात बजने को आये। घर नहीं जाना क्या ?

प्रकाश : घर ?

बाबू : हाँ, वैसे घर से लाख अच्छा होता है यहाँ। कूलर की हवा खाओ। एकांत में अगले दिन का काम निपटाओ।

प्रकाश : हूँ !

बाबू : बोर हो जाओ तो बाबू-क्लब में चले आया करो। ताश-बाश खेल ली, सुस्ता लिया। कुछ पी-पिला लिया।

प्रकाश : सो तो है।

बाबू : एक बात है, इतना जल्दी आते हो, इतना देर से जाते हो। घर में तुम्हे कुछ कहते नही तुम्हारे बाल-बच्चे ?

प्रकाश : बच्चे ! (हल्की हँसी।)

बाबू : आखिर क्या बात है बडे बाबू जो यूँ बुझे-बुझे-से रहते हो। कहने वाले कहते है कि भले वक्तों में तुम कभी ऐसे नही थे।

प्रकाश : और क्या कहते हैं ?

बाबू : नहीं-नही, एक बात कहता हूँ। बुरा मत मानना।

प्रकाश : नही-नही।

बाबू : देखो न, आपका कॉलर फटा हुआ। पैंट मे पैवन्द। कही

ये वटन गायब। कहीं वह गायब। आखिर इतना कमाते हो, किसलिए ? कब दम निकल जाए, क्या भरोसा ? ठाठ से रहा करो।

प्रकाश . और कुछ ?

बाबू : कुछ नही। एक ने कही, दूसरे ने मानी। नानक कहे दोनों ब्रह्मज्ञानी।

अजनबी : यह कौन आदमी है ?

दोस्त : था। यह एक आदमी था।

चौथा सीन
[पार्क में]

साथी : अरे, प्रकाश बाबू तुम ! बुद्धा पार्क मे ?

प्रकाश : क्यों ?

साथी : यूँ ही बहुत दिनों बाद, शायद बरसों बाद देखा है तुम्हें यहाँ।

प्रकाश : बहार आती है तो कभी-कभी चला आता हूँ फूल गिनने।

साथी : बहनजी, बच्चे ?

प्रकाश : सब के सब एक साथ कहाँ आ पाते है।

साथी : क्यों नहीं, टैक्सी करो तुरन्त यहाँ।

प्रकाश : ऊँ !

साथी : यहाँ अकेला आये···या तो शायर हो या फिर फिलॉसफर। या तो फिर साधू हो या···या शैतान ! (हँसी)

प्रकाश : क्या लगता हूँ ?

साथी : तुम ठहरे सीधे-सादे आदमी। घर-गृहस्थी मे उलझे हुए।

प्रकाश : हूँ, सो तो है।

साथी : आओ हमारे साथ।

प्रकाश : नहीं, आज सोच रहा था रिज पर पिक्चर देखूं। जमाना

हो गया सिनेमा गये हुए।

साथी : पर यह फिल्म तो कुछ दिन पहले तुम्हारे घर के बराबर वाले सिनेमा में भी तो चल रही थी।

प्रकाश : यहाँ जरा···।

साथी : सस्ती रहती है। हा-हा-हा। जाने तुम्हे क्या हो गया? आओ, वही छोड़ दें।

प्रकाश : नही, मैं पैदल जाना चाहूँगा।

साथी : पिक्चर के बाद हमारे यहाँ आना। बिरला मन्दिर के बराबर मे, जानते हो न ?

प्रकाश : फिर कभी आऊँगा। सोच रहा था, करौल बाग में इतवार बाजार से कुछ क्रॉकरी लेता चलूँ शो के बाद।

साथी : सस्ती। हा-हा-हा। कंडम माल के पीछे कब से भागने लगे ? क्या हो गया तुम्हें ?

प्रकाश : कुछ नही। अच्छा !

अजनबी : यह कौन आदमी है ?

दोस्त : था। यह एक आदमी था।

पाँचवाँ सीन

[घर के बाहर]

पड़ोसन : आपको यहाँ मच्छर नही काटते, पाशी भाई ?

प्रकाश : क्यों नही।

पड़ोसन : तो आप अन्दर क्यों नही सोते, पंखे के नीचे ?

प्रकाश : यूँ ही।

पडोसन : यह कहानियों की किताब पढ रहे हो ?

प्रकाश : ऊँ हूँ।

पडोसन : दफ़्तर की ?

प्रकाश : नही।

पड़ोसन : किसी विशेष विषय पर ?
प्रकाश : हूँ।
पड़ोसन : देखें ?
प्रकाश : लो !
पड़ोसन : आ···बा···द···ी···हा-हा-हा।
प्रकाश : क्या हुआ ?
पडोसन : धमाका !
प्रकाश : हा-हा-हा। हुआ नही। होगा।
पड़ोसन : अब एहसास हुआ ?
प्रकाश : हुआ तो।
पड़ोसन : तो नही होगा।
प्रकाश : अच्छा ही होगा।
पड़ोसन : यहाँ यह लैम्प-पोस्ट की रोशनी कम नहीं तुम्हारी आँखों के लिए ?
प्रकाश : ठीक है।
पडोसन : अच्छा नही लगता।
प्रकाश : अच्छा-बुरा कुछ नही है दुनिया मे, भाभी ! सोचने की बात है। अच्छा !
अजनबी : यह कौन आदमी है ?
दोस्त : था। यह एक आदमी था।

छठा सीन
[घर में]

पम्मी : राशन-पानी आया। कपडे-लत्ते लिए। बच्चों की फ़ीस गई। मकान मरम्मत कराया। कर्ज़ की किस्त चुकाई। छोटे-मोटे बीसियों खर्चे यहाँ-वहाँ। पगार तो पूरी पाँच मौ रुपल्ली ठहरी। फिर सौ मरना-जीना। यहाँ दे, वहाँ

दे। लड़कियों की शादियाँ सिर पर आ रही हैं। बैंक में फूटी कौड़ी नहीं। कल रिटायर हो जाओगे। मुसीबत पर मुसीबत। और एक तुम हो कि न अपनी सुध लेते हो, न हमारी। सुन रहे हो, तुमसे कह रही हूँ।

प्रकाश : हूँ !

सीमा : चिन्ता क्यों करती हो माँ। हमारी शादी के लिए तुम्हें परेशान नहीं होना होगा।

पम्मी : भाग जाओगी किसी के साथ ?

प्रकाश : पम्मी !

पम्मी : सिसकने लगी। रो ! मेरी जान को सभी बैठ के रोओ। हे भगवान, उठा ले मुझे।

लप्रकाश : पापा, मैं और आगे न पढ़ पाऊँ तो ?

प्रकाश : दस पास के लिए भी चपरासी होना मुश्किल हो गया है आजकल, जानते हो ?

पम्मी : कुछ करोगे तभी तो होगा कुछ।

प्रकाश : क्या करूँ ? चोरी करूँ ? डाका डालूँ ? पाँव पड़ूँ बड़े साहब के ? भीख मागूँ ? या···या फिर गाड़ी के आगे···

पम्मी : हाय राम ! तुमसे तो बात करना भी मुश्किल हो गया। हे भगवान ! पिछले जन्म में क्या पाप किये थे जो यह सब देखना पड़ रहा है।

प्रकाश : पाप-पुण्य सब इसी जन्म के हैं, जो आगे आ रहे है।

अजनबी : यह कौन आदमी है ?

दोस्त : था। यह एक आदमी था।

सातवाँ सीन
[सड़क पर]

प्रकाश : यह घर। यह दफ्तर। ये दुकानें। ये मकान। ये चौराहे। ये मोड़। ये बाग। ये बगीचे। यह इतना शोर। यह इतनी खामोशी। क्या हो गया मुझे। क्या हो गया इतनी बड़ी दुनिया को? क्यों नहीं जानते? क्यों नहीं पहचानते मुझे तुम सब लोग? जवाब दो। बोलते क्यों नहीं तुम लोग? मैं वही आदमी हूँ जिसकी शानो-शौकत, जिसकी इश्को-मुहब्बत, जिसकी आन-बान देख के जमाने की नब्ज रुक जाती थी। मैं वही आदमी हूँ।

अजनबी : यह कौन आदमी है?

दोस्त : था। यह एक आदमी था।

प्रकाश : था, हूँ। मैं भी एक आदमी था। तुम सच कहते हो। तुमने मुझे बसों में धक्के खाते हुए देखा। तुमने मुझे गई शाम तक अकेले दफ्तर की मेज पर सिर झुकाये हुए देखा होगा। जरूर देखा होगा। तुमने मुझे एक प्याला चाय के लिए तड़पते हुए देखा होगा। हाँ-हाँ। बीवी-बच्चों से लड़ते-झगड़ते हुए क्यों नहीं देखा होगा। मैं सितारों की छाया में बिस्तर बिछाता हूँ तो तुम हैरान होते हो। मैं तने तन्हा तितलियों के पंख निहारता हूँ तो तुम्हारे तसव्वर में अखरता हूँ। दुनिया-भर के देवताओ! बताओ मुझे, क्यों दिन पर दिन मेरा यह आलम होता जा रहा है। क्या हुआ मुझसे जाने-अनजाने में? यह कैसा हंगामा है! यह क्या महशर है! यह कैसा धमाका है! यह कैसा धमाका है! यह कैसा धमाका है! (धमाकों के स्वर)

दोस्त : गिर पड़ा।

अजनबी : आओ, उठायें।

प्रकाश : पड़ा रहने दो।

अजनबी : यह कौन आदमी है ? बेचारा !

दोस्त : था। एक ऐसा ही दिन था। इसी दिल्ली के ऐसे ही मौसम में। ऐसे ही लोगों में।

आठवाँ सीन

[फ्लैश बैक—कॉलेज में]

साथी : पल्ले नहीं पड रही है मेरे आर। यह लौंडा लॉन में देख न, क्या लार्ड बायरन बना बैठा ऐश कर दिया ए। नित नई लौंडिया के संग राम रिचा रिया है। पानी पट्ठा।

दोस्त : यह तो इसकी क्या कहवे हैं पर्मानेंट हो गई। वो क्या कहवे है फियासें।

साथी : जवाब नहीं।

दोस्त : अमाँ इत्ता नावाँ है इसके बाप के धोरे। सुनिया यो है कि कश्मीरी दरवज्जे से मोरी दरवज्जे तक आधे मकान इनके हैं।

साथी : तो आधे उनके होंगे। हा-हा-हा। देख-देख, कैसे दोनों एक-दूसरे का हाथ देख रहे हैं।

दोस्त : तू भी खाक देख रिया ए। अरे, हाथ कमबख्त कौन देख रिया ए।

साथी : वैरे साले को देख, हमें तो आकर सुनाये दिएगा। खाया-पिया कुछ नहीं, गिलास तोडा चार आने और उनको लॉन में लिवा-लिवा के खिला रिया है पट्ठा।

दोस्त : इसकी गाड़ी देखी ?

साथी : बावा का माल ए।

दोस्त : है तो। जानो हो मदरसा रोड से सेंट स्टीफ़ेन्ज है ही कित्ता दूर। फिर भी मजाल है जो पैदल आए।

साथी : एक तेरी लिमोजियन है दो पहियों वाली, पैडल मार

किसनगंज से कश्मीरी गेट कित्ते घटे मे पहुंचता है ?

दोस्त : आधा-पौना घटा लग ही जावे है।

साथी : अब बोल। यह सूट तन्नै कै मे लिया ?

दोस्त : पन्द्रह मे, जुम्मा मस्जिद से।

साथी : उसका देख, पन्द्रह सै का होवेगा कम-ते-कम।

वैरा : (आकर) खाया-पीया कुछ नही···।

दोस्त : गिलास भी नही तोड्या मेरे आर। सुन, चवन्नी की *भुजिया और दो चाय गर्मागर्म।*

वैरा : दस नम्बर एक प्लेट भुजिया। दो चाय पैशल।

साथी : और सुन !

वैरा : टेम नही मेरे पास। एक बार बोल दो सब।

दोस्त : उनके वास्ते है ?

वैरा : है।

प्रकाश : वैरा !

वैरा : *आ-आ-आ गया सरकार।*

प्रकाश : कितने हुए ?

वैरा : ढाई, ढाई, ढाई का केक। डेढ, डेढ के समोसे। ढाई और डेढ···ढाई और डेढ।

पम्मी : चार।

वैरा : जी-जी, जी हां। चार-चार। *एक के लैमनेड। पांच।* पांच। सवा दो की जलेबी। सवा सात, सवा सात···।

पम्मी : बारह आने की बर्फी।

वैरा : हां जी, हां जी। चाकलेट वर्फी वा-बारह आने। सवा सात और बारह आने···आ···आठ हो गए जी।

प्रकाश : यह ले दस और अब इधर मत आना। समझे !

वैरा : और वो दो···।

प्रकाश : तुम्हारे लिए।

वैरा : थैंक यू, सर !

पम्मी : और हमारे लिए ?

प्रकाश : यह हाथ।
पम्मी : कब तक ?
प्रकाश : साथ है जब तक साँसों का।
पम्मी : पाशी !
प्रकाश : हूँ, हूँ !
पम्मी : तुमने मुझमें क्या देखा ?
प्रकाश : कालिदास की मृगनयनी। खैयाम की खूबसूरत साकी, शेक्सपीयर की साँवली गोरी।
पम्मी : सच !
प्रकाश : सच, पम्मी ! सूरज की उन किरणों की भाँति जो सरू के इन पेड़ों से छन-छनकर पहुँच रही है—तुम्हारे आँचल तक, मेरे दामन तक।
पम्मी : तुम्हारी यही शायरी मेरी ज़िन्दगी बन गई है। मैं सोचती थी ये सपने सच्चे होंगे कभी-न-कभी। इतनी कमियाँ होते हुए भी तुम मुझे कबूल करते हो।
प्रकाश : मुझे तो तुममें एक भी कमी दिखाई नहीं दी। अच्छा, यह बताओ मुझमें तुमने क्या देखा ?
पम्मी : मीरा के मोहन।
प्रकाश : बस।
पम्मी : बिलकुल। क्यों ?
प्रकाश : कुछ लोग मेरे नयन-नक्श को देखते हैं।
पम्मी : नहीं-नहीं, मैं बताती हूँ। तुम्हारे नयन-नक्श, तुम्हारा रंग-रूप, तुम्हारी चाल-ढाल देखकर जानते हो लड़कियाँ क्या कहती हैं। जैसे मोफोक्लीज का कोई उदास हीरो चला आ रहा है ! अन्दाज़े लगाती है रोज़ ! आज मैंविल रो का सूट पहनोगे या कश्मीरी सिल्क के कुर्ते, चूड़ीदार पर शाहतूश का शाल, कफ़-लिंक्स में ईरान के लैपेज लाजूली लगाओगे या वियतनाम के जेड। पिशावरी ज़री की चप्पल पहन के आओगे या इटली के मौकेसन !

प्रकाश : खींच रही हो ?

पम्मी : खीचते तो तुम हो रेशम के कच्चे धागे से। तुम्हारी नस-नस मे बसी खुशबू तुम्हारे जिस्म की कस्तूरी हिरणों की-सी कैफियत लिए हुए मुझ जैसी जाने कितनी लड़कियों को बेबस बना चुकी है।

प्रकाश : अरे, इतनी धूप में अचानक यह बूंदा-बांदी कैसी ?

पम्मी : वह अकेली बदली बरस गई।

प्रकाश : बेचारी।

पम्मी : एहसास हुआ तुम्हें एक और खुशबू का—बरसात की उन चन्द बूंदों से धुली हुई सौंधी मिट्टी की !

प्रकाश : ऐसे में जानती हो क्या होता है ?

पम्मी : जानती हूँ। गीदडो की शादी। हा-हा-हा।

प्रकाश : तो अब जब अगली बार ऐसी बूंदा-बांदी हुई तो शेरों की शादी होगी।

पम्मी : शेरों की शादी होती है ?

प्रकाश : क्यों नही !

पम्मी : पर एक शेर की तो कई शेरनियां होती हैं।

प्रकाश : पर इस शेर की एक ही शेरनी होगी। यही।

पम्मी : पाशी !

प्रकाश : इकलौता बेटा अपने माँ-बाप का मैं और···।

पम्मी : इकलौती बेटी अपने माँ-बाप की मैं। हा-हा-हा।

प्रकाश : और एक इकलौता बेटा हमारा-तुम्हारा।

पम्मी : बेटी हुई तो ?

प्रकाश : तो क्या ?

पम्मी : कुल कैसे चलेगा आगे ?

प्रकाश : बहुत साल है अभी। आने तो दो। आगे की आगे देखेंगे।

नवाँ सीन
[घर में]

पम्मी : मोपासाँ की बेकार खूबसूरती की तरह आए साल तुमने मुझे बच्चे की माँ बना-बनाकर महरौली फॉर्म पर भेज दिया। मेरा रंग-रूप जिस पर दुनिया मरती थी कभी, एक अधेड़ उम्र की औरत का ढील-ढाला बदन बनकर रह गया। समय से कितना पहले जवानी गँवा दी मैंने। देखते-ही-देखते, माँ से दादी माँ भी बन जाऊँगी।

प्रकाश : और माँगो बेटा! बार-बार चाहते हुए भी नहीं हुआ बेटा जिन्दगी के इन सात बेहतरीन सालों में! तुम ही बताओ इसमें कोई तुम्हारा दोष था या मेरा?

पम्मी : मुन्ना आया भी तो कब, जब बहुत कुछ जा चुका है जिन्दगी में।

प्रकाश : ऐसा क्यों सोचती हो?

पम्मी : क्यों नहीं! बाबूजी के राज में तुमने इतनी ऐश की है कि कभी कुछ सोचना भी गवारा नहीं किया। ठेकेदारी तुमसे नहीं हो सकी। बी० ए० तुम नहीं कर पाये। समय गुजारने के लिए की भी तो दफ्तर की नौकरी। वहाँ भी कोई इम्तहान नहीं दिया। दौड़-धूप नहीं की। बस रहे बाबू के बाबू।

प्रकाश : कह चुकी सब?

पम्मी : कहके बुरी बनती हूँ न। ठीक है, नहीं कहती। लेकिन ये दुकानें और मकान जिनकी मरम्मत कराये, किराया बढाये बरसों हो गए। इनके बल-बूते पर भी कब तक गुजर-बसर होगी? कब तक चलेगी यह इतनी बडी घर-गृहस्थी की गाड़ी? कहाँ से आयेगा दान-दहेज इन सात लक्ष्मियों का? कैसे शादी होगी इनकी?

प्रकाश : कुलप्रकाश अपने सारे क्लेश काट देगा। बहुत बड़ा अफसर बनेगा। पढ-लिखकर आई० ए० एस० का इम्तहान देगा।

जायदाद सँभालेगा, और बनायेगा। फिर देखना, बाबूजी से भी बढ़कर खानदान का नाम रोशन करेगा।

पम्मी : बीस साल में देखते-देखते यह हालत हो गई। दस साल और किसने देखे हैं ?

प्रकाश : हम ही देखेंगे, क्यों नही ?

पम्मी : कभी अपने-आपको भी देखा है आइने में ? कहाँ जुलेखा-सी ईर्ष्या लिए कॉलिज के दिनों मे मैं दूसरी लडकियो को तुम पर मरते हुए देखती और आज तुम्हारी ये बुझी-बुझी-सी लापरवाही। यह आधे रँगे हुए बाल, यह फटे कॉलर वाली कमीज़। यह धागे से बाँधे हुए कफ। ये पुराने टायरों के तलवों वाले जूते ! देख के रोना आता है।

प्रकाश : तो क्या करूँ ? गले मे फन्दा डाल लूँ या घर-बार छोड़कर जीते-जी हरिद्वार चला जाऊँ या फिर…।

पम्मी . कैसे काटने को दौड़ते हो ? बात भी नही कर सकती तुमसे !

प्रकाश : उठा लो घर-बार, ज़मीन-आसमान ! सभी चीख-चीखकर सिर पर उठा लो। इकट्ठा कर लो मुहल्ले वालों को।

पम्मी : दादी माँ आशीश दिया करती थी—तेरे सर का साँई जीवे, सुहागवती हो ! सतपुत्री हो !

प्रकाश : सात पुत्र होते तो ठीक होता !

तोपी : हममें *क्या* बुराई है, माँ !

प्रकाश : बुराई तुम में नही बच्चो, माँ-बाप मे है। अपने-आपसे परेशान है हम लोग।

सीमा : हर कोई *अपनी-अपनी किस्मत ले के आता है।*

तोपी : आता ही नही, बनाता भी है। बाबा, देखते जाना। मुन्ने को बनाना ठेकेदार। दुकानों-मकानों का मालिक और देखते *जाना क्या-क्या बनती हैं हम* ! कोई अफ़सर, कोई डॉक्टर, कोई इंजीनियर, कोई वकील और कोई प्रोफ़ेसर। कोई आर्किटैक्ट, कोई चार्टर्ड एकाउंटेंट।

प्रकाश : फिर तो दुनिया के हंगामे हमारे ही यहाँ हुआ करेंगे।

तोपी : क्यों नही ? क्यों पार्टनर ?

सीमा : बिलकुल।

पम्मी : ऐसी ही एक माँ थी राशोमणि। टैगोर की किसी कहानी में। राशोमणि सन्यारी के चौधरी खानदान की बहू। ऐसा ही एक इकलौता बेटा था उसका कालीपद। और बिलकुल ऐसा ही···ऐसा ही बाप।

प्रकाश : बिगड़ा हुआ रईस। भवानी। जानता हूँ। नही समझोगी, कभी नहीं समझोगी तुम।

पम्मी : नहीं-नहीं, मैं क्यों समझने लगी ? वह चाँद-सितारे ज़मीन पर उतार के लाने वाले दिन ढल गये न !

प्रकाश : अभी तो जिन्दगी की धूप नही ढली।

पम्मी : मत सुनाओ, प्लीज़। मत दिखाओ मुझे ये शायरी मे डूबे हुए जिन्दगी के सब्ज़बाग ! मत दिखाओ।

प्रकाश : चिल्लाओ। और चिल्लाओ। मुहल्ले वालों को इकट्ठा करके तमाशा दिखाओ।

साथी : (आकर) क्या हुआ, क्या हुआ ?

प्रकाश : यही हुआ कि तेरे बेबसों पर कुछ न हुआ। जो आये लफ़्ज़ोंबयाँ मे।

साथी : वह वारदात नही।

बाबू : वाह-वाह ! हाज़िर-जवाबी का जवाब नही।

पम्मी : आप हमारे यहाँ शायरी सुनने आए हो या तमाशा देखने ?

साथी : नही बहनजी, मैं तो यूँ ही जा रिया था दफ़्तर। सोचा, बड़े बाबू को आवाज़ देता जाऊँ।

पम्मी : आप चलिये।

साथी : मैं तो जा ही रिया हूँ। वैसे सोचा जाये तो पता चलता है कि नसीबा क्या से क्या बना देवे है आदमी को। चाहते हम कुछ हैं, हो कुछ और जाता है। अभी कल ही की बात है, कॉलेज मे···।

पम्मी : जो बीत गई भाई साहब···।

साथी : नहीं-नहीं, एक बात कह रिया हूँ। हमें तो पता था, हम पढ़-लिखकर बाबू बनेंगे। पर कोई कह सकता था कि पाशी बाबू भी बाबू बन के रह जायेंगे।

पम्मी : देखिए, भगवान के लिए आप चलिये।

साथी : चल तो रिया ही हूँ। अपनी-अपनी करनी का फल है।

[साथी जाता है।]

पम्मी : सुन लिया !

प्रकाश : हाँ, सुन लिया।

पम्मी : समझते नहीं हो तुम। सुनो, मुझे कोई छोटी-मोटी नौकरी नहीं मिल सकती ?

प्रकाश : नौकरी ! हा-हा-हा ! तुम नौकरी करोगी ?

पम्मी : क्यों ?

प्रकाश : यही एक कसर रह गई थी।

सीमा : छोड़ो न, माँ। क्या सच्ची सुबह-सुबह रोज वोही खिच-खिच।

पम्मी : बताओ न बच्चों, क्या करे माँ ?

सीमा : कुछ नहीं। आराम करो। हम सँभालती है रसोई। बाबा, तुम्हारे दफ्तर का समय हो गया।

प्रकाश : देर हो गई।

तोपी : आप जाओ तो। पौने दस वाली बस मिल जाएगी।

प्रकाश : एक चवन्नी होगी ?

पम्मी : यह लो।

प्रकाश : अच्छा।

सीमा : खाने का टिब्बा ?

प्रकाश : लाओ।

[प्रकाश हड़बड़ाता हुआ दफ्तर जाता है।]

तोपी : माँ, हम बाबा के हालात बेहतर बनाने के लिए कुछ नहीं कर सकते ?

पम्मी : क्यों नही ! मैं तो चौके-चूल्हे में उलझी रहती हूँ। तुम कम-से-कम और नही तो उनकी कमीज के बटन तो टाँक सकती हो।

सीमा : कई बार तो कहा माँ कि नई कमीज पहन जाओ। जानती नहीं हो जैसे। बस एक ही धुन—नही, यही ठीक है।

पम्मी : कुछ भी ठीक नही है। इस घर में कुछ भी ठीक नही है।

तोपी : सोचते हैं शायद मुन्ने के लिए रख दो। कुछ दिनों मे फिट आने लगेंगी उसे।

पम्मी : क्या से क्या दशा हो गई सब इस घर की।

सीमा : हम ही जिम्मेदार है न !

पम्मी : माँ-बाप जिम्मेदार होते है बच्चों के लिए, बेटा। बच्चों का क्या दोष ?

तोपी : तो तुम्ही बताओ न, हम क्या करें, जिससे फिर वही अच्छे दिन लौट आयें ?

पम्मी : तुम क्या कर सकती हो ? करे तो भले ही मुन्ना करेगा कुछ एक न एक दिन।

सीमा : पढता-लिखता तो नही।

कुलप्रकाश : हूँ, तुम्हे क्या मालूम।

तोपी : दसवी पास कर लोगे ?

कुलप्रकाश : पढ़ूँ तो फ़र्स्ट आऊँगा।

सीमा : हा-हा-हा ! यह मुँह और मसूर की दाल !

कुलप्रकाश : देख लो, माँ !

पम्मी : क्यों परेशान करती हो बेचारे को। बडे बाप का बेटा है। सहक-सहककर, मिन्नतें माँगकर लिया है भगवान से। कुछ तो बनेगा ही।

तोपी : मिन्नतें माँगकर थोडे ही न बड़े बनते हैं।

पम्मी : जलती हो। तुम सब जलती हो। हमारे कौन दो-चार हैं !

सीमा : माँ ! माँ, तुम इतनी पढी-लिखी होकर अनपढ़ों की-सी बात करती हो। बजाय इसके कि उन्हें समझाओ, अपने

पांव पे खड़ा होने के लिए उसका उत्साह बढ़ाओ, उल्टे तुम उसका पक्ष लेकर और बिगाड़ती हो उसे।

पम्मी : हां-हां, मैं ही बुरी हूं। बहुत बुरी मां हूं तुम्हारी, बच्चो। हे भगवान ! यह क्या जिन्दगी है ! न उनको रिझा सकी, न इनको समझा सकी। क्या करूँ ? कहां चली जाऊँ ? कुछ समझ में नही आता। कुछ सुझाई नही देता।

तोपी : मां !

कुलप्रकाश : जा रहा हूं मैं। (जाता है।)

सीमा : सुनो !

कुलप्रकाश : (जाते हुए) सुन लिया बहुत कुछ।

सीमा : मां ! पोंछ डालो यह आंसू। अभी कम रोई हो जिन्दगी मे।

तोपी : नही देखा जाता तुम्हारा दर्द। इसीलिए तो कुछ कहती हैं हम।

पम्मी : छोटा मुंह बड़ी बात। नही चाहिए मुझे यह हमदर्दी।

सीमा : चाय ?

पम्मी : नही चाहिए चाय भी।

तोपी : जा न, बना के ले आ। तीन-चार कप। एकदम।

सीमा : अभी लाई, एकदम।

तोपी : मां, अब हम तेरी बेटियां ही नही, सहेलियां भी हैं। दो यहां, पांच ननिहाल मे। मारो यह छींटा पानी का मुंह पर। पोंछो मेरे आंचल से यूं और मुस्कराओ।

पम्मी : देखियो कहां चला गया मुन्ना ?

तोपी : कही नही जाता। बिगड़ गया, मां ! देखती हो न, पढ़ता नही बिलकुल। बुरी संगत ने बुरा हाल कर दिया है इसका। उस पर यह लाड-प्यार !

पम्मी : इतनी फटकार तो खाता है बेचारा।

तोपी : बेचारा नहीं है।

सीमा : (चाय रखते हुए) ये लीजिए चाय।

पम्मी : हर कोई अपने-अपने नये-नये विचार लिये चला आता है।

तोपी : चाय तो वही पुरानी है, माँ। प्यालियाँ नई हैं।

पम्मी : एक ज़माना था'''।

सीमा : अरे हाँ, तुमने तो सुना है अपने ज़माने मे बड़े रंग जमाये।

पम्मी : बड़े खूबसूरत दिन थे। इकलौती मैं, इकलौते यह। दुनिया भर की दौलत।

तोपी : तो अब क्या होगा ?

सीमा : हमारे आने से फर्क पड़ गया ?

पम्मी : नही। तुम अपना-अपना नसीबा, अपना-अपना रिज़्क साथ लेकर आयी हो। कल पराये घर चली जाओगी। फिर भी कभी-कभी सोचती हूँ। इतना पढ़-लिखकर भी हम लोगों को समझ नहीं आयी। तुम अन्दाजा नहीं कर सकती, क्या आन-बान थी इस आदमी की जो आज तुम्हें पालने-पोसने के लिए पैसे-पैसे को तरस रहा है।

तोपी : हर एक आदमी की ज़िन्दगी में कहते हैं एक ज्वारभाटा आता है। उससे लाभ उठा ले तो मालामाल, नही तो नादार।

पम्मी : शेक्सपीयर को हमने भी कभी पढ़ा था, बच्चो।

सीमा : वापस लाना होगी, माँ ! तुम दोनो को अपनी वह सारी की सारी नफासत। वह एस्थेटिक्स तो कम-से-कम लौटाना होगी। दौलत भले ही लौटे न लौटे।

[धमाके की आवाज़।]

तोपी : अरे, यह क्या ?

सीमा : धमाका !

पम्मी : कुछ नहीं होगा। हाँ, बस एक ऐसा ही धमाका होगा और सब खतम हो जाएगा।

तोपी : देखूँ तो क्या हुआ ?

सीमा : बैठो। बैठ के काम करो। कुछ नहीं हुआ। ये धमाके आये दिन के जाने क्यों परेशान किए देते हैं। बाबा को भी, तुम्हे भी।

तोपी : मैं जानती हूँ, जरूर तुम इनकी जिन्दगी की उस धमाके से तुलना करती हो जो आबादी को बर्बादी की ओर लिये जा रहा है।

पम्मी : फिलासफ़ी से नहीं, मजदूरी से पेट भरता है, बच्चो। और जिस तरह की मजदूरी तुम्हारे बावा करते है, उसमे तुम ही बताओ पूरा पडेगा कभी भी। किराया भी आता है तो बीस-बीस रुपये।

सीमा : यदि हम लोग शादी न करें।

तोपी : या मान लो लवमैरेज कर लें !

पम्मी : लडकी !

तोपी : नही माँ, एक बात कह रही हूँ। और वह भी इसलिए कि मैं जानती हूँ दहेज नाम की कोई चीज खाये जा रही है अन्दर-ही-अन्दर घुन की तरह तुम्हे भी, बाबा को भी।

सीमा : मै समझती हूँ एक ऐसा जमाना आ रहा है हमारे हिन्दुस्तान मे जब दहेज नाम की कोई चीज़ नही रहेगी यहाँ।

पम्मी : जब आयेगा तब तक हम जाने रहेंगे भी कि नहीं।

तोपी : रहेंगे। रहेंगे क्यो नही ?

सीमा : माँ, तुम लोगों के पास इतनी खूबसूरत चीजें हुआ करती थी। कहाँ गईं ?

पम्मी : यही कही होंगी बक्सों मे बन्द राह देख रही है…।

तोपी : हमारी शादी की। हा-हा-हा।

पम्मी : जानती तो हो।

सीमा : उनको इस्तेमाल करो, माँ। पडी-पड़ी गल-सड भी गई होंगी कब की जाने।

पम्मी : यह बलिदान माँ-बाप की सुविधाओं का, बच्चों के लिए एक परम्परा के रूप में सदियों से बना आया है हमारे यहाँ बच्चो। और फिर, एक हो तो कोई न भी बचाये। यहाँ तो…।

तोपी : सिकनिंग। यही तो बात बुरी लगती है, माँ। क्यों नही

समझती हो हमें ? सदियों से एक यह भी तो परम्परा और विचारधारा बनी हुई है हमारे यहाँ कि बेटे हों बहुत सारे। जो हाथ बँटायें, कारोबार को आगे ले जायें, बुढ़ापे में काम आयें, कुल को आगे बढ़ायें।

सीमा : तभी नाम रखा है न मुन्ने का कुलप्रकाश।

पम्मी : कोई लम्बू लगाने के लिए भी चाहिए न।

सीमा : माँ।

पम्मी : हाँ बेटा।

तोषी : नहीं माँ, नहीं। यह दृष्टिकोण, यह वहम, यह विचार बदलने होंगे।

पम्मी : बातों से बदल सकते हो कुछ ?

तोषी : बातें नहीं तो हालात बदलवा देंगे यह सब-कुछ देखते-ही-देखते। देखते नहीं क्या हालत हो गई है तुम्हारी। बाबा की। हम सबकी। (खट-खट) देखो तो दरवाजे पर कौन है ?

सीमा : कौन है ?

पम्मी : हाय राम ! अरे आप ! आप और आप।

तोषी : बाबा को क्या हो गया ?

प्रकाश : कुछ नहीं। इन लोगों ने यूँ ही बात का बतंगड़ बना दिया।

सीमा : अरे, तुम्हारा जिस्म तो एकदम गर्म है।

पम्मी : चेहरा देखो न, कितना जर्द हो गया। पानी ला जल्दी से। क्या हुआ ? बोलते क्यों नहीं ? बोलिये न आप !

प्रकाश : यही हुआ कि तेरे बेबसों पर कुछ न हुआ।

पम्मी : अभी भी आपकी शायरी नहीं गई।

बाबू : आप लेट लो बड़े बाबू। बहनजी हुआ यूँ कि···।

प्रकाश : इतनी-सी बात भी जिसे अफसाना कर दिया।

पम्मी : लेट भी जाओ न आप। हाँ तो।

बाबू : हुआ यूँ बहनजी। कह दूँ बड़े बाबू ?

पम्मी : कह भी चुको।

बाबू : अपने आपसे बात कर रहे थे अकेले बैठे-बैठे अपनी कुर्सी पर। जाने मुझे कुछ कह रहे थे या आपको, या अपने-आपको। फिर जो देखता हूँ तो धड़ाम से कुर्सी के नीचे बेहोश हो गए। जी, बडे साहब गाड़ी में डाल के डिस्पेंसरी ले आए। वहाँ पता चला कि ब्लड-प्रेशर लो हो गया। डॉक्टर ने आराम करने को कहा है। हम स्कूटर मे बिठाल के यहाँ ले आए।

प्रकाश . मुख्तसर यह है दास्ताने हयात।

पम्मी : क्या हो गया आज तुम्हे ?

प्रकाश : बहुत सारे बीते हुए दिन। बहुत सारे आने वाले दिन एक साथ देख रहा हूँ।

तोषी : पानी।

प्रकाश : लाओ बेटे। जाने क्यों मेरे बाएँ बाजू मे हल्का-हल्का दर्द हो रहा है।

पम्मी : कहाँ ?

प्रकाश : एक सनसनाहट-सी है। सरकती हुई। यहाँ से यहाँ तक। सब सुन्न हो रहा है, सुनसान वीरान रात की तरह।

पम्मी : कही यह दिल की···।

प्रकाश : दिल की धडकन ही है डार्लिंग जो दर्द बनकर जिन्दगी को साथ लिए जा रही है कहीं। जल्दी, बहुत जल्दी।

पम्मी : ऐसा मत कहिए। नही-नहीं, ऐसा मत कहिए।

प्रकाश : अपने किए का जो कुछ भी है, भुगतना तो होगा ही। आज नही तो कल।

पम्मी : नही-नहीं।

प्रकाश : यह मैं क्या देख रहा हूँ। धमाका। बहुत सारे बच्चों का। एकदम एक साथ दुनिया के कोने-कोने दहला देने वाला धमाका। (जोर से) बचाओ, मेरे पाँव लड़खड़ा रहे हैं। बचाओ !

पम्मी : लेट जाओ न। हाय राम ! आप लोग कुछ करो न।

डॉक्टर को बुलाओ। लिटा दो यूँ। बूट निकालो। जुर्राब उतारो। कितनी फटी हुई और मैली है। उफ ! क्या हो गया।

प्रकाश : बचाओ। कम-से-कम इन बच्चों को तो बचाओ।

बाबू : बड़े बाबू ! देखो।

प्रकाश : देख रहा हूँ। आने वाले हर एक साल का बहुत भयकर रूप देख रहा हूँ।

पम्मी : मुन्ने को स्कूल से बुलाओ जल्दी। सब लडकियो को लाओ। जाओ न भाई साहब डॉक्टर के यहाँ फौरन।

बाबू : अभी गया, अभी आया डॉक्टर के साथ।

प्रकाश : देख रहा हूँ। देखते रहना ऐसे ही अगर जिन्दा रहे तो जिन्दगी के ये बोझिल साल एक-एक करके सारी खुशियाँ छीनकर ले जायेंगे और एक दिन ऐसा आयेगा जब ये लडकियाँ अपने-अपने घर जा चुकी होगी। लेकिन फिर भी एक आस, एक चिराग, एक इकलौती रोशनी तो बनी रहेगी इस आँगन मे। वही दूर करेगी सब अँधियारे। सारे अरमान, सारी खुशियाँ, सारी जायदाद, सारी की सारी शानो-शौकत लौटायेगा मेरा कुलप्रकाश !

सीमा : बाबा !

प्रकाश : आया नही अभी तक ?

तोपी : बाबा, यह क्या हो गया तुम्हे ?

प्रकाश : हुआ कुछ नही बच्चो ! बड़ा सख्त जान हूँ। दिल के दर्द तो बने रहते हैं बरसों। यूँ समझो कि जिन्दगी की जमानत पर हूँ। तीन-चार साल और काट लूँ। जब तक बच्चियाँ अपने-अपने घर चली जायें। कुलप्रकाश बी० ए० कर लेगा। आई० ए० एम० कर लेगा।

पम्मी : ऐसे सपने क्यों देखते हो जो सच्चे होते दिखाई नही देते।

प्रकाश : कभी डिकन्ज पढ़ा था। मेकाबर की भाँति, जब सब-कुछ था तब भी, और अब जब सब-कुछ नही है तब भी, उतना

ही आशावादी रहता हूँ।

सीमा : समय आने पर सब समस्याओं का समाधान हो जायेगा बाबा।

प्रकाश : सो तो है। सालों बीत गए एक अच्छे दिन की राह देखते-देखते। आयेगा। आयेगा क्यों नहीं हम जैसे अभागों की जिन्दगी में कम-से-कम एकाध अच्छा दिन कभी-न-कभी, एक न एक दिन···साल बाद···दस साल बाद···।

दसवाँ सीन

[घर में तीस साल बाद]

पड़ोसन : आ गया। बी० ए० का रिजल्ट आ गया।

प्रकाश : आ गया वह दिन।

पम्मी : वैसे भी। कितना सुहावना दिन है! मौसम तो देखो!

प्रकाश : आया नहीं कुलप्रकाश ?

पम्मी : आता ही होगा।

अजनबी : (आहिस्ता से) यह कौन आदमी है ?

दोस्त : अरे! इसे नहीं जानते ? अपना पडोसी पारी बाबू ? आश्चर्य है, इनसे परिचित नहीं हो।

प्रकाश : क्या हुआ ?

दोस्त : कुछ नहीं। ऐसे ही पूछ रहे थे अपने यह अनजान मियाँ तुम्हारे बारे में। तुममें है अब भी कुछ बात जो हर अजनबी आदमी अब भी पूछता है—यह कौन आदमी है ?

प्रकाश : निगाह बर्क नहीं, चेहरा आफताब नहीं। इक आदमी है मगर देखने की ताब नहीं।

अजनबी : वाह !

पम्मी : अभी अनटोनी की तकरीर भी सुनायेंगे। क्या है, क्या कहते हैं···कि प्रकृति भी पुकार उठे—यह एक आदमी

था—दिस वाज़ ए मैन।

प्रकाश : तुम्हारे पास अखबार है। देखना ज़रा यह रौल नम्बर—तीन सौ तीन।

पड़ोसन : नम्बर ! नाम नहीं है इसमें। केवल खबर ही छपी है।

प्रकाश : आया नहीं अभी।

पम्मी : आ जाएगा। भाई साहब, गरम लेंगे कि ठण्डा ?

दोस्त : खबर पर निर्भर है भाभी ! गर्मागर्म हुई तो गरम, नहीं तो...।

प्रकाश : ठण्डे तो पहले ही हुए बैठे है भाई। बच्चियाँ विदा की एक-एक करके। कमर टूट गई। रही-सही इकलौती पूँजी अपने सारे संसार की बस एक आस, कुलप्रकाश बी० ए० करके कुछ करे तो यह बुझता हुआ खानदान परवान चढ़े।

पड़ोसन : चिन्ता क्यों करते हो, पापी भाई ? सारे क्लेश काट देगा कुलप्रकाश।

दोस्त : लो, वह आ गया। बड़ी लम्बी आयु है तुम्हारी !

प्रकाश : बेटा !

[कुलप्रकाश सिर झुकाये आता है।]

कुलप्रकाश : बाबा !

प्रकाश : कोई बात नहीं।

पम्मी : अब क्या होगा ?

पड़ोसन : फेल-पास तो बना हुआ है, बच्चे। अब नहीं तो अगले साल, अगले साल नहीं तो उससे अगले साल।

प्रकाश : बड़ी आस लगाये बैठे थे बेटा !

कुलप्रकाश : बाबा ! बाबा ! मुझे अपने दफ्तर में भरती करवा दो।

मुद्रक : कमल प्रेस द्वारा
गोपाल प्रिंटिंग प्रेस, शाहदरा, दिल्ली-३२